हस्तपुस्तिका
समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार
रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

IDS Institute of Development Studies
Plan

प्लान यूके एक बाल केन्द्रित सामुदायिक विकास संगठन है जिसका किसी धार्मिक या राजनीतिक विचारधारा अथवा संगठन से कोई सम्बन्ध नहीं है. हम बच्चों के सुखमय भविष्य के लिये पूरी तरह समर्पित है. हम बच्चों, उनके परिवारों, समुदायों, नागर समाज, सरकारों के साथ सहयोग करके उनके हित के लिये काम करते हैं. हम रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं और बच्चों को सक्षम बनाते हैं कि उनकी आवाज सुनी जा सके और उन पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों के विषय में उनकी आवाज को महत्व मिल सके.

ऊपर: विश्व प्रसाधन दिवस पर बिलिरिंग योजना में सूखे से शौच मुक्त होने का उत्सव
छायाकार: जोसफाट मातिंबो, प्लान मलावी

मुख्य पृष्ठ: तोरोंगे, मुतारबा में सूखे से शौच के घेरों का सार्वजनिकरण करते हुए बच्चे
छायाकार: विलियम ओटिएनो, प्लान मलावी

सूखे योजनाओं में सूखे से शौच से मुक्त गांवों में स्थापित कम से उपलब्ध कम लागत निर्माण सामग्री के साथ बहार से प्राप्त की गई निर्माण सामग्री का उपयोग करके द्वितीय चरण के शौचालयों को डिजाइन किया गया

हस्तपुस्तिका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार

रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

प्लान इन्टरनेशन (यूके) की सहायता से

तैयार किया गया, मार्च 2008

Plan

Be a part of it

आभार

इस हस्तपुस्तिका के लिखने और तैयार करने के लिये चाइल्ड इन्टरनेशनल (यूके) से सहयोग प्राप्त हुआ. इसे तैयार करने की पूरी अवधि के दौरान रोज़ निस्तार द्वारा दिये गये प्रोत्साहन तथा सतायें गये धीरज और उदारता के लिये हम कृतज्ञतापूर्वक आभारी हैं. उनके साथ ही सतीश सहा, एलेक्स वैट्टी द्वारा बार बार के चरणों में दिये गये सहयोग के लिये आभार व्यक्त करते हैं. हम जूडिथ रॉबर्टसन को धन्यवाद करते हैं जिनके द्वारा इस हस्तपुस्तिका की रूप सज्जा और अभिन्यास को अंतिम रूप देने में सहायता की गई. पैट्रो कोनर्ट भी धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने हस्तपुस्तिका की चाक्षुपीति तैयार करने में सहयोग दिया. पीटर चैलमैन द्वारा बहुत ही अनुबोधक सुझाव दिये गये और टिप्पणियाँ की गई जिनके कारण हस्तपुस्तिका में और सुधार किया जा सका. हस्तपुस्तिका में उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत बहुत से वास्तविक पृष्ठभाग और घटनाओं के विकास उन लोगों के द्वारा उपलब्ध कराये गये जिनके नाम विवरणों के साथ ही अंकित किये गये हैं. यहाँ हम समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के उन पैरोकारों के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहेंगे जिनके ऊपर न तो किसी ने कोई नोट लिखे और न किसी ने पढ़कर उनका पुनरावलोकन ही किया. कई देशों के अवंतरा सारी, सहयोगी, सुचनदाता, समुदाय, स्वाभाविक नेता, गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य और कार्मिक, अनुदान दाता, वरिष्ठ कार्मिक, लोगों के चुने गये प्रतिनिधि, और अन्य भी धन्यवाद के पात्र हैं. उनकी संख्या इतनी अधिक है कि सबके नामों का उल्लेख नहीं किया जा सकता और उनमें से कुछ के नाम का उल्लेख करना तथा अन्य को छोड़ देना उचित नहीं होगा. वे सब अपने योगदान को जानते हैं इसलिये हमें आशा है वह हमारी इस बात को भी समझ जायेंगे और स्वीकार कर लेंगे. डी.एफ.आई.डी. सहायित इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज के शोध कार्य "नोइंग टु सक्सेल विद कम्युनिटी-लेड टोटल सैनिटेशन" द्वारा प्रदान किये गये अवसरों के बिना कुछ अनुभव और सामग्री उपलब्ध ही नहीं हो पाती.

दिसम्बर 1999 से लगातार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ जुड़े रहने से प्राप्त अनुभवों के आधार पर ही इस हस्तपुस्तिका का विकास किया गया है. यह अनुभव दुनिया के बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, मंगोलिया, नेपाल, पीरू, पाकिस्तान, अफ्रीका के गुयाना, जाम्बिया, इथियोपिया, तंजानिया, केन्या, और विषय लियोन, दक्षिण अमेरिका के बोलीविया, मिडिल ईस्ट के यमन तथा अन्य देशों में प्राप्त हुए. जिन विधियों का यहाँ वर्णन किया गया है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये केवल सही विधियाँ कारगर नहीं हैं. उपयोगकर्ताओं को हर स्थिति में अपने विवेक का प्रयोग करने के लिये तथा स्थानीय स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त अभिनव पहल करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है जिससे समुदाय की सहभागिता प्राप्त की जा सके तथा बढ़ाई जा सके और समुदायों का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि सम्पूर्ण स्वच्छता प्राप्त करें और इसके आगे की यात्रा भी समुदाय एकजुट होकर पूरी कर सकें.

कमल कार
मार्च 2008

सभी छायाचित्र: डॉ कमल कार (उन छायाचित्रों को छोड़कर जिनके चित्रांकनकर्ताओं के नाम साथ में अंकित हैं)

CLTS हस्तपुस्तिका मुद्रित हुई है WSSCC, Geneva' के आर्थिक सहयोग से एवं हिन्दी अनुवाद संभव हुआ है IDS, Sussex- के आर्थिक सहयोग से - नवम्बर, 2009

हिन्दी रूपान्तर एवं अभिन्यास — एस.एस.टण्डन
सम्पादन हिन्दी संस्करण — जे.पी. शुक्ल
गोलेन सिंकम प्राइवेट लिमिटेड

अनुक्रमणिका

2. आभार
3. अनुक्रमणिका
4. परिभाषाएँ
5. संक्षेपाक्षर

6. अध्याय 1 - परिचय और पृष्ठभूमि
7. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, प्रसार और विस्तार
8. यह हस्तपुस्तिका क्यों?
9. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
12. चरणों का अनुक्रम

14. अध्याय 2 - ट्रिगरिंग से चलते
15. समुदाय का चयन
16. अधिक अनुभूत
17. अधिक चुनौतीपूर्ण
18. स्थितियाँ जो अनुभूत या चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं
19. स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और परिसरता विकसित करना

22. अध्याय 3 - ट्रिगरिंग
23. समुदाय द्वारा मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना
24. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की विंडो जगाने के लिये पृष्ठभूमि
29. खुले में शौच के स्थलों का अनुक्रम भ्रमण
31. खुले में शौच के स्थलों का मानचित्रीकरण
34. सबसे गंदी जगहों की पहचान
35. उपस्थित मल की मात्रा तथा चिकित्सा पर मल का आगमन
36. पूरा कैसे ट्रिगर की जाये: मल जनित संदूषण के मार्ग
37. प्रभावान बनाना
40. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के सामने रणनीति
40. सुझाव
40. पेट्रोल पम्प में दियासलाई
41. आवाजाकर तो
41. बिखरी हुई दियासलाई
42. गीली दियासलाई
43. समुदाय की कार्यसंलग्नता को सुगम बनाना
44. अनुकरण के लिये समुदायिक मानचित्रीकरण
44. स्थूलों में ट्रिगरिंग

46. अध्याय 4 - ट्रिगरिंग के बाद मार्गदर्शिका
48. तुरन्त बाद की अनुवर्ती गतिविधियाँ और प्रोत्साहन
48. समुदाय के कार्य और अनुवर्ती गतिविधि
51. सहभागी अनुकरण और संकेतक
51. प्रक्रिया और प्रगति का अनुकरण
52. संचालित स्वाभाविक नेता
52. महिला स्वाभाविक नेता
52. धर्म और धार्मिक नेताओं की भूमिका को प्रोत्साहन तथा सम्मान
53. समुदाय के निर्धन लोगों को सहायता देने के लिये प्रोत्साहन
54. कस्बों को अभियान से जोड़िये
57. स्वच्छता निर्माण सामग्री की उपलब्धता
59. खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण
60. खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव मनाइये
61. खुले में शौच से मुक्त स्तर का अनुकरण एवं कायम रखना

64. अध्याय 5 - प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे
66. प्रशिक्षण और प्रसार के लिये क्या करें और क्या न करें
66. अभिकरणों के कार्मिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा रणनीतिक कार्य
69. गाँव के स्तर पर ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता रखने का प्रशिक्षण
71. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता
71. अभियान
72. गर्व और प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन
73. शौचालय निर्माण सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ावा दीजिये
74. अनुभव से सीखना
74. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के पार
77. धार्मिक अभियान का बीजारोपण और सहयोग
83. परिशिष्ट
84. परिशिष्ट क - समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार
88. परिशिष्ट ख - प्रसार और विस्तार के संदर्भ में खुली चिट्ठी
90. परिशिष्ट ग - विशेष स्थितियों में ट्रिगरिंग
92. परिशिष्ट घ - पूरा पैसा करने के लिये प्रश्नों के नमूने
92. परिशिष्ट च - अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जाँच सूची
93. परिशिष्ट छ - सतत आधारित आंतरिक स्वच्छता की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से तुलना
94. परिशिष्ट ज - ग्रेस और सम्पर्क सूत्र
95. विभिन्नता और स्थानीय स्तर पर विकसित मॉडल: समुदायों द्वारा अभिनव पहल के अन्तर्गत विकसित किये गये शौचालयों के मॉडल के फोटोग्राफ

परिभाषाएं

प्रजनीकरण, खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्ति का अधिकतीक पुष्टिकरण और मान्यता है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता. यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने तथा उसे बनाये रखने के लिये विकसित की गई एकीकृत कार्यविधि और रणनीति है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये आवश्यक है कि सुलभकर्ताओं द्वारा समुदाय को अपनी स्वच्छता की स्थिति को जानने, शौच करने से सम्बन्धित परिपाटियों, आदतों, तथा दुष्प्रभावों को जानने और उनका विश्लेषण करने के कार्य को सुगम बनाया जाये जिससे समुदाय एकजुट होकर कार्य करने के लिये उद्यत हो जाये और खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त कर ले. जिस विधियों से बाहर से आये लोग समुदाय के सदस्यों को "चढ़ाते" हैं उन्हें इस हस्तपुस्तिका के आलोक में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता नहीं कहा जा सकता.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं चाहे संचालित होती हैं और इन प्रक्रियाओं के चार कई प्रकार के परिवर्तन आ सकते हैं - शौचालयों के डिजाइन में सुधार, स्थानीयकर स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार का अंगीकार किया जाना तथा इसमें सुधार, बुरे कामों का प्रभाव, गन्दे जल की निकासी और निपटान, पीने के पानी के स्रोतों का संरक्षण और रखरखाव तथा पर्यावरण को बेहतर बनाये रखने के लिये उठाये जाने वाले अन्य कदम. कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के माध्यम से खुले में शौच से मुक्त हुए समुदायों के द्वारा एकजुट होकर कई स्थायीय विकास कार्यों का कार्यान्वयन करने के लिये सकारात्मक पहल की जाती है.

शौचालय और प्रक्षालन: शौचालय का अर्थ है मल के सीधे गड्ढे में जाने की व्यवस्था तथा प्रक्षालन का मतलब है बाहर मौल के साथ जलता करने की व्यवस्था. इस हस्तपुस्तिका में कभी-कभी शौचालय शब्द का प्रयोग इन दोनों के लिये किया गया है. प्रक्षालन शब्द का प्रयोग वहां किया गया है जहां सीधे गड्ढे वाली व्यवस्था के साथ बाहर मौल के प्रयोग की अधिक संभावना है.

स्वाभाविक पेशा (कंडाली में इसे महान पेशा भी कहा जाता है) वह सक्रियतावादी और उत्साही लोग हैं जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया के दौरान उभर कर सामने आते हैं और नेतृत्व प्रदान करते हैं. पुरुष, महिला, युवा और बच्चे, इनमें से कोई भी स्वाभाविक पेशा हो सकता है. वह स्वाभाविक पेशा सामुदायिक गतिशीलता बन जाते हैं, दिशा करते हैं तथा अपने समुदाय से इतर अन्य समुदायों को भी प्रेरणादित करते हैं तथा सहयोग प्रदान करते हैं.

खुले में शौच का अर्थ है खुले में शौच करना और मल को उसी जगह उसी हालत में छोड़ देना. **खुले में शौच से मुक्त** का अर्थ है समुदाय के द्वारा खुले में शौच करने की आदत को पूरी तरह छोड़ देने और इस विधियों से पूरी तरह मुक्त हो जाना. इस मल को घर लेने का तात्पर्य है कि गांव में कहीं भी मल बिखरा हुआ पड़ा नहीं होगा और वातावरण इससे होने वाले संदूषण से मुक्त होगा. बिना इस्तेमाल वाले एक गड्ढे के शौचालय की व्यवस्था भी एक प्रकार से खुले में शौच का ही एक रूप है (खुले में शौच के लिये विशिष्ट स्थान), भलु यदि महिलायें से बचाव करने वाला इस्तेमाल लगा दिया जाये (शौच के बाद राख डाल कर मल को ढकने की व्यवस्था के साथ या इसके बिना) तो यह खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उपयुक्त माना जायेगा. गड्ढा खोदकर उसमें शौच करना तथा शौच के बाद मल को मिट्टी से ढक देना खुले में शौच की स्थिति से खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति की ओर बढ़ता हुआ एक कदम माना जायेगा.

सत्यापन से प्रयोजन है निरीक्षण का जिससे यह पता लग सके कि क्या सम्बन्धित समुदाय के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया है (प्रजनीकरण से तुलना करें)

गड्ढा के लिये गड्ढा खोदना, होल्ड में, बोना, छायांकन, सिंचाई आदिवासी, चारा बोना

संक्षेपाक्षर

सीएलटीएस	कम्युनिटी लेड टोटल सैनिटेशन
आइआरएसपी	इंटीग्रेटेड रूरल सपोर्ट प्रोग्राम, मारवार, पाकिस्तान
एनजीओ	नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गेनाइजेशन
एचडब्लूए	नेपाल वाटर फॉर हैल्थ
एनएल	नेथुरल लीडर्स
एनडब्लूएफपी	नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्स, पाकिस्तान
ओडी	ओपन डेफेकेशन
ओडीएफ	ओपन डेफेकेशन फ्री
पीआरए	पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल
आरईएसए	पसार इन्टरनेशनल का रीजनल ईस्टर्न एण्ड सदर्न अफ्रीका आफिस
आरडीआई	रिन्यूवी ट्रस्ट इन्टरनेशनल, इथियोपिया में कार्यरत
	आयरिश नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गेनाइजेशन
एसडीयू	सोशियल डेवलपमेंट यूनिट
एसएफडी	सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेंट, यमन
एसएएचआर	सदर्न नेशनल नेशनलिटीज एण्ड पीपुल्स रीजन, इथियोपिया
सीडब्ल्यू	सेन्ट्रलिस हाउसहोल्ड एफिलिएटीज टु रेसपोन्ड टु डेवलपमेंट अपरच्यूनिटीज
यूएनडीपी	यूनाइटेड नेशन्स विकासुन्य फण्ड
सीईआरसी	सिलेक एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर, बांग्लादेश
डब्लूएसएलआईसी	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज
डब्लूएसपी-ईएपी	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक
डब्लूएसपी-एसए	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया

अध्याय 1

परिचय एवं पृष्ठभूमि

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा उत्पत्ति, प्रसार एवं विस्तार

कमाल खान द्वारा बांग्लादेश के चाटर ग्राम एवं उनकी सहयोगी स्थानीय संस्था सी.ई.आर.सी. (सिलेक एजुकेशन रिसर्च सेन्टर एक स्थानीय गैर-सरकारी संगठन है) के द्वारा चलाये जा रहे पारम्परिक जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया तथा चार में उनके द्वारा 1999 के अन्त में तथा वर्ष 2000 में बांग्लादेश में स्वच्छता के क्षेत्र में बहुत काम किया गया. इन गतिविधियों से उनमें विचारों एवं अनुभव के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा का विकास हुआ. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा के अन्तर्गत सहभागी ग्रामीण अध्ययन (पीआरए) विधि का उपयोग होने से स्थानीय समुदाय स्वयं अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करने तथा खुले में शौच के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर तथा आस-पास के पूरे पर्यावरण पर पड़ने वाले भयानक दुष्परिणामों को स्पष्ट रूप से समझ जाता है. (विस्तृत विवेचन के लिये परिशिष्ट क पृष्ठ 84 देखें). जब इस विधि का प्रयोग सुगमकीयत ढंग से किया जाता है तथा सुगमकर्ता द्वारा शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता नीति तथा शौचालय निर्माण की विधियों के निर्माण की बातों को बीच में नहीं लाया जाता है तो समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के द्वारा समुदाय में इस प्रकार की अन्तःप्रेरणा की निरंतरता जगाई जा सकती है कि वे सब मिल कर समस्या के निदान के लिये तुरत खुले में शौच से पूर्ण तरह मुक्त होने के लिये कार्य करने को उद्यत हो जाये. सुगमकर्ताओं की कार्यविधि की एक नई शैली विकसित हुई है. अपने आदर्श रूप में इसके अन्तर्गत इस बात पर बल दिया जाता है कि "मानव मल" के लिये स्थानीय भाषा में प्रचलित अपरिष्कृत शब्द का ही प्रयोग किया जाये तथा स्थानीय समुदाय के सदस्यों को आमंत्रण के सामने गर्व और सबसे अधिक मानव स्थान का भ्रमण करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये. जब वे अपनी शौच करने की आदत को इस प्रकार पुनः देखते तथा विश्लेषित करते हैं तो उन्हें गहरा आघात लगता है, घृणा और शर्म महसूस होती है. यह शैली उकसाती है. यह भावनात्मकपूर्ण भी है तथा इसमें सारे निर्णय समुदाय पर ही छोड़ दिये जाते हैं.

"मौल कहां शौच करता है?" टोटोरो, कुलमदा के समुदाय सदस्य खुले में शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करते हुए. छायांकन: फिलिप ओटियानो, पसाम केन्या

कमल कात द्वारा वर्ष 2000 में दिये जा रहे स्वाभाविक प्रतिसादों के कारण तथा कई संगठनों की सहायता तथा विभिन्न देशों में पारम्परिक भ्रमण से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि बांग्लादेश की अन्य सीमाओं तक तथा दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, और मिडिल ईस्ट के देशों तक भी पहुंच गई. संगठनों के निरन्तर सरकारी के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया गया. आज बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का व्यापक प्रसार हो गया है. प्रतिक्रियों के माध्यम से इसका प्रसार विभिन्न सतों तक चीन, मंगोलिया और नेपाल में भी हो चुका है. हाल ही में इथियोपिया, जाम्बिया, कीनया और अफ्रीका के अन्य देशों, दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया तथा मिडिल ईस्ट के यमन में भी इसकी उपयुक्तपूर्वक शुरुआत हो गई है. कमल कात द्वारा प्रदान किये जा रहे इन प्रतिक्रियों के प्रायोजकों में वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - विश्व बैंक, केनया, कम्बोडिया, मिस्रीलिक (वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्यूनिटीज, इण्डोनेशिया), रि बिल्ड एण्ड मेलिण्डा गेट्स फाउण्डेशन द्वारा पूर्वी जावा में महावलित सम्पूर्ण स्वच्छता एवं स्वच्छता विपणन परियोजना, यमन की मोतिवान फण्ड फॉर डेवलपमेंट, इथियोपिया में कार्यरत आयरलैण्ड की गैर-सरकारी संस्था वाटर रिसोर्सेज ट्रस्ट इण्टरनेशनल, पाकिस्तान इण्टरनेशनल तथा यूनिसेफ आदि सम्मिलित है.

इस हस्तपुस्तिका की आवश्यकता क्यों है ?

शुरुआत में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अर्न्तगत लोगों में प्रेरणा की पिपासी जगाने पर ही मात्र ध्यान केंन्द्रित और सीमित था. इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज द्वारा नवम्बर 2005 में कमल कात के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर लिखी गई स्वाभाविक मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया गया. इस मार्गदर्शिका का विषय है कि कैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सक्रिय रूप से गतिमान किया जाये. इस मार्गदर्शिका की मांग बहुत रही है और इसका अनुवाद अमहारिक, अरेबिक, भासा इण्डोनेशिया, चीनी, बंगाली, हिन्दी, खमेर, मराठी, नेपाली, मंगोलिया, स्वाहिली, उर्दू तथा अन्य भाषाओं में किया जा चुका है. लेकिन समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में लोगों में पिपासी जगाने या उन्हें प्रेरित करने के आगे भी बहुत कुछ है यद्यपि यह उसका सबसे चाहनीय और केन्द्रीय भाग है. एक ऐसी हस्तपुस्तिका की आवश्यकता और मांग महसूस की जा रही थी जो कि उद्दीपन (ट्रिगरिंग) से पहले, उद्दीपन के बाद की महत्वपूर्ण स्थितियों तथा इसके प्रसार तथा इसके आगे निकल जाने की स्थितियों के विषय में अनुभवों एवं परम्पराओं का स्रोत हो सके. साथ ही उद्दीपन विधि भी अनुभवों के कारण अधिक प्रभावी, परिष्कृत एवं अधिक सुदृढ़ हो गई है. यह हस्तपुस्तिका अनुभवों, विविध स्वाभाविक स्वरूपों तथा अलग-अलग देशों में विकसित किये गये अभिनव तरीकों को एक साथ लाकर सबक की मांग को कुछ हद तक पूरा करने का एक प्रयास है. इस हस्तपुस्तिका में अद्यतन सामग्री का समावेश है इसलिये अब पुरानी मार्गदर्शिकाओं को छोड़कर इसका ही प्रयोग करना चाहिये. स्थानीय स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षकों या कार्यान्वयन से जुड़े व्यक्तियों के द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित मार्गदर्शिकाओं को लाने की आवश्यकता नहीं है वरन् इस हस्तपुस्तिका के आधार पर उनमें, यदि उपयुक्त हो तो, वांछित परिवर्द्धन किया जा सकता है.

यह हस्तपुस्तिका ऐसे विचारों एवं अनुभवों के संकलन के रूप में विकसित की गई है जिसका उपयोग समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत अभियुक्तीकरण कार्यशालाओं, सेक्टोरल्स हेतु परामर्श, सुगमकर्ताओं, स्वाभाविक नेताओं के प्रशिक्षण और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गतिविधियों के कार्यान्वयन में एक साधन के रूप में किया जा सकता है. स्थानीय स्तर पर कार्यरत कमिर्यों, सुगमकर्ताओं और प्रशिक्षकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये नियोजन, कार्यान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों में यह एक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होगी.

इस हस्तपुस्तिका का प्रयोग करने वालों को चाहिये कि वे इसके मार्गदर्शन का उपयोग उस प्रकार करने के लिये अपने को पूर्ण रूप से स्वतंत्र समझें जो उन्हें सबसे अच्छा और उपयुक्त लगता हो. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के लिये केवल यही विधियां नहीं है जो कि इसमें दी गई हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तैयारी के लिये, ट्रिगरिंग, ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती गतिविधियों के लिये तथा गतिविधियों को स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृतियों एवं अवसरों के अनुरूप ढालने के लिये भिन्न-भिन्न अभिनव तरीकों का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है. सुगमकर्ता नये तरीके खोजने और विधियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिये पूर्ण रूप से स्वतंत्र है और उन्हें अपने अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर निर्णय करना चाहिये कि क्या करें और क्या न करें तथा किस तरीके का किस स्थान पर प्रयोग करें. इस हस्तपुस्तिका में दिये गये विचार और परम्परा का कई बार स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया जा चुका है तथा इन्हें स्वाभाविक कसौटी पर खरा पाया गया है परन्तु यह सुगमकर्ता को ही तय करना होगा कि उनके कार्य स्थल के संदर्भ में क्या करना उचित होगा. मूल सिद्धान्त है स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण जिससे वे स्वयं अपनी स्थिति का विश्लेषण कर सकें और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये अपनी कार्य योजना बना कर उसका क्रियान्वयन कर सकें.

इस तस्वीर, यमन में खुले में शौच के विरोध में चले नारों हुए बच्चों का जुलूस

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन के लिये आत्म प्रेरणा की पिपासी जगाने पर ही संकेंन्द्रित है न कि शौचालयों के निर्माण पर. स्थानीय अथवा बाहर से आये सुगमकर्ताओं के द्वारा सामाजिक जागृति के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रेरणा जगाने की इस प्रक्रिया का क्रियान्वयन किया जाता है.

इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत व्यवहार के स्थान पर पूरे समुदाय के व्यवहार पर ध्यान केंन्द्रित किया जाता है. खुले में शौच से मुक्त होने का लाभ पूरे समुदाय को प्राप्त होता है और इसलिये यह बोध हो जाने पर समुदाय की सहकारिता बढ़ जाती है. सभी लोग मिल कर यह निर्णय करते हैं कि सभी के लाभ के लिये किस प्रकार से स्वच्छ एवं आरोग्यपूर्ण वातावरण बना सकते हैं. मूल बात यह है कि इस अवधारणा के अन्तर्गत व्यक्तिगत स्तर पर मिलने वाली आर्थिक सहायता का कोई उल्लेख नहीं किया जाता तथा न ही शौचालयों के किसी मॉडल विशेष को अपनाने की बात कही जाती है. परिवारों के बीच एकता, सहकारिता और परस्पर सहायता की भावना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की सफलता की कुंजी है. यह भी उल्लेखनीय है कि जैसे-जैसे समुदाय खुले में शौच से मुक्त होने की दिशा में आगे कदम बढ़ाने लगता है तो समुदाय में से ही कुछ स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आ जाते हैं, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से निर्मित होने वाले कम लागत शौचालयों के मॉडल भी लोगों के द्वारा स्वयं विकसित कर लिये जाते हैं तथा समुदाय द्वारा स्वयं ही पुरस्कार और दण्ड की एक व्यवस्था विकसित करके लागू कर दी जाती है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत समुदाय को सम्पूर्ण स्वच्छता का पूर्ण उत्तरदायित्व लेने तथा अपनी कार्य योजना बना कर क्रियान्वित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है.

सही अर्थ में सम्पूर्ण स्वच्छता में कई चीजें सम्मिलित हैं जैसे: पूर्ण रूप से खुले में शौच बन्द करना, सुनिश्चित करना कि सभी स्वच्छ शौचालय का ही प्रयोग करें, खाद बनाने से पहले और खाने से पहले, शौच के बाद तथा बच्चों के मल को साफ करने या जानवरों और चिड़ियों के सम्पर्क में आने के बाद हाथों को साबुन से ठीक से धोना, भोजन सामग्री और जल को हमेशा आरोग्यपूर्ण ढंग से लाना और ले जाना, जानवरों की गन्दगी तथा घरेलू अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान जिससे सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण हो सके. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत महत्वपूर्ण पहले चरण के रूप में खुले में शौच से मुक्ति पर ध्यान संकेंन्द्रित किया जाता है जिससे लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार परिवर्तन की शुरुआत हो सके. इसके अन्तर्गत सबसे पहले लोगों को इस प्रकार सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है कि वे खुले में शौच की अपनी आदतों के मूल्यांकन, अवलोकन और विश्लेषण तथा इसके दुष्परिणामों के बोध के माध्यम से अपनी स्वच्छता की स्थिति को स्वयं स्पष्ट रूप से समझें. परिणाम होता है सार्वजनिक रूप से शर्म और घृणा का अनुभव जिसके कारण अक्सर खुले में शौच बन्द कर घर-पड़ोस को स्वच्छ बनाने की तीव्र इच्छा जाग जाती है.

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन ठीक से होता है तो

- यह पूर्ण होता है अर्थात् यह समुदाय के सभी सदस्यों तथा आगन्तुकों को प्रभावित करता है
- यह समुदाय के सभी सदस्यों के द्वारा मिल कर लिये गये निर्णय पर आधारित होता है और इस पर सभी के द्वारा कार्रवाई की जाती है
- यह सभी के द्वारा मिलकर प्राप्त की जाने वाली उपलब्धि की भावना से प्रेरित होता है तथा इस अभिप्रेरणा का स्रोत समुदाय का बोध ही होता है न कि बाहर आर्थिक सहायता या रसद

- इस प्रक्रिया के दौरान नये स्वाभाविक नेताओं की पहचान हो जाती है या विद्यमान नेताओं में नई प्रतिबद्धता जाग जाती है जिससे वे अपने ढंग से अपनी स्थिति को बताने के लिये प्रशस्त हो जाते हैं न कि किसी विहित योजना का अनुसरण करके
- विविध प्रकार के कार्य के तरीके तथा नये उदय स्थानीय स्तर पर विकसित हो जाते हैं
- स्वयं सहायता और सहकारिता की पारम्परिक परिपाटी पुनर्जीवित हो जाती है और खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की प्रक्रिया में अमीरों और गरीबों के बीच में सामाजिक सहकारिता एवं एकता के नये उदाहरण उभर जाते हैं
- खुले में शौच को समाप्त करने तथा साफ और साफ सफाई की स्थिति प्राप्त करने के अभियान और स्थानीय कार्यालयों में पुरुष, महिला, किशोर और बच्चे सभी जुट जाते हैं
- समुदाय के द्वारा सभी की सहभागिता से चलाये जा रहे अभियान की ओर बहुधा स्थानीय नेता, चुने हुए जन प्रतिनिधि, स्थानीय सरकारी लोग एवं गैर-सरकारी संगठन आकर्षित हो जाते हैं तथा सहायता, समर्थन एवं सहयोग प्रदान करते हैं और विचारों के प्रसार हेतु प्रोत्साहन देते हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदाय स्वच्छता की सीढ़ी में और ऊपर बढ़ने लगते हैं तथा स्वच्छता सम्बन्धी सामग्री के स्थानीय व्यापारियों, विक्रेताओं, वितरकों से सम्पर्क साध कर अपने शौचालयों के निर्माण तथा डिजाइन में सुधार करने लगते हैं
- बहुधा खुले में शौच से मुक्त समुदाय इस स्तर को प्राप्त करके चुप नहीं बैठ जाते, वे अब साथ मिल कर अपने समाज को बदलना सीख चुके हैं इसलिये वे अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर भी उन्मुख हो जाते हैं जैसे, "गांव में कोई भूखा न रहे", "कोई बच्चा स्कूली शिक्षा से वंचित न रहे और सभी बच्चे स्कूल जायें", "सभी व्यक्तियों को समान मजदूरी मिले और महिलाओं एवं पुरुषों के अन्य की असमानता घटे", इत्यादि.

1990 में जब सहभागी ग्रामीण अध्ययन विधियों का प्रसार हुआ तो लोगों के द्वारा इसकी शब्दावली का तो प्रयोग किया परन्तु विधि की मूल भावना और आत्मा को विस्मृत कर दिया गया. परन्तु हम यह आशा करते हैं कि इस हस्तपुस्तिका के द्वारा प्रशिक्षकों, कार्यान्वयन कर्ताओं, प्रबन्धकों और नीति-निर्धारकों को इस प्रकार प्रेरित किया जा सकेगा कि वे तैयारी, क्रियान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों के लिये उच्च स्तर सुनिश्चित कर सकेंगे साथ ही संख्यात्मक लक्ष्य निर्धारण विधि को हतोत्साहित किया जा सकेगा क्योंकि लक्ष्य निर्धारण विधि शौचालयों की संख्या की गिनती करने तथा संख्यात्मक लक्ष्य प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाती है और इस बात पर बहुत ध्यान नहीं जाता कि कितने समुदायों के द्वारा खुले में शौच से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली गई है.

दो अति महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षाएं

1. सुगमकर्ताओं की अभिवृत्ति एवं व्यवहार

सभी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सुगमकर्ता के रूप में अच्छा कार्य कर पाने के लिये एक उपयुक्त अभिवृत्ति या व्यवहार की आवश्यकता होती है. यह सीख कर विकसित किया जा सकता है परन्तु कुछ लोगों की अपेक्षा अन्य में यह अधिक स्वाभाविक रूप से और सहज ढंग से विकसित हो जाता है. यह कार्य पारम्परिक सहभागी ग्राम्य अध्ययन जैसी प्रक्रियाओं के संचालन विधि से भिन्न है.

अभिवृत्ति और व्यवहार से जुड़े मुख्य बिन्दु

क्या अवश्य करना चाहिये	क्या नहीं करना चाहिये
स्थानीय स्वच्छता की अपनी स्थिति का विश्लेषण एवं आकलन करने के लिये समुदाय के कार्य को सुगम बनायें	लोगों को शिक्षित करना, भाषण देना या उन्हें निर्देशित करना कि उन्हें क्या करना है
समुदाय को उन्हीं के द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर स्थिति को समझने दें	लोगों को बताना कि क्या अच्छा है और क्या बुरा
प्रक्रिया को इस प्रकार सुगम बनाइये कि समुदाय के सदस्य स्वयं एकजुट होकर कार्यवाई करने के लिये तत्पर हो जायें	कार्यवाई के लिये विवश करना या दबाव डालना
आगत खड़े हो जायें और इसके आगे जो कुछ होना है उसे स्थानीय नेताओं पर छोड़ दीजिये	प्रभारी बनने की चेष्टा करना
जब समुदाय के सदस्यों में अन्तःप्रेरणा जागने का समय आने वाला हो तो धैर्य बने रहिये और उन्हें आगत से बातचीत करने दीजिये	जब उत्तेजना से भरे समुदाय सदस्य खुले में शौच करने और अन्य स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार के लिये अपने लोगों को शर्मसार कर रहे हों तो उन्हें बीच में रोकना और टोकना
लोगों को खुले में शौच के गन्ध और विष्ठा में सूत्र कर नाश बहाने दीजिये और स्वयं शान्त बने रहिये. याद रखिये कि यह अन्तःप्रेरणा जागने की स्थिति के आगमन का सही लक्षण और संकेतक है	समुदाय के सदस्यों को आपस में तर्क-वितर्क करने या एक दूसरे को शर्मसार करने पर हतोत्साहित करना अथवा जल्दी ही यह निष्कर्ष निकाल लेना कि इस प्रकार की सीधाकारी नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अवांछनीय है
आगे आकर पहल करने तथा प्रक्रिया में पूरे मनोयोग से संलग्न हो जाने वाले लोगों की सराहना कीजिये	उभर रहे स्वाभाविक नेताओं को नज़रअन्दाज़ करना
महिलाओं तथा निर्धन वर्ग के सदस्यों को प्रक्रिया में सहभागिता करने के लिये सदा ही प्रोत्साहित कीजिये	महिलाओं, बच्चों और अन्य जो बहुधा उपेक्षित रह जाते हैं को नज़रअन्दाज़ करना
गरीब सदस्यों को सहायता करने के लिये पहल करने वाले सदस्यों की खुली सराहना कीजिये	लोगों की सहायता के लिये आगे आने वाले लोगों को नज़रअन्दाज़ करना
समुदाय के सदस्यों को सरलता से बन सकने वाले शौचालयों के अभिनव डिजाइन बनाने और प्रस्तुत करने का अवसर दीजिये	शौचालय के किसी भौतिक विशेष को समुदाय पर थोपना
स्थानीय स्तर पर कार्य योजना बनाने और कार्यान्वित करने तथा स्वयं सहायता को प्रोत्साहित कीजिये	शौचालय निर्माण के लिये अनुदान का प्रलोभन करना
निर्णीक परन्तु सतर्क रहिये	बहुत गम गहन, बहुत गम्भीर के साथ लोगों को बताने का प्रयास करना
हर बात को बहुत ध्यान से सुनिये	लोगों को रोकना और टोकना

व्यवहार और अभिवृत्ति बहुत ही महत्वपूर्ण है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिये रिसोर्सेज, मानुपुट्टि, मार्केटिंग आदि के सम्मिलन की आवश्यकता होती है. इसके लिये आवश्यक है कि पहले घ भाषण देने का प्रयास न किया जाये वरन् समुदाय को उसके पर्यावरण के बदले भाव का मानव करने के लिये सक्षम बनाने के लिये अपने हाथ सृजनकर्ता द्वारा खींच लिया जाये.

2. संस्थाओं का संवेदनशील सहयोग

सभी संस्थाएं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को आगे बढ़ाने के लिये उपयुक्त नहीं होती है. यह आवश्यक है कि संस्थागत सहयोग लचीला हो तथा सदा उपलब्ध हो.

जहां हर सिलैंड ऊपर से आता है और कितना अनुदान वितरित कर दिया गया इस पर ही ध्यान केन्द्रित होता है ऐसी संस्था के जुड़ने से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मूल भावना के ही विलुप्त हो जाने की आशंका हो जाती है. यह भी ठीक है कि सामान्य स्वच्छता अभियान भी प्रभावी हो सकते हैं यदि वे समुदाय के सशक्तिकरण पर आधारित हो न कि सिलैंडों के अवहना: अनुसार तथा संख्यात्मक भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर. दो बड़े खतरे हैं बहुत पैसा क्योंकि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये बहुत कम पैसे की आवश्यकता होती है और कार्मिकों की स्थानिक निर्भरताएं तथा उनका अपर्याप्त अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण. इसके लिये एक प्रकार के अंकुश और अनुशासन की आवश्यकता होती है जो कई पैकेजशुदा व्यवस्थाओं में मुश्किल से मिलता है. (बाये पृष्ठ पर दी गई तालिका देखें, मूल अभिवृत्ति और व्यवहार).

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम निम्नवत् हो सकता है. साथ ही उन साधनों का भी उल्लेख किया गया है जिसका उपयोग गांव के स्तर पर लोगों को प्रेरित करने तथा अभियान की निगरानी करने के लिये किया जा सकता है. इस कार्य को करने का यही एक मात्र तरीका नहीं है परन्तु इसमें कुछ आवश्यक अवयवों को अवश्य ही रेखांकित किया गया है. स्थानीय स्थिति के अनुसार आप इसमें परिवर्तन करने के लिये स्वतंत्र हैं परन्तु क्या करना चाहिये और क्या नहीं इसका अवश्य ही ध्यान रखें क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है.

ट्रिगरिंग से पूर्व

समुदाय का चयन
परिचय तथा सहजीकरण

ट्रिगरिंग

सहभागी विधि से गांव की स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण
अभियान की निगरानी करने का क्रम

ट्रिगरिंग के बाद

समुदाय के द्वारा कार्य योजना तैयार करना
अनुवर्ती भ्रमण तथा अन्य गतिविधियां

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के आगे की राह

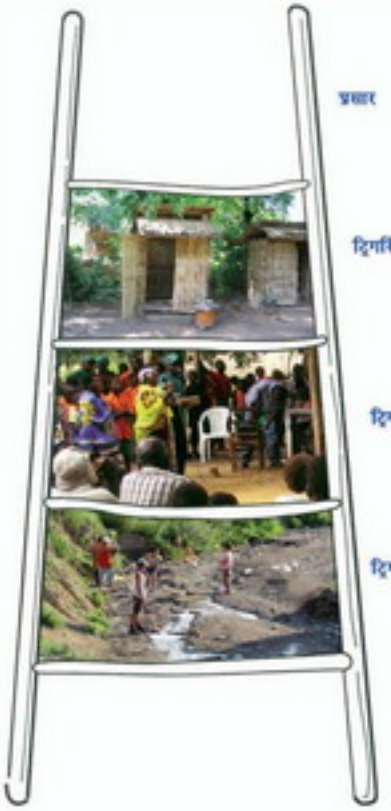

अध्याय 2
ट्रिगरिंग से पहले

समुदाय का चयन

यह एक निर्णायक चरण है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया पर भिन्न-भिन्न समुदायों की प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है. कुछ समुदाय तो परिवर्तन लाने के लिये तत्काल ही प्रेरित हो जाते हैं जबकि अन्य प्रारम्भ में तैयार नहीं होते या अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं परन्तु जब उनके सामने आसपास के गांवों में आये परिवर्तन की जानकारी आती है तो उनमें भी परिवर्तन लाने के प्रति तत्परता जागने लगती है. मोटे तौर पर यह देखा गया है कि जिन गांवों में अधिक सफलता प्राप्त हुई है उनमें अधिक जोशीले नेताओं का नेतृत्व था. ऐसे नेता पारम्परा की देन भी हो सकते हैं परन्तु बहुधा देखा गया है कि प्रक्रिया के दौरान भले स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आते हैं. यह नेता किसी भी वर्ग के हो सकते हैं. गरीब, अमीर, महिला, पुरुष, युवा, समुदाय के सम्मानित सदस्य, जो कि अपने विशिष्ट कौशल से समुदाय को विशिष्ट प्रकार से सेवाएं प्रदान करते हैं, जैसे दाई, धार्मिक नेता या शिक्षक आदि, इनमें से कोई भी इस प्रकार का स्वाभाविक नेता हो सकता है.

समुदाय में प्रेरणा की स्थिति के जागने के लिये अच्छे नेतृत्व के अतिरिक्त स्थानीय सामाजिक, भौतिक एवं संस्थागत स्थितियों का अनुकूल होना भी आवश्यक होता है. अभियान संचालन के प्रति समुदायों की प्रतिक्रियाओं में बहुत अन्तर होता है (पृष्ठ 40-42 देखें). "पेट्रोल पम्प में मारिया" जैसी सिम्बोटेक स्थिति से लेकर "भीगी हुई दियासलाई" की सी निराशाजनक स्थितियों तक. कहाँ शुरू करना चाहिये? इस प्रश्न का सही उत्तर ढूँढने के लिये कई लोगों एवं क्षेत्रों के द्वारा अनुकूल एवं चुनौतीपूर्ण स्थितियों की निम्नांकित सूची तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया गया है. उन जगहों में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हो सकती है जिनके विषय में पहले यह समझा गया हो कि यहां तो सफलता की कोई संभावना ही नहीं है. परन्तु यह उचित ही होगा कि आप पहले उन जगहों से शुरू करें जिनमें सफलता की संभावना अधिक हो. इस प्रकार सफलता के कुछ दृष्टान्त सामने आ जायेंगे, आपको अनुभव मिल जायेगा और आपका आत्मविश्वास बढ़ जायेगा. इसके बाद इन उदाहरणों एवं स्वाभाविक नेताओं की सहायता से अभियान को अधिक कठिन स्थानों तक फैलाने का प्रयास कीजिये. यह सूची स्थानों का चुनाव करने में आपके लिये सहायक हो सकती है परन्तु हमेशा की तरह यहाँ भी आप अपने विवेक से ही निर्णय कीजिये.

सूची में सीधे से सुलभ समुदायों द्वारा प्रस्तुत किये गये उदाहरणों पर
सौजन्यता के अवसर, सम्भाव, परिस्थिति प्रस्तुतीकरण

क. अधिक अनुकूल

- छोटी बस्ती (बड़े गाँव के बजाय छोटा पुरवा या टोला)
- शहरों और बड़ी सड़कों से दूरस्थ स्थित बस्ती
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सजातीय
- पास-पड़ोस में जंगल का न होना
- जल वातावरण जिससे मल इधर-उधर फैल कर बदबू फैलाता है
- प्रदूषित एवं अनुचित जलापूर्ति, जैसा कि कुछ पहाड़ी स्थानों पर पाया जाता है
- जहाँ परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता की कोई योजना न तो वर्तमान में है, न ही पहले थी और न ही पास में या कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम चल रहा है
- जहाँ फैली हुई गन्दगी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हो
- जहाँ डायरिया का प्रकोप और बाल मृत्यु दर अधिक हो
- युवा और प्रशिक्षित नेतृत्व हो
- समुदाय में सक्रिय समूह अस्तित्व में हो

कार्यक्रम पीछे वातावरण

- जब परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का कोई कार्यक्रम न हो और न ही प्रस्तावित हो
- जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को सफलतापूर्वक चलाने के लिये सूत्रधकर्ता पूर्ण रूप से अभिप्रेरित, ठीक से प्रशिक्षित और उपयुक्त अभिवृत्ति और व्यवहार वाले हों और उन्हें अपने संगठन से लगातार सहयोग मिल रहा हो
- जहाँ समुदाय को प्रेरित करने के बाद अनुवर्ती प्रोत्साहन और सहयोग की व्यवस्था हो
- हितधारी राजनैतिक नेतृत्व और सरकार स्थानीय सरकारी तंत्र

उपलब्धता, सेनेटरिक सहार के बाकी भाग में मौजूद बस्ती – ऐसे स्थान जहाँ साथ मल के कारण जल स्रोत संदूषित हो जाते हैं यहाँ खुले में शौच के स्थानों के अनुसार भवन में मौजूद अवसर ही स्थान चाहिये और समुदाय में परिवारों को जाने चाहिये

वर्तमान स्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ

- पृथ्वी पैदा करने वाली गिरावट ने रही गन्दगी जहाँ मल के द्वारा फैला प्रदूषण स्थानीय चाल हो
- जहाँ एकान्तता के अभाव के कारण शौच करने में कठिनाई आती हो
- जहाँ शौच करने के लिये निजी, सुलभ और सुविधाजनक जगहें न हों अथवा कम हों
- जहाँ मल का कोई आर्थिक मूल्य न हो या बहुत कम मूल्य हो
- जहाँ स्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ अभियान क्रियान्वयन के प्रारम्भ सुलभ तथा प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिये अच्छे अवसर प्रदान करती हों यथा: लोग इस बात का विश्लेषण कर सकते हैं कि किस प्रकार वे अपना ही मल खाते हैं और दूसरों के मल से भरे पानी में नहाते हैं
- जहाँ वर्षा होने पर या रात के समय लोग आस पास ही मल विसर्जित कर देते हैं

भौतिक स्थितियाँ

- मिट्टी मिला है और आसानी से खोदी जा सकती है
- जल स्तर काफी नीचा है और समय-समय पर बाढ़ या भूस्खलन की आशंका नहीं है
- बस्ती की बसावट ऐसी है कि उसमें पर्याप्त जगह उपलब्ध है
- आवासों के जुंड प्रदूषित नहीं होंगे
- जलापूर्ति अनुचित है और उसके विषाक्त होने की आशंका है

सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ

- बीमारियों की भयावह स्थिति, विशेष रूप से डायरिया और बाल मृत्यु
- बस्ती और समुदाय का छोटा आकार (बड़े गाँव के स्थान पर टोला या पुरवा)
- सामाजिक दृष्टि से सजातीय समुदाय और स्वयं अपनी मेजबान
- महिलाओं की गतिविधियों पर गंभीर अंकुश और वर्ग जहाँ महिलाओं को अपने घर के अन्दर ही बालियों में मल विसर्जन करना पड़ता है जिसका निपटान वे रात के अंधेरे में घर से बाहर ले जाकर और फेंक कर करती हैं
- एकजुट होकर काम करने की सुदृढ़ परम्परा
- महिलाओं की बात सुनी जाती है
- प्रशिक्षित स्थानीय नेतृत्व

सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों से सम्पर्क करने और परिस्थिति बदलने की क्रियाशील प्रक्रिया – चमोली का उदाहरण

भारत के हिमालय राज्य के चमोली जनपद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के 6-7 सूत्रधकर्ताओं के द्वारा एक गाँव में सर्वेक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई. उनके द्वारा प्रत्येक परिवार से भेंट की गई और एक छोटे से प्रारूप पर उनके विचारों को अंकित किया गया. इससे बुनियादी जानकारी तो प्राप्त होती ही है साथ ही सूत्रधकर्ताओं को समुदाय के विषय में जानने और उनसे परिस्थिति बदलने का अवसर भी मिल जाता है. सर्वेक्षण के अन्त में उन्हें घरों में से स्वच्छता के साथ पानी निकालने के लिये प्लास्टिक के बने डण्डी वाले छोटे रेले से एक सदभाव का वातावरण भी बन जाता है. इसकी सहायता से पीने का पानी निकालते समय गन्दे हाथों के उसमें डूबने से पानी के प्रदूषित होने की आशंका समाप्त हो जाती है. सर्वेक्षण के लिये दिये गये समय और सहयोग के लिये आभार के रूप में हर परिवार को यह कागजी भेंट की जाती है. इसके बाद समुदाय के सदस्यों को एक बैठक में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाता है जो कि सामान्यतया अगले दिन के लिये निर्धारित की जाती है जब कि ट्रिगरिंग की जाती है. तीसरे दिन गाँव की जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक आयोजित की जाती है जिसमें नियोजन और कार्ययोजना तैयार करने पर विचार किया जाता है.

स्रोत: डॉ. अनिल अग्रवाल, आई.ए.एस.

ख. अधिक चुनौतीपूर्ण

जहाँ निर्धारित करने पाई जाती है वहाँ स्थितियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं, विशेषकर उस समय जब इनमें से कई एक साथ होती हैं. यहाँ यह विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या इन स्थितियों के एक साथ होने के कारण यह समुदाय या उस स्थान को ट्रिगरिंग के लिये कम उपयुक्त बना देती है और इसलिये यहाँ बाद में काम करने की आवश्यकता होगी.

- बड़ी बस्ती
- मुख्य सड़कों एवं शहरों के पास
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण
- आसपास घना जंगल
- रेगिस्तान की स्थिति जिससे मल सूख कर निपटित हो जाता है
- शुद्ध पानी के लिये अच्छी तरह सुरक्षित किये गये जल स्रोत
- परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का पास में, वर्तमान में या कुछ समय पहले आसपास में चल रहा राष्ट्रीय कार्यक्रम जिससे शौचालय निर्माण के लिये परिवारों को अनुदान देने की व्यवस्था हो
- मोटे तौर पर साक्ष्य सामग्री की अच्छी स्थिति
- डायरिया, रोग का कम प्रकोप और न्यून बाल-मृत्यु दर
- युवा और प्रशिक्षणकारी स्थानीय नेतृत्व
- समुदाय में सक्रिय समूहों का अभाव

कार्यक्रम पीछे वातावरण

- जहाँ हाल ही में या वर्तमान में शौचालय निर्माण हेतु अनुदान प्रदान करने का कार्यक्रम चल रहा है या लोगों की जानकारी के अनुसार प्रस्तावित है
- ऐसी संस्थाओं की उपलब्धता जिनके पास अनुदान देने के बड़े बजट हैं तथा शौचालय निर्माण के निर्धारित तरीके एवं भौतिक रूप से निर्मित शौचालयों की संख्या के आधार पर प्रगति का मूल्यांकन करने की व्यवस्था
- ऐसी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान का विरोध
- ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती कार्यवाई और प्रोत्साहन के लिये संसाधन का अभाव
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता चल रही योजना और उसके कार्यकर्ताओं ने पाठ्यक्रम आधारित कार्य संस्कृति कि जैसा ऊपर से चला जायेगा वही किया जायेगा
- बड़े कार्यक्रम जिनमें निर्माण सामग्री पर व्यय करने के लिये बहुत धन उपलब्ध है और वे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये प्रयासरत हैं परन्तु आर्थिक सहायता प्रदान करने के क्रम और तरीकों को बदल कर अधिक लचीला बनाने के लिये तैयार नहीं हैं.

वर्तमान स्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ

- सुनिश्चित जलपूर्ति जिस पर सूखे में शौच से मुक्त होने से कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा
- पास के जल स्रोत का उपयोग जो कि मल को आगे बहा ले जाता है (नदियाँ, नहीं या समुद्र में ज्वार भाटा)
- मलमूत्र पालन के लिये मल का आर्थिक उपयोग, मल का फसल और सब्जी उगाने के लिये उपयोग
- मल निस्तारण के लिये निजी, सुलभ एवं सुविधाजनक स्थानों का होना (उदाहरण के लिये हर समय उपलब्ध जल के साथ लटकाये हुए शौचालय)
- बहुत सी प्रक्रियाएँ, वृक्ष और ऐसी भूमाकृति कि मल निस्तारण के लिये अच्छी ओट मिल सके

भौतिक स्थितियाँ

- ठोस चट्टानों जमीन जिसमें खुदाई करना कठिन
- बहुत ही भुरभुरी और ढह जाने वाली भूमाकृति
- बस्तियों की इस प्रकार की संरचना कि उनमें खाली जगह ढूँढना कठिन और शौचालय के गड्ढे के शीघ्र ही भर जाने की आशंका
- शौचालयों के कारण पास के कुँओं के प्रदूषित हो जाने का जोखिम
- शुष्क क्षेत्र जिसमें मल जल्दी सूख कर चरमूतीत और हानिरहित हो जाता है, उदाहरण के लिये रेतीले रेगिस्तान
- जहाँ बिना रिसाई लिये निर्मित रूप से शौच करने के अवसर उपलब्ध हैं, जैसे कि जब पानी लाने के लिये लोग दूर जाते हैं, या स्कूल जाते हैं
- जहाँ खेत वाली से काफी दूर होते हैं

सामाजिक स्थितियाँ

- जहाँ लोग बहुत स्थान ही तथा डाकोंच बहुत कम हो
- सामाजिक रूप से घेरा हुआ समाज जिसमें बहुत कम एका हो
- जहाँ एकजुट होकर काम करने की परम्परा बहुत कमजोर हो
- जहाँ महिलाओं की बात सुनना ही कभी सुनी जाती हो
- जहाँ एक ही शौचालय का परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा उपयोग वर्जित हो
- जहाँ अलग-अलग मौसम में बाहर से लोगों का आना-जाना लगा रहता हो और जनसंख्या अस्थिर हो उदाहरण के लिये ऋतु विशेष में बाहर से मजदूरों का आना, सुरक्षाकर्मियों जनजाति, गतिशील किसान जो वर्ष में कभी-कभी मजदूरी करने के लिये बाहर चले जाते हैं
- जहाँ कानूनकारी का अनुपात अधिक हो और भू-स्वामी कम

ग. अधिक अनुकूल या चुनौतीपूर्ण स्थितियों पर निर्भर होना

- घनी बस्तियाँ
- सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य एवं आस्था और विश्वास

यदि चयन करने का अवसर हो तो यह अच्छा होगा कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को ऐसे गाँवों से प्रारम्भ किया जाये जिनमें अधिक अनुकूल स्थितियाँ विद्यमान हों. यद्यपि ऐसे कई उदाहरण सामने हैं जिनमें चुनौतीपूर्ण स्थितियों के संदर्भ में भी सफलता प्राप्त हुई है, ऐसे गाँवों में भी जहाँ कार्यक्रम के तहत शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था थी. चुनौतीपूर्ण स्थितियों तो बस ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें चुनौती छिपी हुई है. चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और उनसे पार पाया जा सकता है. कई सामान्य का उल्लेख तो बाद में किया जायेगा परन्तु पाठक की सुविधा के लिये कुछ मुख्य सुझाव यहाँ तालिका में दिये जा रहे हैं (पृष्ठ 20-21).

इकोसैनिटेशन में मल या पानी से शौच करने सामान परिवारों है. इसे घर्षी का इकोसैनिटेशन पाखाने और कपड़े धोने के लिये भी किया जाता है

ट्रिगरिंग के लिये स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और मेल-जोल बढ़ाकर घनिष्ठता स्थापित करना

ट्रिगरिंग के लिये तैयारी करने के कई तरीके हैं और विविध प्रकार के अनुभव परन्तु विभिन्न आजमाये गये तरीकों और अनुभवों को अपेक्षित मात्रा में अभिलिखित नहीं किया गया है. इस पर गंभीरता से विचार करने और समीक्षा करने की आवश्यकता है. कुछ सामान्य बातें भी हैं जिन पर विचार करना होता है जैसे बैठक के लिये उपयुक्त दिनों, ऋतुओं और समय का चयन. जहाँ प्रवेशक गैर-सरकारी संस्था पहले से ही समुदाय के साथ कार्यरत है वहाँ परिचय और घनिष्ठता स्थापित करने के लिये अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं होती. यदि कोई गैर-सरकारी संस्था पहले से कार्यरत नहीं है तो समुदाय के सदस्यों को अपने प्रभाव का कायल बनाने के लिये आपको अधिक समय लगाना पड़ सकता है.

सामान्यतौर से की गई तैयारी यह सुनिश्चित करने के लिये बहुत आवश्यक है कि ट्रिगरिंग की बैठक में समुदाय के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके. ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार की बैठकों में केवल निर्धन या महिलाएँ और बच्चे अथवा जाती के किसी मोहल्ले विशेष से ही लोग भाग लेने आयें. ऐसा हो सकता है कि ट्रिगरिंग बैठक में अलग-अलग कारणों से पुरुष, सभ्य/उच्च वर्ग के लोग और समुदाय के अधिक प्रभावशाली सदस्य उपस्थित ही न हों. यदि समाज के सभी वर्गों के लोग बैठक में उपस्थित नहीं होंगे तो ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप सबके द्वारा एकजुट होकर कार्योपेक्षन को कार्यान्वित करने की संभावना कम हो जायेगी.

सीएलटीएस के विभिन्न चरणों के लिये एक प्रतीकात्मक समय सारणी

(सीख ही अनुभवी गतिविधियों को उपयुक्त से समय करना हमेशा महत्वपूर्ण होता है. स्थानीय स्थितियों पर बहुत कुछ निर्भर होता है तथा एक स्थान के लिये जो उपयुक्त है और दूसरे स्थानों के लिये जो उपयुक्त पाया जायेगा उनमें बहुत अन्तर हो सकता है)

चरण	सुझावात्मक समयावधि	स्टाफ तथा आम जरूरतें	अतिरिक्त टिप्पणियाँ
ट्रिगरिंग के पहले तैयारी	जिस गाँवों में गैर-सरकारी संगठनों/सहयोगी संस्थाओं के द्वारा कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं उनमें आगे दिन से लेकर एक सप्ताह तक का समय लग सकता है. एक या दो बार गाँव का भ्रमण काफी होना चाहिये	सामान्यतया कम से कम एक या दो कर्मियों का कार्यक्रम से पहले गाँव का भ्रमण करना जरूरी है ताकि सुगमकर्ताओं के भ्रमण की तिथियों एवं बैठक के स्थान का निर्धारण किया जा सके और समुदाय को भ्रमण के उद्देश्य से अवगत कराया जा सके	स्थानीय नेताओं, गाँव के मुखिया से मिले गाँव के सभी मुखों का भ्रमण करें जिसमें गाँव के आकार, जनसंख्या, सबसे गरीब क्षेत्र और आर्थिक सहायता के प्रस्ताव, यदि कोई हो, की जानकारी हो सके. ऐसे कि जब गाँव समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुकूल है अथवा चुनौतीपूर्ण, किस दिन गाँव का हाट हो या वहाँ शादी हो या कोई शोक हो उस दिन बैठक नहीं रखनी चाहिये.
ट्रिगरिंग	पूरी प्रक्रिया एक ही दिन में सम्पन्न होनी चाहिये (3 से 5 घण्टों में).	काम के साथ 3-4 और अधिकतम 5 सुगमकर्ताओं के दल के द्वारा ट्रिगरिंग सम्पन्न की जानी चाहिये परन्तु समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रतिबद्धता कार्यशाला में अधिक सुगमकर्ता हो सकते हैं	खुले दिमाग से प्रक्रिया को सुगम बनाने का प्रयास कीजिये और पहले से निर्धारित विचार धारा या मानसिकता अथवा अपेक्षित परिणाम को लेकर न चलिये. यदि किसी कारण से समुदाय में प्रेरणा की चिंगारी न जागी हो तो भी वहाँ से प्रसन्नता के साथ ही विदा लीजिये
ट्रिगरिंग के बाद	तीन सप्ताह से लेकर तीन माह की अवधि के अन्दर किसी भी समय गाँव को खुले में शौच से मुक्त हो जाना चाहिये. 6 माह से 1 वर्ष की अवधि बहुत लम्बी है. जो सबसे महत्वपूर्ण बात लोगों के मन में उतर जानी चाहिये वह यह है कि "हम अब एक खुले का स्थल नहीं खायेंगे". सभी इस मानसिक स्थिति से बाहर निकालने का प्रयास कीजिये	ट्रिगर किये गये गाँव में स्थानीय स्थिति को देखते हुए पहले सप्ताह में 1 या 2 बार भ्रमण एक या दो कर्मियों द्वारा किया जायेगा. इसके बाद कई आगन्तुकों का भ्रमण इस प्रकार किया जायेगा कि समुदाय को प्रोत्साहित किया जा सके और उसकी सहायता की जा सके. लेकिन भ्रमण बहुत जल्दी- जल्दी नहीं किये जाने चाहिये. याद रहे कि समुदाय को ही आगे आना है और बाहर सहायता पर निर्भर नहीं रहना है	सहयोग कीजिये, प्रोत्साहित कीजिये परन्तु उन्हें दबाइये नहीं. यदि आवश्यक हो तो स्थानीय नेताओं, समुदाय के सदस्यों को सफल गाँवों या स्थानीय कार्यकर्ता का भ्रमण कराने की व्यवस्था कीजिये जहाँ स्वच्छता की सामग्री बिकती हो. खुले में शौच से मुक्त हो गये गाँवों के स्थानीय नेताओं को अतिथि सुगमकर्ता के रूप में कम लागत शौचालयों का प्रसार करने के लिये आमंत्रित कीजिये.

चुनौतीपूर्ण स्थितियों से कैसे निपटा जाये
कुछ सुझाव

चुनौतीपूर्ण या अनुकूल न होने का अर्थ यह नहीं है कि इस प्रकार के गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने का प्रयास नहीं करना चाहिये. बावजूद में बोलिविया, नेपाल, तंजानिया, इथियोपिया, बोलिविया के जिन गांवों में पहली बार या प्रशिक्षण कार्यशालाओं के दौरान समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को क्रियान्वित कर सफलतापूर्वक ट्रिगरीन की गई वे सभी "अधिक चुनौतीपूर्ण" गांव थे. दूसरी शब्दों में इन गांवों में 'पहल' के द्वारा संचालित स्वच्छता की प्रारम्भिक स्थिति के अन्तर्गत शौचालयों के निर्माण के लिये परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई थी. परन्तु फिर भी इनमें से कई गांवों में खुले में शौच की प्रथा व्यापक रूप से फैली हुई थी और कई शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था. दिलचस्प बात यह है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के बाद इनमें से अधिकतर गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. ट्रिगरीन के लिये सुगमकर्ता का अच्छा कौशल और स्थानीय परिस्थिति को रखते हुए स्वविवेक से निर्णय लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है.

इस प्रकार के गांवों में ट्रिगरीन के लिये कुछ सुझाव इस प्रकार हैं।

- समुदाय के सदस्यों को अपने और अपने घर के सदस्यों का परिचय इस प्रकार दीजिये कि आप सब सीखने आये हैं (स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार, खुले में शौच के कारणों एवं प्रथा का अध्ययन करने) न कि स्वच्छता के अभिकर्ताओं के रूप में शौचालयों के आर्थिक सहायता के साथ या इसके बिना शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये

- समुदाय को बिल्कुल स्पष्ट कर दीजिये कि आप लोगों से खुले में शौच कारण बन्द करने के लिये या उनके स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को बदलने के लिये अनुरोध करने के लिये नहीं आये हैं. यह भी पूरी तरह स्पष्ट कर दीजिये कि आप आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली किसी भी संस्था से जुड़े नहीं हैं और न ही किसी प्रकार विशेष के शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये हैं.

- ट्रिगरीन की प्रक्रिया के दौरान (विशेष रूप से जब परोक्ष शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता के विषय में पूछें) उन्हें गम्भीरतापूर्वक बता दीजिये कि आप न तो स्वच्छता की सामग्री बेचने वाले हैं और न ही उनकी आदतों को बदलने के लिये प्रयास करने वाले हैं. वे अगर चाहें तो खुले में शौच कारण जारी रख सकते हैं. कुछ चरम स्थितियों में अन्य संस्थाओं द्वारा वित्त वर्षों में मुफ्त में दिये गये ऐसे शौचालय उन्हें दिखा सकते हैं जिनका कभी उपयोग ही नहीं किया गया. उन्हें यह बता दीजिये कि आप को स्पष्ट है कि शौचालयों का प्रयोग न करने तथा खुले में शौच जारी रखने का निर्णय उनका था और इस स्थानीय निर्णय में आप कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहते. वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं. आप तो केवल समुदाय के द्वारा खुले में शौच करते रहने के निर्णय के कारणों को समझना चाहते हैं. और यही आप उनसे सम्पर्क करके सीखना चाहते हैं.

- यदि ट्रिगरीन की प्रक्रिया सफल होने के बाद आप यह पाते हैं कि समुदाय ने एकजुट होकर खुले में शौच से मुक्त होने के लिये कुछ करने का जोश नहीं आया है तो उससे पूछिये कि क्या आप उनकी एक फोटो खींच सकते हैं, या उनके गांव के नाम को अपनी रिपोर्ट में इस टिप्पणी के साथ लिख सकते हैं कि गांव के लोगों ने यह फैसला किया है कि वे एक दूसरे का मल खाते रहेंगे और खुले में शौच करते रहेंगे. यह अच्छा ही है. वे कभी अपनी सीटियों पुरानी खुले में शौच करने की आदत को बदलने का प्रयास करें? हो सकता है कि वे कहें कि वे शौच तो खुले में शौच कारण बन्द कर देंगे. उन्हें बता दीजिये कि वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं और वे अपनाये गलत न समझें तथा किसी प्रभाव में न आयें.

- समुदाय को ही अपने निर्णय करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. उनका मानचित्रीकरण कीजिये, उन्हें तय करने दीजिये कि क्या अच्छा है और क्या बुरा. बाहर से आये लोगों से उन्हें प्रभावित नहीं होना चाहिये चाहे बाहर व्यक्तियों के द्वारा नकल रीति या मुफ्त सामग्री ही क्यों न दी जा रही हो. गांव के संदर्भ में उचित निर्णय लेने के लिये स्थानीय लोगों का विवेक ही सबसे उपयुक्त होता है.

- अधिकतर मामलों में आपको समुदाय के सामाजिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा. जो लोग अगले दिन खुले में शौच करते पाये जायेंगे उनसे अपने हाथ खड़े करने को कहिये. अगर कोई हाथ खड़ा न करे तो पूछिये कि अगर वे खुले में शौच नहीं करेंगे तो क्या करेंगे. कुछ लोग कहेंगे कि उन्हें मल गड्ढे वाले शौचालय बनाने में कुछ समय लगेगा. हो सकता है कि कुछ लोग कहें कि जब अगली बार वे बाहर जायेंगे तो अपने साथ बेलचा ले जायेंगे तथा छोटा गड्ढा खोद कर उसमें शौच करेंगे तथा उसके बाद उसे मिट्टी से ढक देंगे. पूछिये कि क्या सभी लोग ऐसा करेंगे? अगर अगले दिन से सभी ऐसा करने लगेंगे तो उसका क्या सामाजिक प्रभाव होगा? उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनके द्वारा उधार देने के लिये ताली बजा कर उनका अभिवादन कीजिये.

- हर बार जब समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने के लिये किसी नई पहल का उल्लेख किया जाता है तो सभी को उस समय ताली बजाने के लिये कहिये. जोर से ताली बजाइये और समुदाय के सदस्यों को भी जोर से ताली बजाने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. हो सकता है कि पहल करने वालों के बाद कुछ और लोग भी उत्साहित हो जायें और अपने हाथ उठा दें. ताली बजा कर उनका भी अभिवादन कीजिये. पूछिये कि क्या समुदाय के और कुछ लोग कुछ अलग तरीके से करने के बारे में सोच रहे हैं?

- इसकी संभावना बहुत अधिक है कि भीड़ में से कोई निकल कर सामने आये और कहे कि वह एक मल गड्ढे वाला शौचालय बनायेगी. पूछिये कि वह कब ऐसा करेगी. पूछिये कि क्या कोई मल गड्ढे वाले शौचालय के निर्माण की प्रक्रिया को देखने के लिये आना चाहेगा? खूब जोर से ताली बजाइये और प्रोत्साहित कीजिये.

- जिसके द्वारा शौच पहल करने का साहसपूर्ण निर्णय लिया गया है उन सभी को सामने आकर खड़े होने के लिये कहिये. उनसे पूछिये कि क्या खुले में शौच बन्द करने और शामिल कार्यवाई करने के लिये तत्पर हुए लोगों के समूह की आप फोटो खींच सकते हैं? उनसे हाथ खड़ा करने को कहिये और उनकी एक फोटो खींचिये. इसके बाद पूरे समुदाय की फोटो खींचने की अनुमति लीजिये जिसमें शौच करने वाले लोग भी हों जिन्होंने खुले में शौच करते रहने का निर्णय लिया है और वह छोटा समूह भी जिसके द्वारा खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लिया गया है. बीच में हस्तक्षेप मत कीजिये. उन्हें इस बात को स्वयं सुलझाने दीजिये.

- हो सकता है कि प्रक्रिया के दौरान इस समय आपका सामना किसी ऐसे व्यक्ति से हो जाये जो कि किसी स्थानीय राजनैतिक दल या संस्था या आर्थिक सहायता अथवा शौचालय निर्माण की सामग्री के वितरण कार्यक्रम को लागू करने वाले किसी सरकारी/गैर-सरकारी संगठन से जुड़ा रहा हो और समुदाय को सब-अभियोजित होने से रोक रहा हो. सामान्यतया ऐसे लोगों के निजी स्वार्थ होते हैं और समुदाय को अपने घर में करना चाहते हैं जिसके लिये वे मुफ्त की सामग्री आदि का लालच देकर उन्हें अपनी ओर खींचते हैं. ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार कीजिये. उन्हें आराम से जाइये और गंभीर परिचर्चा में उलझा दीजिये. उनसे कहिये कि उनके पास बहुत मूल्यवान जानकारी है और वे आपको गांव की स्वच्छता की स्थिति तथा स्थानीय परिस्थितियों को समझने में बहुत सहायक हो सकते हैं. ट्रिगरीन के स्थान से दूर उनसे चाय, बिस्किट पीने के लिये कहिये और उनके द्वारा जो कुछ भी कहा जाये उसे ध्यान से सुनिये तथा उसे कागज पर लिखते भी जाइये.

- सबसे बुरा तरीकों में से एक तो यह हो सकता है कि इस प्रकार के चुनौतीपूर्ण गांवों के साथ के किसी ऐसे गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को चलाइये जहाँ आर्थिक सहायता के कारण लोगों की पारदर्शिता प्रभावित नहीं हुई है. एक बार जब यह गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जायेगा तो अधिक चुनौतीपूर्ण गांव को भी उसी राह पर चलाना सरल हो जायेगा.

- अपने विवेक का प्रयोग करते हुए बहुत सी अन्य अभिनव चालों का प्रयोग स्वतंत्रता से कीजिये. यह बहुत कठिन नहीं होगा.

अध्याय 3

ट्रिगरिंग

कई देशों में सैकड़ों गंदे गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत समुदायों को सफलतापूर्वक प्रेरित करने के लिये ट्रिगरिंग की जा चुकी है. यह अच्छा होगा कि ऐसे गांवों में ट्रिगरिंग की पहल की जाये जहाँ स्वच्छता की स्थिति में सुधार लाने के लिये पहले कोई प्रयास नहीं किये गये है. इस प्रकार के अनछुए गांवों में अनुभवी सुगमकर्ताओं के द्वारा ट्रिगरिंग का काम अच्छे ढंग से सफलतापूर्वक किया जा सकता है.

समुदाय द्वारा स्वच्छता स्थिति मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये आधार

जब समुदाय के द्वारा खुले में शौच की समस्याएं और इसके प्रतिकूल प्रभावों का प्रत्यक्ष सामना किया जाता है तो उनमें घृणा और शर्म के बोध भाव जागते है. यही ट्रिगरिंग का आधार है. आधारभूत सिद्धान्त यह है कि कोई भी लोग यह जानने के बाद कि खुले में शौच के कारण वे एक दूसरे का मल खा रहे है बिना विचलित हुए नहीं रह सकते. सुगमकर्ता का लक्ष्य है समुदाय की इस प्रकार सहायता करना कि वह स्वयं यह समझ सके कि खुले में शौच के कितने भयानक दुष्परिणाम होते है और एक दूषित वातावरण बनता है. इसके बाद यह समुदाय पर ही निर्भर है कि वह निर्णय करे कि इस समस्या से कैसे निपटना है और क्या कार्यवाही करनी है.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर संगोष्ठी में आयोजित एक
स्वच्छतीय प्रतियोगिता के दौरान पालन केन्द्रों के विभिन्न अधिकारी समुदाय
को गांव के घरों को गांव के लिये प्रस्तुत करने से पहले उसे घर से
संबंधित करते हुए.
छायांकन: सैमुअल मुसियामोनी, पालन केन्द्र

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये पृष्ठभूमि और कुछ मूल बातें

समाज के कुछ वर्ग ऐसे होते जो अपने ही विशेष कारणों से परिस्थिति को बदलना चाहेंगे. उदाहरण के लिये,

- रौशनदान वाले परिवार जिन्हें जब यह स्पष्ट हो जाता है कि बिना रौशनदान वाले अन्य लोगों की खुले में शौच की आदत से उन्हें भी संक्रमण का खतरा है
- भूमिहीन लोगों को बहुत गुलाबी की भूमि पर खुले में शौच करने का दोषी मान जाता है और उन्हें गाली दी जाती है
- खुले में शौच की प्रथा होने पर एकान्तता न मिलने से सबसे अधिक कष्ट महिलाओं एवं जवान बालिकाओं को उठाना पड़ता है. बहुत पौ फटने से पहले या रात का अंधेरा हो जाने पर ही निपटने के लिये उन्हें बाध्य होना पड़ता है.
- धार्मिक पेशाओं को स्पष्ट हो जाता है कि साफ कपड़े पहनने का कोई लाभ ही नहीं हो सकता यदि मानव मल पर बैठी मक्खियां उनके वस्त्र गंदे कर रही हों.

समुदाय के इन वर्गों को प्रबल भावनाएं पूरे गांव को खुले में शौच से मुक्त करने के लिये एकजुट होकर उपयुक्त कार्यवाई करने हेतु महत्वपूर्ण उत्प्रेरक हो सकती हैं. इन लोगों को इकट्ठा करके एक प्रभावशाली समूह बनाया जा सकता है जो कि अन्य लोगों को भी व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है.

विशेष सुझाव

सुगमकर्ता की अभिरुचि और कार्यशैली ही सफलता की कुंजी है. सुगमकर्ता में यह भी कुशलता होनी चाहिये कि वह समुदाय को स्पष्ट कर सके कि जो अन्याय कराया जा रहा है उसका उद्देश्य यह नहीं है कि कोई बाहर व्यक्ति खुले में शौच बन्द कराने का प्रयास कर रहा है वरन् यह है कि समुदाय के सदस्य स्वयं ही अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करें और अपने आप उचित निर्णय लें. समुदाय के सदस्य खुले में शौच करते रहने और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहने का निर्णय भी यदि लेते हैं, तो वह भी सुगमकर्ता को स्वीकार है. परन्तु यदि समुदाय के सदस्य सहमत हों तो उनके गांव का नाम रिपोर्ट में दर्ज कर दिया जायेगा तथा जो नई सीख मिली है उसे भी लिख दिया जायेगा.

पीछे रह गई विधियों के अलावा नई विधियों को विकसित करने और प्रयोग में लाने के लिये अपने को स्वतंत्र समझिये

यद्यपि प्रयोग की जाने वाली विधियों का अनुक्रम महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु फिर भी गांव के अनुक्रम प्रथम से मूल कारण बहुत उपयोगी सिद्ध होता है.

जमा और बाकी मोहल्ला जमा भी रौशनदीन की महिला सुगमकर्ता सबर के साथ गलीदीन के गांवों की महिलाओं के बीच समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की दिशीन करती हुई

गांवों सबर, चाकिसतान और अन्य भूमिहीन टोलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रत्येक दिशीन टीम में महिला सुगमकर्ता का होना आवश्यक है. यदि अनुसूचित जातियाँ भूमिविहीन किया जाता है तथा दिशीन की बैठक कक्षों में या उन स्थानों में आयोजित की जाती है जहाँ पुरुष उन्हें न देख सकें तो महिलाएं खुल कर सहज भाव से प्रतिभाग करती हैं, अपने विचार व्यक्त करती हैं और खुले में शौच के विरुद्ध एकजुट होकर कार्यवाई करने की ठान भी करती हैं

क्या अवश्य करें

निम्नांकित को अपने साथ अवश्य ले जायें

- बिस्तर चार्ट, लेवेल कार्ड, कैंची, स्टाकिंग टेप, सफेद कागज
- जल की शुद्धता का परीक्षण करने के लिये साइट्रोजन सल्फाइड की बोतलें (जल जनित संतुलन और सल्फोनेक तथा कोलिफोर्म की उपस्थिति के लिये)
- कैलेंडर
- लेवेल पाउडर जिसमें पीला पाउडर पर्याप्त मात्रा में हो जिससे शौच के स्थानों को सावधि जा सके
- यदि किसी कारण से उपर्युक्त में से कोई सामग्री नहीं मिल पाती तो स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग हो सकता है जैसे: रस्सी, लकड़ी का बुरादा, चावल का भूसा, पत्तियाँ, घास इत्यादि

टीम में महिला सदस्य अवश्य होनी चाहिये

टीम में महिला सुगमकर्ता अवश्य होनी चाहिये. जिन क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों के साथ भाग नहीं ले सकतीं (जैसा चमन या दरदमयूक पाकिस्तान में) वहाँ कम से कम दो महिला सुगमकर्ता टीम में अवश्य रखी जानी चाहिये.

टीम के सदस्यों को भूमिकाएँ निर्धारित होनी चाहिये. इन्हें निम्नांकित को शामिल किया जा सकता है:

- मुख्य सुगमकर्ता
- सह-सुगमकर्ता. यदि मुख्य सुगमकर्ता स्थानीय भाषा न बोल सकता हो तो दो सह-सुगमकर्ता रखे जा सकते हैं.
- रिकॉर्ड, प्रक्रिया को अभिलेखित करने के लिये
- एक या अधिक वातावरण बनाये रखने वाले लोग जो कि प्रक्रिया के दौरान उपयुक्त वातावरण बनाये रखने के लिये उत्तरदायी हों. उनके दायित्व में मार्गनिर्देशकों के लिये उपयुक्त स्थान की व्यवस्था, किसी भी प्रकार की गड़बड़ी को रोकना, मोबाइल फोनों को बन्द कराना, आवाजाही का नियंत्रण, सुनिश्चित करना कि कोई भाषणबाजी न हो, महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों के समूहों को व्यवस्थित करना, लोगों को जोश दिलाना आदि सम्मिलित होंगे
- टीम के सभी सदस्यों का दायित्व होगा कि वे समुदाय में से उठाये जाने वाले स्वाभाविक मुद्दों पर नजर रखें और उनके सामने आने पर उन्हें बोलने और नेतृत्व करने के लिये प्रोत्साहित करें.

तरीका

विश्लेषण प्रक्रिया इतनी सुगम कीजिये कि समुदाय स्वयं विश्लेषण करे तथा उन्हें सूखे में शौच के प्रति घृणा और शर्म महसूस होने लगे. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत लोगों को एकजुट होकर अपनी स्थिति बदलने के लिये कार्रवाई करने का जोश पैदा हो. इस जोश को पैदा करने के लिये सुगम अवसर होते हैं गान, फिल्म और अपनी आदतों के प्रति घृणा, लज्जा, गन्दगी का बोध, अशिक्षता जो कि कई धर्मों में जुड़ी मानी जाती है और एकान्तता के अभाव के कारण असुविधा (विशेषकर महिलाओं के लिये). बहुधा इन्हीं बातों के कारण लोग सूखे में शौच बन्द करके स्वच्छता के साथ निश्चित स्थान पर शौच करने की आदत डालने के लिये आन्दोलित हो जाते हैं.

प्रश्न अवश्य पूछिये. बिना भाषण दिये या उन्हें कुछ बताने का प्रयास किये बिना भी समुदाय के सदस्यों में सूखे में शौच के प्रति घृणा जगाने में सहायक होने के लिये कई तरीके हैं. प्रश्न पूछने में सृजनात्मक होने का प्रयास कीजिये. (नमूने के प्रश्नों के लिये परिशिष्ट पर देखिये).

परिवर्त्तन में बच्चों को अवश्य ही सम्मिलित कीजिये और उनसे पूछिये कि क्या वे सूखे में शौच करने को अच्छा समझते हैं या बुरा? अगर अच्छा नहीं समझते हैं तो सूखे में शौच को बन्द कराने के लिये वे क्या करेंगे? बहुत बच्चे इकट्ठे होकर सूखे में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस निकालते हैं. बच्चों को इस प्रकार की गतिविधियों में बहुत आनन्द आता है.

भाषण मत दीजिये, न ही समुदाय के सदस्यों को शिक्षा देने का प्रयास कीजिये कि सूखे में शौच की परिपाटी के कारण कितनी बीमारियाँ होती हैं, चकित्सकों किस प्रकार संतुलन फैलाती हैं या कि हाथ ठीक से धोने और साफ रखने की आवश्यकता क्यों है?

आर्थिक सहायता का उल्लेख भी न कीजिये जिससे उन्हें स्पष्ट हो सके कि आप यहाँ आर्थिक सहायता देने या सीधासाधा के किसी मॉडल विशेष पर कोई सुझाव देने नहीं आये हैं. (कृपया 'चुनौतीपूर्ण गतिविधियों में कैसे निपटा जाये' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये सुझावों को देखिये).

शुरुआत कैसे करें

गाँवों में काम करने के लिये जो पत्रकार दिये जाते हैं वही यहाँ पर भी लागू होते हैं. बहुत दिखावे वाला पहनावा मत रखिये. विनम्र, व्यवहार कीजिये, तत्परशील और विश्वास रखिये. जानकारी बिल्कुल सच कीजिये. दिमाग खुला रखिये और जिससे मिलें उनसे सम्मान स्थापित करने का प्रयास कीजिये. सावधि रखिये और हर बात को ध्यान से देखिये. ध्यान से सुनिये. अच्छी बातों की सराहना कीजिये - पहले अच्छी बातों की सराहना करने से बाद में ऐसे बुरे उदाहरण आसान हो जाता है जिससे घृणा उत्पन्नी है और समुदाय शर्मसार हो जाता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ओर प्रेरित करने के लिये सीधे प्रश्न पूछना भी सरल हो जाता है.

गाँव पहुँचने पर गाँव के लोगों को अपना परिचय दीजिये. उन्हें अपने भ्रमण का प्रयोजन बताइये. यदि आपके भ्रमण के विषय में सवाल उठाये जाने लगें तो उन्हें यह बताना उपयोगी होगा कि आप और आपकी टीम के सदस्य जिले के गाँवों की स्वच्छता की स्थिति का अध्ययन कर रहे हैं. आप उन गाँवों की संख्या का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं जहाँ सूखे में शौच करने की परिपाटी है. साथ ही आप यह भी जानना चाहते हैं कि इस परिपाटी के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रभाव क्या हैं.

सूखे में शौच और गाँव की स्वच्छता पर परिचर्चा प्रारम्भ करने के कई तरीके हैं. बहुधा गाँव में अनौपचारिक रूप से टहलते समय आप कुछ लोगों के साथ परिचर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं. रास्ते में मिल गये कुछ थोड़े से लोगों से बातचीत करते हुए भी आप परिचर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं. आप उनसे अनुरोध कर सकते हैं कि वे आपके साथ सफाई के निशानों की ओर, झाड़ियों के पास, पत्तियों के आसपास, या अन्य खुली जगहों पर चले जहाँ लोग सामान्यतया सूखे में शौच करने जाते हैं. इस प्रकार के स्थानों पर कुछ लोग जब इकट्ठा होकर बातचीत करने लगते हैं तो और लोग भी आकर्षित हो कर वहाँ चले आते हैं.

आप शुरुआत इस प्रकार के प्रश्नों से कर सकते हैं: "क्या यही वह जगह है जहाँ गाँव के अधिकतर लोग शौच करते हैं? इसके अलावा और कहाँ?, यह किसका मल है?" अनुरोध कीजिये कि जिन लोगों ने उस दिन सूखे में शौच किया था वे अपने हाथ उठायें फिर उन्हें सुझाव दीजिये कि वे उस स्थान पर चले जहाँ उन्होंने शौच किया था और देखें कि क्या उनका मल अभी भी वहीं पड़ा है. कई बतायेंगे कि उनका मल अब वहाँ नहीं है. जब आप उनसे पूछेंगे कि उसका क्या हुआ होगा तो अधिकतर लोग बतायेंगे कि कुत्ते और सुअर खा गये होंगे. उनसे पूछिये कि कुत्ते? पूछिये कि जब कुत्ते घर आते हैं तो वे परिवार के सदस्यों को किस प्रकार सूँघते, चाटते हैं या बच्चों के साथ खेलते हैं? एक बार जब उनकी दिलचस्पी बढ़ जाये तो उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे समुदाय के अन्य सदस्यों को भी इकट्ठा कर लें जिससे ट्रिगरिंग की प्रक्रिया शुरू की जा सके. आपको एक ऐसी जगह भी ढूँढनी होगी जिसमें अधिक संख्या में लोग खड़े हो सकें, बैठ सकें और काम कर सकें.

सुनिश्चित कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के स्थान पर अधिकतर लोग इकट्ठा हो जायें और गाँव के अधिकतर घरों का प्रतिनिधित्व हो सके. निम्नांकित बातों की जा सकती हैं:

- पानी कार्ड्स का सकती हैं (जिसेफ डिलेवेर के कॉन्फ जिले में प्रचलित पाया गया)
- गुड़गुड़े या चीर के महाकोबोल की सहायता से उदाहरण (भारत के पंजाब और हरियाणा राज्यों में प्रचलित पाया गया)
- मॉडल के लाउडस्पीकर और महाकोबोल का उपयोग करके लोगों को बैठक के लिये आमंत्रित करना कई देशों में सामान्य रूप से पाया गया है
- बच्चों को गाँव में अलग-अलग दिशाओं में भेजकर बैठक की सूचना पहुँचाने
- मार्गनिर्देशकों से पहले गाँव का अनुक्रम भ्रमण लोगों को आकर्षित करने के लिये उपयोगी पाया गया है. गाँव की सड़कों, गलियों और गलियारों से गुजरते हुए जो भी मिले उसे आकर्षित कीजिये. चलते हुए साथ चल रहे लोगों से बातचीत करते रहिये. एक अजनबी को अपने मित्रों और सम्बन्धियों के साथ टहलते और बात करते देख कर अन्य लोग भी उत्सुक होकर साथ आ जायेंगे.

संचालन कीजिये एवं प्रक्रिया को सुगम बनाइये

समुदाय के सदस्यों से पूछिये कि "मल" और "मल स्थान" के लिये स्थानीय भाषा में किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, इसके बाद उनके बताये शब्दों का ही प्रयोग कीजिये

'मल' और **'मल स्थान'** के लिये लिखे शब्दों के स्थान पर लोगों के द्वारा बताये गये गंदगी शब्दों का ही प्रयोग कीजिये

कम्बी स्थानीय भाषा का उपयोग करने में हिचकिचाये नहीं. जब आप समुदाय के काफी बड़े भाग से मिल चुके हों और उनकी दिलचस्पी जग चुकी हो तो फिर एक बैठक आयोजित की जानी चाहिये. अच्छा होगा कि बैठक में महिलाएँ, पुरुष, बच्चे तथा समुदाय के सभी समूहों के लोगों के द्वारा प्रतिभाग किया जाये. बैठक का समय है सहभागी ग्राम अध्ययन के साधनों का प्रयोग करके समुदाय को ऐसे प्रेरित करना कि वे गहनता के साथ सूखे में शौच तथा स्वच्छता सम्बन्धी आदतों तथा इसके प्रभाव का विश्लेषण कर सकें.

शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान स्थानीय समुदाय के द्वारा सूखे में शौच के उपयुक्त स्थानों की पहचान की जाती है. मध्य में इस स्थानीय के एक गाँव समुदाय के सदस्य लोगों के द्वारा सूखा और साथ सूखे में शौच के लिये उपयोग की जाने वाली सम्भावित जगहों को दिखाने के लिये अनुक्रम भ्रमण का नेतृत्व करते हुए

घोड़े से ही सफर में समुदाय के सदस्य तीन की पहाड़ की ढलान पर एक बहुत गन्दी जगह ले गये जो कि कुड़े, मल और पशुमिल से पटी पड़ी थी. यहाँ गाँव के लिये पानी का मुख्य स्रोत भी था. यह स्थान गाँव की सीमित के शौच होने का कारण न तो कोई प्रसाधन था और न ही हाथ धोने की व्यवस्था, लोग दिन में कई बार सीमित में आते थे और उनमें से कई तो प्रार्थना के पहले यहाँ शौच करते थे और यहाँ धोते थे. उसी स्थान पर की गई परिचर्चा ट्रिगरिंग के लिये बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई

खाली मल को डोलों की छोर में छोड़ियों के बीच घसीटा: अलवा डिस्पोजिल के पास ग्रामवासी खुले में शौच के स्थानों के अनुप्रस्थ भ्रमण के लिये मल का पेड़ल करते हुए

ग्राम वासी को खुले में शौच के सभी स्थान बहुत ठीक से पता है. इस गन्दगीं मल में खुले में शौच की जगहों का अनुप्रस्थ भ्रमण करते हुए बच्चे

शुरुआत करने के लिये ऐसे प्रश्नों के प्रयुक्त में उनसे हाथ खड़ा करने का अनुरोध कीजिये: "आज किसने खुले में शौच किया?", "क्या आज आपने अपने गांव में मानव मल को देखा और उसकी बदबू को महसूस किया?"

हिमाचल प्रदेश के एक गांव में ट्रिगरिंग के दौरान लोग सच्चाई को छिपाना चाहते थे और उन्होंने कहा कि यहां कोई भी खुले में शौच नहीं करता. जब उनसे पूछा गया कि क्या वे खुले में शौच करते हैं तो कोई हाथ खड़ा नहीं हुआ. तब उनसे कहा गया कि वे अपनी आँखें बन्द कर लें और अपने बच्चों के बारे में सोचें. उनसे यह चिंतन करने के लिये कहा गया कि क्या उनमें से कोई ऐसा है जिसे लगता है कि खुले में शौच से उनके बच्चों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है. उनसे फिर एक बार पूछा गया कि क्या उनके गांव में खुले में शौच करने की परिपाटी है. यदि ऐसा है तो उनसे हाथ खड़ा करने के लिये कहा गया. तब 50 में से 30 ने हाथ खड़े कर दिये.

स्रोत: शशि भूषण चन्दर, कॉलेज लिंकेज

वाहन चालक और उनके सहायक भी ट्रिगरिंग में भागीदार हो सकते हैं. हिमाचल प्रदेश के एक गांव में समुदाय ने यह दावा किया कि खुले में शौच से मुक्त है, यद्यपि खुले में शौच करना सभी की सामान्य आदत थी. वाहन चालक के युवा सहायक को एक सुगमकर्ता द्वारा यह कहने के लिये प्रेरित किया कि उसे तुरन्त मल निपटान की आवश्यकता हो गई है. तब उसने एक ग्रामवासी से पूछा कि गांव में खुली जगह कहाँ है जहाँ वह निवृत हो सकता है. ग्रामवासी ने पुरुषार्थ एक जगह की ओर इशारा किया और उसने कहा कि वह वहां जाकर शौच कर सकता है. उसने वाहन चालक से अनुरोध किया कि वह इस बात का जिक्र किसी से न करे. वाहन चालक का सहायक वहां गया और उसने जगह-जगह मल बिखरा हुआ देखा तथा इस बात की जानकारी सुगमकर्ता को दे दी. सुगमकर्ता अनुप्रस्थ भ्रमण के लिये उसी स्थान की ओर चल पड़ा. एक युवा महिला ने ही उसके साथ जाना स्वीकार किया तथा आप सभी ने साथ जाने से मना कर दिया. इस महिला की हाल ही में शादी हुई थी और एक सप्ताह पहले ही वह गांव में आई थी. जो कुछ उसने देखा उससे वह भयभीत हो गई - खाड़ी दीवार वाली नाली पर मल के विशाल ढेर, देखते ही वह उल्टी करने लगी और घृणा से भर गई. मल के ढेर के पास ही पानी का स्रोत था जिससे से पानी पम्प के द्वारा टैंक में भेजा जाता था जहां से वह गुरुत्व आधारित वितरण प्रणाली की सहायता से घरों को वितरित किया जाता था. उसने कहा कि जो भी लड़कियां गांव में शादी करके आयेंगी उन्हें वह प्रेरित करेगी कि वे इस बात पर जोर दें कि उनके लिये शौचालय बनवाये जायें. उसने समुदाय के लोगों को इस सच्चाई को छिपाने लिये दोषी कहा.

स्रोत: जे.पी. शुक्ला, कॉलेज लिंकेज

खुले में शौच के स्थानों का अनुप्रस्थ भ्रमण

अनुप्रस्थ भ्रमण अभिप्रेरित करने के लिये सबसे प्रभावी साधनों में से एक है. अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान समुदाय के सदस्यों को घोर घृणा और शर्म का जो अनुभव होता है उसके कारण उनमें तत्काल खुले में शौच जाना बन्द करने और गन्दी जगहों की सफाई करने की तीव्र इच्छा पैदा हो सकती है. यद्यपि गन्दगी और मल को लोग रोज ही देखते हैं परन्तु वे समस्या के प्रति उसी समय जागते दिखाई देते हैं जब किन्हीं बाहरी व्यक्तियों के द्वारा उन्हें फैली गन्दगी को देखने और स्वच्छता की स्थिति का स्वयं विश्लेषण करने के लिये उत्प्रेरित किया जाता है.

अनुप्रस्थ भ्रमण का अर्थ है समुदाय के सदस्यों के साथ गांव के एक छोर से दूसरे छोर तक टहलना, हर चीज का बारीकी के साथ अवलोकन करना, प्रश्न पूछने सहज और समुदाय के सदस्यों को ध्यान से सुनना. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान आप उन जगहों की पहचान कर सकते हैं जिनका प्रयोग खुले में शौच के लिये किया जाता है. साथ ही रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के शौचालयों को भी आप देख सकते हैं. समुदाय के साथ यह सम्पर्क का प्रथम कीजिये कि "अस्वच्छ शौचालय" किसे कहा जायेगा. उन शौचालयों को देखिये जिनके गड्ढे ढके नहीं हैं या जिनसे मल बह कर बाहर आता है. खुले गड्ढे वाले शौचालय के छेद में टॉर्च से रोशनी करके समुदाय के कुछ सदस्यों को उसमें झांक कर देखने और जो देखा उसका वर्णन करने के लिये कहिये. पूछिये कि क्या वहां मक्खियां पैदा हो रही हैं. और यदि ऐसा है तो क्या गड्ढे को खुला रखना सुविधा है.

सच बात है खुले में शौच की जगह पर खड़े रहना, बदबू भरी हवा में सांस लेना तथा चारों ओर फैले मल के अप्रिय दृश्य को देखना. यदि लोग आपको वहां से हटा कर आगे कहीं और ले जाना चाहें तो उनके शामिल हो जाने के बावजूद वहीं पर रुकने पर बल दीजिये. समुदाय के सदस्यों में एक साथ घृणामय दृश्य और असह्य बदबू की अनुभूति तथा बाहरी व्यक्तियों के सामने उनकी व्यक्तिगत गन्दी आदत का सामने आना इतना बड़ा आघात होता है कि इससे समुदाय एकजुट होकर तत्काल कुछ करने के लिये उद्यत हो जाता है.

सुझाव

अनुप्रस्थ भ्रमण में:

- ऐसे प्रश्न पूछिये: कौन से परिवार शौच के लिये किस जगह का प्रयोग करते हैं? महिलाएं शौच के लिये कहां जाती हैं? रात को या डायरिया के प्रकोप के चलते आपातकालीन स्थिति में क्या होता है? आदि. कभी-कभी लोग यह भी कहा देते हैं कि कौन या मल किसका है.
- खुले में शौच की जगहों से बच कर मल निपटाने कारण वहां जिससे अधिक से कम सके सकिये. प्रश्न पूछते रहिये और समुदाय के सदस्यों को अपने ही मल की बदबू भरी हवा में सांस लेने दीजिये. उन्हें किसी बाहरी आदमी को यहां लेकर आने के लिये घोर शर्म का अनुभव भी करने दीजिये. इससे उनके मन में घृणा और शर्म के प्रबल भाव जागेंगे और इससे उनमें इस समस्या से निपटने के लिये तत्काल कुछ करने की प्रबल इच्छा पैदा हो जायेगी. यदि कहीं मल के ढेर नहीं दिखाई दे रहे हैं तो हो सकता है कि डायरिया फैला हो जिसके कारण मल पानी जैसा हो जाता है और मिट्टी उसे सोख लेती है या वर्षा के कारण मल पानी के साथ बह गया हो.
- मल पर मंडराती मक्खियों की ओर ध्यान आकर्षित कीजिये. दिखाइये कि किस प्रकार मुर्गियां मल पर चोंच मार कर उसे खा रही हैं. पूछिये कि कितनी बार उनके और उनके बच्चों के भोजन पर मक्खियां मंडराती हुई पाई जाती हैं और क्या वे इस प्रकार मल खाने वाली मुर्गियों को खाना चाहेंगे?
- ठोस और तरल मल की पहचान कीजिये. पूछिये कि सभी मल का आकार और स्वरूप बच्चों जैसा होता? तरल मल पानी के आवरण अधिक पाया जाता है जहां बच्चों और बड़ों दोनों में खेतायक रोगों के फैलने का अधिक खतरा होता है.

पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्स के बनौन जिले के एक गांव में अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान एक समूह ने घरों के बहुत पास ही बहुत से ठोस और तरल मल को बिखरा हुआ पाया. साथ में भ्रमण कर रहे समुदाय के एक सदस्य ने बताया कि गांव में डायरिया व्यापक रूप से फैला हुआ है जिसके कारण बच्चे और पुरुष शौच के लिये दूर स्थित जगहों पर नहीं जा पा रहे हैं और इस आपातकालीन स्थिति में घरों के पास बैठ कर ही शौच करने को विवश हो गये हैं. इससे साफ तौर पर पता चला कि गांव में आने से अधिक लोग डायरिया से पीड़ित थे.

ऊपर: इथियोपिया, मेकेले के ग्रामीण समुदाय ने गरीब, मध्यम और अमीर परिवारों की रणनीति के लिये रंगीन कार्ड का प्रयोग किया. ध्यान देने योग्य है कि गरीबी रणनीति वाले पीले कार्ड गांव की बस्ती सीमा के पास ही ज्यादा संख्या में हैं. अच्छी चाली इलाज करने लोग का सुख वही शौच के लिये जाते हैं. खेती का गरीबी तथा जिन जातियों के लोगों ने कहा कि उनके पास ही आवास का इलाका इतना गरम बनाते हैं. उन्होंने यह भी कहा कि उनके जातियों के लोग उन क्षेत्रों में बनाये जाते हैं जहां लोग सुख चलते हैं. गरीबों ने समुदाय को चेतावनी दी कि वे अपने दिन में उनके आवास के इलाके में खुले में शौच करना बन कर दें या परिवार के लिये तैयार हों

ऊपर: एथिओपिया और इरिट्रिया के अवाता के पास के सेमाटीन गांव में बच्चों के द्वारा मानचित्रीकरण अभ्यास प्रगति पर. इसमें समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की दिशा में एक विकास पुस्तक बना में विकास बच्चों ने किया और इस अभ्यास के दौरान बहुत ही सहायक पुस्तक स्वाभाविक रोल उभार कर सामने आये

ऊपर: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी तरह पूरा करने एक दिशा प्रक्रिया में बहुत से लोग मानचित्रीकरण में एक साथ काम करते हैं और अपने घरों, खुले में शौच के स्थानों को दर्शाते हैं उचित सम्बन्धित परिवारों के द्वारा प्रस्तावित मत का आयोजन करते हैं. साथ में इस गतिविधि में मानचित्रीकरण प्रगति पर

खुले में शौच की जगहों का मानचित्रीकरण

समुदाय के सदस्यों से अनुरोध कीजिये कि वे जमीन पर गांव का एक सरल मानचित्र बनायें जिसमें घर, संस्थान, शौच की जगहें, जल स्रोत और समस्याओं को दर्शाया जाये जिससे परिचर्चा शुरू करने का आधार मिल सके. इस कार्य को उनके लिये यथासम्भव सुगम बनाने का प्रयास कीजिये. इस कार्य के लिये उनसे एक उपयुक्त खुले और बड़े स्थान को चुनने के लिये कहिये. मानचित्रीकरण की प्रक्रिया में सभी समुदाय सदस्यों का ध्यान लग जाता है और वे समुदाय की स्वच्छता की स्थिति का व्यवहारिक विश्लेषण करने में जुट जाते हैं.

मानचित्रीकरण करते समय गांव के सभी भागों के लोगों को बुलाया जाना चाहिये और उनसे कहना चाहिये कि वे जमीन पर बनने वाले मानचित्र में दर्शायें कि उनके घर कहां स्थित हैं. इसके लिये वे एक पत्ती का अथवा पत्थर के टुकड़े का उपयोग कर सकते हैं. साथ ही उन्हें यह भी दर्शाना है कि उनके पास अपना शौचालय है या नहीं. खुले में शौच के स्थानों को किसी रंगीन चादर से दर्शाया जा सकता है और उन्हें रेखाओं की सहायता से उन घरों के साथ जोड़ा जा सकता है जो कि उनका शौच के लिये उपयोग करते हैं. मानचित्र में कई चीजों को प्रमुखता के साथ दर्शाया जा सकता है. लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कीजिये कि कुछ लोगों को शौच के लिये कितनी दूर जाना पड़ता है और दिन में किस समय जाना पड़ता है. क्या सुरक्षा से जुड़े कोई मुद्दे हैं? लोगों से कहिये कि वे यह दर्शायें कि किस प्रकार खुले में शौच के स्थानों से मल बह कर जलस्रोतों और आम जलस्रोतों तक पहुंच जाता है जिसके कारण जल स्रोत संदूषित हो जाते हैं.

ऊपर और बायें: इथियोपिया और संयोजकों ने महिलाएं, आवासमालीन स्थानों सहित शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करते हुए. उदाहरण, विभिन्न आदि के उपयोग के लिये निर्धारित स्थान की दर्शाए की भी प्रत्येक परिवार के पास के कार्ड पर अंकित किया गया है

नीचे: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सुगमकर्ताओं के द्वारा सब आवासमालीन शौच के स्थानों तथा खाद के स्थानों से सम्बन्धित शौच के स्थानों के निकट से पूरा गया तो गांव का मानचित्र पहले दर्शाये गई योजनाओं के बहुत आगे तक बढ़ा हो गया. सलमा (मुस्लिम महिला) ने इस प्रकार शौच से जुड़ी परिस्थितियों की नई समझ सामने आई

ऊपर बोलीविया के एण्डीज़ पहाड़ों में एक गांव में महिलाएं शौच में स्थानों का मानचित्रीकरण करती हुई, "कौन कहां शौच करता है?"

सभी बोलीविया में अलग-अलग गांव में मानचित्रीकरण करते समय खुले में शौच के स्थानों को दर्शाने के लिये उठी चाप का प्रयोग करती हुई महिलाएं

ऊपर और दायें : मानचित्र पर पीला पताका खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है, जैसे-जैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग की प्रक्रिया आगे बढ़ती है और समुदाय के द्वारा आवश्यकतानुसार शौच के स्थानों को दृष्टि किया जाता है, मानचित्र पर पीले पताका से ऐसे स्थानों का अंकन और संख्या बढ़ाई जाती है. बोलीविया के एक गांव में मानचित्र रेखांकन हुए ट्रिगरिंग समुदाय अवलोकन, मुद्दा की सहज टिप्पणियों तथा इस सब को याद करने के लिये प्रश्नावली हो यह महिलाओं पर सार्वजनिक के सामने रखिये

मानचित्रीकरण को सुगम बनाइए जिससे यह स्पष्ट हो, जानी को और प्रक्रिया में लोगों को मजा आये

कभी-कभी एक आसान मानचित्रीकरण के लिये बहुत समय की आवश्यकता हो जाती है. जब लोग अपने गांव का मानचित्र बनाने में संलग्न हो जाते हैं तो उनमें बारीकियों में उलझ जाने की प्रवृत्ति निर्माण होती है. जैसे यह हर परिवार के सदस्यों की संख्या, पुरुष, महिला, बच्चे या गलियों और उप-गलियों भी दिखाने की कोशिश करने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के ट्रिगरिंग के लिये बहुत विस्तृत मानचित्रों जैसे, सामाजिक-सांस्कृतिक पथ, जनांकिकी, अवसंरचनाओं और संसाधनों से जुड़ी सूचनाओं की आवश्यकता नहीं होती. समय प्रबन्धन के विषय में सावधि सतर्क रहना है. शुरुआत में ही आवश्यक सूचनाओं को एकत्र करने में खर्च किये गये समय के बदले पिछड़ी जगहों के निर्धारक पल में समय संकट की स्थिति आ सकती है.

मुश्किलपूर्वक समय (3 से 4 घण्टे के भीतर) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की क्रिया जगाने के उद्देश्य से खुले में शौच की जगहों के मानचित्रीकरण के लिये मैंने अनेकानेक अतिरिक्त सम्भव होने वाली विधि का प्रयोग किया है. गांव के परिवारों की संख्या के आधार पर यह प्रक्रिया आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक में पूरी की जा सकती है.

शौच सम्पन्न होने वाली विधि

- गांव के लोगों से कहिये कि वे पास आकर एक खुले स्थान के चारों ओर खड़े हो जायें (अच्छा होगा यदि वह स्थान साफ और खुला हो जिसमें कंकड़, पत्थर और घास न हो)
- अपनी दृष्टि से जो आगे आगे चलें ऐसे कुछ लोगों को आमंत्रित करके उनसे कहा जाता है कि वे तिनकों, टहनियों, रंगीन पताका इत्यादि का प्रयोग करके गांव की बाहरी हद को जमीन पर दर्शाये. एण्डीज़ पर्वतमाला में स्थित बोलीविया के गांवों में महिलाओं ने उन के गांवों (जिन्हें वे सामान्यतया साथ लेकर चलती हैं) के उनके चारों का प्रयोग चाप पर गांव की शौच दर्शाने के लिये किया था. (बायें पृष्ठ पर प्रस्तुत छायाचित्र देखें).
- किसी से इस मानचित्र के अन्दर गांव की कुछ खास चीजों को दर्शाने के लिये कहिये (जैसे स्कूल, सड़क का मुख्य चौराहा, पुल के समान इत्यादि).
- उनसे से किसी से आगे आकर सीमारेखा के अन्दर उस स्थान पर खड़े होने के लिये कहिये जो गांव के उस स्थान को दर्शाता हो जहां उस समय सब इकट्ठे हुए हैं.
- एक पुरुष या पुरुषों की पहचान कीजिये और उससे कहिये कि वह यह बताये कि उसका घर इस मानचित्र में कहां पर होगा.
- समुदाय से पूछिये कि क्या पुरुष/पुरुषों ने सही स्थान दर्शाया है. यदि सही है तो सभी से कहिये कि वे उसके लिये जोर से ताली बजायें. इस तरह सही से सभी उपस्थित लोग मानचित्र से परिचित हो जाते हैं.
- होश को निरुत्साहित बहुत खासकरके के साथ स्पष्ट कीजिये.

घ. हर परिवार से केवल एक ही सदस्य के द्वारा एक कार्ड उठाया जायेगा (कार्डों को लेने को मानचित्र के बाहर रखा जाय चाहिये) और उसके बाद यह सदस्य घर का मानचित्र के अन्दर ठीक उसी स्थान पर खड़ा हो जायेगा जहां उसका घर है.

ङ. लोगों को इस प्रक्रिया को ठीक से पूर्ण करने के लिये कुछ समय दीजिये.

च. अब उनसे कहिये कि वे अपने हाथ में लिये हुए कार्ड पर घर के मुखिया का नाम लिखें और कार्ड को अपने घर के स्थान पर रख दें (जहां वे खड़े हैं वहीं अपने पैरों के पास)

छ. उन्हें बताइये कि वे कार्ड उनके घर को दर्शाते हैं. अब उनसे कहिये कि वे अपने घर से एक रेखा उस स्थान तक खींचें जहां वे शौच करने जाते हैं. उनसे कहिये कि वे चॉक से अपने घरों और खुले में शौच के स्थान को जोड़ने वाली रेखा बना दें. लोगों को रोकें जा जायेंगी और मांगलिकों शुरू हो जायेंगे. इसे चलने दीजिये. याद दीजिये कि अब कार्ड और चॉक अपने हाथ में लोगों को नहीं हैं. सभी को मानचित्र के एक कोने में रख दीजिये और उनसे कहिये कि वे स्वयं जाकर उठा लें. लोगों को इधर उधर आने जाने के लिये प्रेमपूर्वक कहें और उन्हें सुरक्षात्मकता के साथ आगाह करते दें.

ज. पहाड़ियों के बैठे हैं सड़े पीले पताका की ओर संकेत कीजिये और उनसे कहिये कि वे इस पताका को लेकर उस स्थानों को दर्शाने जहां वे खुले में शौच करते हैं. जहां ज्यादा मल होता है वहां अधिक पताका डालें और जहां कम मल होता है वहां कम पताका डालें. इस समय खूब होगी उठापटक होगा. याद दीजिये कि पीले पताका के बैठे को आप न उठाने वालों लोगों को स्वयं पीला पताका निकालने दें. लोग जल्दी से पताका उठाने का प्रयास करते हुए निकलें गे. इस समय बच्चे कुछ ऐसे स्थानों पर भी पीला पताका पैदाकरें जिनका मल उनके अभिभावकों को भी नहीं होगा.

झ. इस काम को पूरा करने के लिये लोगों को कुछ समय दीजिये.

ञ. इसके बाद सबसे कहिये कि वे पुनः अपने घरों के स्थान पर खड़े हो जायें. उनसे पूछिये कि आवश्यकतानुसार निवृत्ति में वे शौच करने कहां जाते हैं? अर्थात् खेत में पौधों, तालाब, दालीचा से घिरा हुआ या किसी चौपाये की निवृत्ति आदि में. उनसे पीले पताका डालकर आवश्यकतानुसार शौच की जगहों को दर्शाने के लिये कहिये. फिर कुछ लोगों के पीलों को खोलें और उनके घरों के आसपास ही पीले पताका के और ढेर लग जायेंगे. हो सकता है कि लोग बताने कि आवश्यकतानुसार निवृत्तियों में वे अपने पड़ोसी के खिलाड़ी जाते हैं और पड़ोसी बता सकता है कि बताने में वह उनके घोसुं करीबने का प्रयोग करता है. होश को निरुत्साहित लोग लगा जायेंगे कि मानचित्र पीले रंग से भरता जा रहा है. आप उनसे पूछ सकते हैं कि क्या पूरा गांव मल से भरा हुआ नहीं निकलें रहा है.

ट. आप उन्हें मानचित्र की सहायता से यह भी आगाह कर सकते हैं कि प्रत्येक परिवार से कितना मल निकलता है और उस परिवार की पहचान भी कर सकते हैं जो कि गांव के वातावरण में प्रतिदिन सबसे अधिक मल फैलाने के लिये उत्तरदायी है. सभी से कहिये कि वे जोर से ताली बजा कर उस परिवार को बधाई दें.

ठ. उनसे बिना कार्डों को लेकर मानचित्र के बाहर खड़े हो जाने को कहिये. ऐसे गांव के घरों का मानचित्र तैयार हो जाता है.

विकल्प: रंगीन कार्ड जमीन पर रख दीजिये. अलग-अलग रंग के कार्ड समाज के अलग-अलग वर्गों को दर्शाने के लिये प्रयोग में लाये जा सकते हैं. सामान्यतया धनी, मध्यम वर्ग, निर्धन और कभी-कभी बहुत ही गरीब वर्गों को दर्शाया जा सकता है. लोगों से इसी हिसाब से कार्ड को उठाये, उस पर पर के मुखिया का नाम लिखाये और फिर मानचित्र में घर के स्थान पर रखने के लिये कहा जा सकता है. इससे बहुधा यह दिखाई देता है कि गरीब लोग बाहर की ओर शौच के स्थानों के पास ही रहते हैं और यह भी पता चलता है कि धनी लोग गरीबों के घरों के पास ही शौच के लिये जाते हैं.

समुदाय पर शौच जमाने की गलती. खुले पर किये ढंग से, कभी यह कीजिये. उदाहरण के लिये कार्डों तथा लेखनियों को एक स्थान पर रख कर उनसे अपने आप इन्हें उठाने को कहने के बजाय समुदाय के सदस्यों को एक-एक करके विदित करना.

सुझाव

- जमीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर भी उतारा जा सकता है जिससे यह दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय है और किनमें नहीं. इस मानचित्र का उपयोग अनुभवन के लिये किया जा सकता है. (नीचे देखें)
- एक मानचित्र बनाने के लिये आपको बहुत सी सामग्री की आवश्यकता नहीं है. समुदाय के सदस्यों को पत्तियों, बीज, तारिये, तिनकों आदि आसानी से मिल जाने वाली वस्तुओं से अलग-अलग चीजों को दर्शाने के लिये प्रेरणादित किया जा सकता है. परिणाम ठीक से रोंदिये. लोगों की सुरक्षात्मकता को प्रेरणादित कीजिये और पूरी प्रक्रिया को मनोविनोदपूर्ण बनाइये.
- यदि अलग-अलग लोगों के द्वारा विभिन्न वस्तुओं को दर्शाया जाना है तो निर्णय करने में अधिक समय न लगने दें कि प्रक्रिया निर्बाधी चली जाये.
- यदि आपके पास पीला पाउडर है जो कि खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है तो कुछ पीला पाउडर अपने हाथ पर मल लीजिये और लोगों से कहिये कि वे आप से हाथ मिलाएं, तब उनसे पूछिये कि हाथ मिलाने से उनके हाथों में क्या लग गया?
- "मानचित्र का साक्षात्कार लीजिये" इसका मतलब है प्रश्न पूछना और मानचित्र में जो कुछ दर्शाया गया है उसके प्रभाव को समझने का प्रयास करना. यह मानचित्र एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से समुदाय अपने गांव की स्वच्छता की स्थिति को बेहतर तरीके से समझ सकता है. यह मानचित्र अपने आप में एक साध्य नहीं है.

सबसे गन्दी जगहों की पहचान

मानचित्रीकरण के दौरान समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे मुहल्लेवार छोटे-छोटे समूह बनाकर खड़े हो जायें. उनसे कहिये कि अपने समूहों में परिचर्चा करके पता लगायें कि गांव का सबसे गंदा स्थान कौन सा है और दूसरे नम्बर पर गन्दा कौन सा इलाका और परिचर्चा के परिणामों को कागज के छोटे टुकड़ों पर लिख दें. इसके बाद इन टुकड़ों को इकट्ठा कर लीजिये और एक-एक करके खुले स्थान में पढ़िये. अधिकतर मामलों में आप पायेंगे कि जिस जगह को किसी एक समूह के द्वारा सबसे गन्दा बताया गया है उसी जगह को अन्य समूहों के द्वारा भी सबसे गन्दा पाया गया.

इसके बाद लोगों से कहिये कि वे लिखें कि वे कहां शौच के लिये जाते हैं. इस अभ्यास के माध्यम से, शायद पहली बार, सबसे गन्दी जगह के पास रहने वाले लोगों को भान होता है कि अन्य जगहों के लोग भी उनके इलाके में आकर शौच करते हैं और फिर उन्हीं के इलाके को सबसे अधिक गन्दा भी बनाते हैं. इस जानकारी के मिलने पर लोगों को तत्काल अजनबियों को अपने इलाके में शौच करने से रोकने के लिये कुछ कार्रवाई करने की आवश्यकता अनुभव होने लगती है. अधिकतर गांवों में देखा गया है कि इस बोध के होने पर गरीब और छोटे कहे जाने वाले लोग गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लाने में सबसे अधिक सक्रिय भूमिका अख्तियार कर लेते हैं. उन्हीं ही सबसे अधिक लाभ भी होता है क्योंकि वे डायरिया और अन्य बीमारियों पर होने वाले खर्च को बचा पाते हैं.

समुदाय के साथ खुले में शौच के स्थानों के मानचित्र का विश्लेषण, प्रति परिवार उत्पादित मल का आगणन, मल से मुंह तक संक्रमण पहुंचने के मार्गों पर परिचर्चा बहुत लिखित होते हैं. मल के एक गांव में प्रति परिवार उत्पादित मल का आगणन प्रगति पर है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अन्तर्गत राह से चुना गया एक ट्रिगरिंग के दौरान संचालित के प्रतिभागी प्रति परिवार उत्पादित मल का आगणन करते हुए. बहुधा उत्पादन मल इस प्रकार के आगणन के साथ आ जाता है

मल की मात्रा और चिकित्सा पर व्यय का आगणन

उत्पन्न किये जा रहे मल का आगणन स्वच्छता की समस्या की गंभीरता को उजागर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है. प्रति दिन प्रति व्यक्ति या प्रति परिवार कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है? परिवार अपनी ही विधियों एवं जतन करने की स्थानीय इकाइयों के अनुसार आगणन कर सकते हैं कि प्रतिदिन इस समस्या में वे कितना योगदान कर रहे हैं. सभी परिवारों के द्वारा दिये गये आंकड़ों को जोड़ने से यह पता चल जाता है कि पूरे समुदाय द्वारा कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है. दैनिक उत्पादन के आंकड़े को गुणा करके यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रति सप्ताह, प्रति माह और प्रति वर्ष समुदाय द्वारा कितना मल सृजित किया जाता है. इस प्रकार यह मात्रा टनों में आ जाती है और इसे देख कर समुदाय आश्चर्यचकित हो सकता है.

पूछिये कि कौन सा परिवार सबसे अधिक मल उत्पन्न करता है. सभी से उसी वजह कर उस परिवार को बधाई देने के लिये कहिये जो गांव को सबसे अधिक मल का उपहार देता है. इसी प्रकार से पूछें, तीसरे, चौथे आदि स्थानों पर आने वाले परिवारों की पहचान कर लीजिये और उनके योगदान की सराहना कीजिये. उस परिवार की पहचान भी कर लीजिये जो सबसे कम मल का उत्पादन करता है. उनसे पूछिये कि उनका मल इतना कम क्यों होता है? उनसे कहिये वे ठीक से खाने जिससे उनका मल भी अधिक हो सके. इस सबसे बहुत हंसी-मजाक होता है परन्तु सच्चाई पुनरावृत्त पर कर जाती है.

लोगों से पूछिये कि वे स्वास्थ्य के लिये इलाज पर कितना व्यय करते हैं. मानचित्र के चारों ओर खड़े हो जायें. वातावरण प्रबन्धक समुदाय को इस समय चुप करा देते हैं. कार्ड्स की ओर इशारा कीजिये और पूछिये कि उनके द्वारा डायरिया, पेचिश, कॉलरा आदि खुले में शौच के कारण होने वाले रोगों के इलाज पर खर्च किया जाता है. उनसे जानिये कि क्या वे मासिक या वार्षिक आगणन करना चाहेंगे और इसके बाद उनके द्वारा खर्च की बताई गई राशि को अपने कार्ड पर मार्कर से लिखने को कहें.

जैसा कि मल के आगणन में किया गया था यहां भी पूछिये कि बीमारियों के इलाज पर सबसे अधिक खर्च किस परिवार के द्वारा किया जाता है. उन्हें दिखाइये कि क्या वे खुले में शौच की जगहों के पास रहते हैं या सबसे गन्दे इलाके में रहते हैं. क्या वे गरीब हैं या अमीर? किसे सबसे ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है – अमीर, मध्यवर्गीय या गरीब को?

चित्र चार्ट को बोर्ड पर लगा कर आगणन करने के लिये कहें कि पूरे समुदाय द्वारा लोगों के इलाज पर एक माह, एक वर्ष में और दस वर्ष में कितना व्यय किया जाता है. माह, वर्ष और 10 वर्ष में उत्पन्न मल के आगणन के चार्ट के बगल में इस चार्ट को भी लगा दीजिये.

उनसे कहिये कि वे तो जानते ही बहुत धनी हैं तभी तो यह इतना पैसा खर्च कर पाते हैं. जानने का प्रयास कीजिये कि क्या आपातकालीन स्थिति में किसी गरीब परिवार के किसी सदस्य को हो गये डायरिया के इलाज के लिये उसे

पैसा उधार लेना पड़ा है? किससे और कहाँ? क्या उधार लेना और फिर उसको लौटाना आसान था? आपातकालीन इलाज के लिये और पैसा उधार लेता है और ब्याज की दर क्या रहती है? गैर-सरकारी संगठन, बिचौलिये? उन्हें खुले में शौच बन्द कराने और शौचालय बनाने के लिये कभी सुझाव सह दीजिये. आप यहां सुझाव देने और आदेश देने के लिये नहीं गये है.

मल जनित संदूषण मार्ग और और घृणा जगाना

खुले में बिखरे मल का मुँह तक पंहुचना

लोगों से पूछिये वह सारा मल कहां जाता है. जैसे लोग जब बताने लगें कि वर्षा के पानी के साथ बह जाता है या जमीन के अन्दर चला जाता है तो मल के ढेर का एक चित्र बनाकर जमीन पर रख दीजिये. इसके पास ही कार्ड और मार्कर रख दीजिये. लोगों से कहिये कि वे कार्ड उठायें और उसमें लिखें कि किन चीजों के माध्यम से और किन मार्गों से मल उनके मुंह तक पंहुचता है. उदाहरण के लिये:

- मक्खियां
- वर्षा का जल
- हवा
- पालतू जानवरों के खुर
- मुर्गियां जो मल को खाती है और जिनके पैरों और पंखों पर मल लगा रहता है
- कुत्ते जो कि मल को खाते है और जिनके पंजों तथा शरीर पर मल लगा रहता है
- मल लगी वस्तुयें (उदाहरण के लिये जानवरों को चरोंने के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुयें)
- साइकिल के टायर
- जूते
- बच्चों के खिलौने, खुराकीय इत्यादि
- हवा द्वारा उड़ाई गई प्लास्टिक की वस्तुएं
- संदूषित जल

इसके बाद पूछिये कि मल किस प्रकार मुंह तक पंहुच जाता है. उदाहरण के लिये

- हाथ, नखून
- भोजन पर मंडराती मक्खियां
- फल और सब्जियां जो कि मल पर गिर पड़ी हो या उनके सम्पर्क में आई हो और जिन्हें ठीक से धोया नहीं गया हो (जैसा चीन में होता है)
- संदूषित पानी से धोये गये बर्तन
- लोगों को चाटते हुए कुत्ते

आपको चाहिये आप किसी भी दशा में यह मार्ग समुदाय को न सुझाएं, उन्हें स्वयं परिचर्चा करने, पहचान करने और लिखने/चित्र बनाने का अवसर दें.

पानी का गिलास!

एक गिलास पीने का पानी मांगिये. जब पानी का गिलास आपके पास आ जाये तो उससे पूछिये कि क्या कोई उस गिलास से पानी को पीने के लिये तैयार है. जब कोई हां कहे तो अन्य लोगों से यही सवाल कीजिये. इस प्रकार समुदाय के सभी लोग गिलास से पानी पीने को तैयार हो जायेंगे. तब अपने सिर से एक बाल तोड़िये और उससे पूछिये कि क्या वे उसे देख सकते हैं और क्या वो जानते हैं कि यह क्या है. इसके बाद बाल को जमीन पर बिखरे मल पर इस प्रकार घुमाइये कि सभी देख सकें. अब उस बाल को गिलास के पानी में डुबाइये और पूछिये कि क्या उन्हें पानी में कुछ दिखाई दे रहा है. इसके बाद पास खड़े व्यक्तियों को वह गिलास पकड़ा कर उस पानी को पीने के लिये कहिये. (पृष्ठ 22 भी देखिये). वे तुरन्त मना कर देंगे. अब

ग्रामीण पाकिस्तान के गांवों जैसा प्रतिनिधि प्रतिनिधि के माध्यम के एक गांव में एक समुदाय के सदस्य खुले में शौच बन्द करने के लिये शपथ खाते कार्यक्रम पूर्ण सहमति देते हुए

चीनी "मल, पेशी और मक्खियां" प्रतीक, टोपेंगे, पुरुषपा प्रायोजक विलेज अंतिमार्थ, भारत केन्द्र

प्रम्बलन ग्राम। मिशिल मोनिकेरेल, भारत मोनोलिया के एक समुदायी मुखबकर्ता, मल से संदूषित पानी का गिलास एक महिला को पीने के लिये प्रस्तुत करते हुए, जो कि घृणा से अपना मुंह और नाक बन्द करती हुई दिखाई दे रही है. इस भयानक सत्य का अनावरण कि सभी व्यक्ति एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं प्रक्रिया की सफलता का आधार है. यह बहुत ही निर्णायक क्षण है जो कि ट्रिगरिंग प्रक्रिया को तेज कर देते हैं.

लोगों से पूछिये कि क्या वे उस पानी को पी सकते हैं. कोई भी उस पानी को पीने के लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि वे मना क्यों कर रहे हैं. उनका उत्तर होगा कि क्योंकि इसमें मल मिला है. इसके बाद पूछिये कि मक्खी की कितनी टांग होती है. हो सकता है कि वह सही जवाब दे दें. यदि नहीं तो उन्हें बता दीजिये कि मक्खी की 6 टांग होती हैं और वे धागा आरी की तरह लगी होती है. पूछिये कि क्या मक्खी की टांग में उससे अधिक मल लग सकता है जिसे आपके पानी में डुबाने बाल में लगा था. उत्तर होना चाहिये "हां". अब उनसे पूछिये कि जब मक्खियां उनके या उनके बच्चों के भोजन और थाली पर बैठती हैं तो क्या होता है, जहां खुले में शौच की परिपाटी है वहां मक्खियां अपने साथ क्या लाती हैं? अगर वे उनसे पूछिये कि वे अपने भोजन के साथ और क्या खा रहे हैं.

जब कोई कहता है कि वे एक दूसरे का मल खा रहे हैं तो उसे सामने लाइये और सभी को यह बात बताने के लिये कहिये

सच्चाई यह है कि गांव में सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं. जब एक बार समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा यह सार्वजनिक रूप से कह दिया जाये तो आप भी इसे बार-बार कह सकते हैं. उनके कहने से पहले ऐसा मत कहिये. यह उनके द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर उन्हीं के द्वारा कही गई बात होनी चाहिये न कि वह जो कि आप उन्हें बताने गये हैं.

उनसे कहिये कि वे आपसान करें कि उनके द्वारा कितना मल प्रतिदिन खाया जा रहा है. उनसे पूछिये कि खुले में शौच के कारण एक दूसरे के मल को खाने के लिये बाध्य है तो उन्हें कैसा लग रहा है? इस समय कोई सुझाव मत दीजिये. उन्हें इस पर मनन करने दीजिये और इसकी चार उन्हें उस समय दिखाइये जब समुदाय द्वारा विश्लेषण की प्रक्रिया पूर्ण की जा रही हो.

प्रम्बलन ग्राम

प्रम्बलन ग्राम के लिये बहुत सावधान रहिये. यह वह समय है जब पूरा समुदाय को एक साथ समझ में आ जाता है कि खुले में शौच के कारण समुदाय का प्रत्येक सदस्य किसी दूसरे सदस्य के मल का सेवन कर रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक पूरा समुदाय खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता. जब ऐसा हो जाये तो अन्य गतिविधियों को चलाये रखने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती है.

सामान्यतया इस स्थिति तक पहुंचने पर लोगों में जोश बहुत बढ़ जाता है और जोरदार बहस शुरू हो जाती है कि किस प्रकार खुले में शौच को बन्द किया जाये. उन्हें न तो बीच में टोकिये और न कोई सुझाव दीजिये. चुपचाप उनकी बहस को ध्यान से सुनिये.

कुछ सुझाव और विचार

- **एक बच्चे को उठाइये.** चारों ओर देखिये और कोई ऐसी चीज़ खा रहे बच्चे को उठाइये जिसके कारण बच्चे के मुँह पर मक्खियाँ मंडरा रही हों. लोगों से पूछिये कि यह किसका बच्चा है? इसमें बच्चे का क्या दोष है कि यह गंदगी और मल का सेवन कर रहा है? किसका दोष है कि बच्चे को इतने गंदे वातावरण में जीना पड़ रहा है? जो अभिभावक अपने बच्चों को इस दशा में देखकर परेशान नहीं करते वे कृपया आगे हाथ खड़ा करें.

- **मक्खियों से घिरे मल को ढक दीजिये.** पास पड़ा मल के ऊपर मक्खियाँ मंडराती दिखाई दें तो मल को मिट्टी से ढक दीजिये. आप देखेंगे कि मक्खियाँ वहाँ से चली जायेंगी.

- **दर्शन.** जब समुदाय के सदस्यों को समझ में आ जाता है कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं और अपनी भावनाओं को भी एक दूसरे के सामने व्यक्त कर रहे हैं तो उनके चेहरों पर घृणा और अप्रसन्नता के भाव उभर आते हैं. जब ऐसी स्थिति आये तो ठीक-ठाक चलने वाली महिलाओं से कहिये कि वे दर्शन में आपका चेहरा देखें. उनसे से बहुत सी तो दर्शन देखने से ही मना कर देंगी.

- **मल, भोजन और मक्खियाँ.** मई 2006 में हिमाचल प्रदेश, भारत के सोलन जिले के एक गाँव में खुले में शौच के इलाकों के अनुभव भ्रमण के दौरान श्रीमती नीना गुप्ता, एक सहायी महिला प्रतिभागी, द्वारा एक चप्पल के टुकड़े पर ताजा मानव मल उठा कर सार्वजनिक के स्थान के पास आयोजित बैठक में लाया गया. अनुभव भ्रमण में उनके साथ चल रहे लोग सन्न रह गये और उनके पीछे-पीछे बैठक के स्थान तक चले आये. महिला ने एक थाली में चावल परोसा और उसे मल से सने चप्पल के टुकड़े के बगल में रख दिया. देखते ही देखते मक्खियाँ इकट्ठा हो गईं और चावल तथा मल के बीच आवागमन करने लगीं. लोग उसे घृणापूर्वक देखते रह गये और दो महिलाओं ने तो उल्टी भी कर दी. एक गली का कुत्ता मल की बू से खिंच हुआ वहाँ चला आया. इसके बाद किसी व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं रह गई. लोगों ने समझ लिया और स्वीकार कर लिया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं. इस घटना के बाद से लोगों में प्रेरणा जगाने के लिये इस पुस्तिका का प्रयोग लिखना किया जाने लगा.

- **हँसी, मजाक कीजिये.** उदाहरण के लिये

- प्रक्रिया के दौरान कई बार सब महिलायें, गोले हाथ जोड़ कर खड़े रहिये. उनसे अनुरोध कीजिये कि वे आपको शौचालय की सामग्री बेचने वाला या सरकारी आदमी या किसी गैर-सरकारी संगठन से जुड़ा एजेंट न समझें जो उन्हें मनाने आया हो.... "हम यहाँ आपसे खुले में शौच बन्द कराने के लिये कहने या शौचालय का निर्माण कराने के लिये अनुरोध करने नहीं आये हैं. जैसा आप पीढ़ियों से करते आ रहे हैं उसी प्रकार खुले में शौच करते रहने के लिये आप स्वतंत्र हैं."

- यदि इस पर लोग आपसे पूछें कि फिर आप यहाँ किस लिये आये हैं तो कहिये "हम यहाँ सीखने आये हैं." कुछ अध्यापकों के बारे कहिये "हमने बहुत कुछ सीखा..."और जो सीखा उसे संक्षेप में बताइये. किसान मल निकालता है. सीढ़ियों के इलाज पर किसान खर्च होता है. होक्स महामारी अध्ययन के बाद निकाले निष्कर्षों को अभिनीकृत करना बहुत आवश्यक है. (उदाहरण के लिये एक दिन, एक माह, एक वर्ष में खुले में विसर्जित किये गये मल की मात्रा, गाँव से वर्ष भर में बाहर जाने वाला पैसा इत्यादि). इन सूचनाओं को यहाँ इकट्ठा लोगों के सामने एक बड़े चार्ट पर लिख देना चाहिये. बहुत अच्छा होगा यदि समुदाय से ही किसी व्यक्ति के द्वारा इन्हें लिखा गया हो और सबको जोर से पढ़ कर सुनाया गया हो. पूछिये कि यह विश्लेषण किसने किया और निष्कर्ष किसके द्वारा निकाले गये.

- मल, भोजन और मक्खियों के बारे जब मक्खियाँ भोजन और मल के बीच मंडरा रही हैं तब कहिये "पिता मल कीजिये. मक्खियाँ दो प्रकार की होती हैं. जो मक्खियाँ मानव मल पर बैठने वाली होती हैं वह भोजन और पानी के पास भी नहीं फटकतीं". हो सकता है कि आपकी इस बात को लोग स्वीकार न करें.

- जब लोगों को ठीक से समझ में आ जाये कि वे क्या कर रहे हैं तो कहिये "अच्छा, जाने दीजिये. एक दूसरे के मल का सेवन करते रहिये."

- कोई हास्यपूर्ण कहानी सुनाइये. हिन्दी की एक कथा इसका अच्छा उदाहरण है. एक सुअर को पुस्तों पर उसके द्वारा किये गये अच्छे कार्यों के कारण स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया जहाँ उसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन दिया जाने लगा. परन्तु उसने अनुरोध किया कि उसे उसका मनपसन्द भोजन अर्थात् मल परोसा जाये. बेचारा सुअर बहुत दुखी हुआ क्योंकि स्वर्ग में मल तो उपलब्ध था ही नहीं.

- अपने विचारों, अनुभवों, हास्य कथाओं को विकसित कीजिये और सुधारिये.

अगर प्रश्न पूछे जाने तो उन्हें बताइये कि चूँकि आप बाहर से आये हैं आपको स्थानीय गतिविधियों का बहुत कम ज्ञान है और स्थानीय परिस्थितियों में क्या करना चाहिये इस विषय में समुदाय के लोग ही अधिक समझते और जानते हैं.

- उन्हें बताइये कि निर्णय करने के लिये वे स्वतंत्र हैं. वे चाहें तो खुले में शौच करते रह सकते हैं. यह उन्हीं का निर्णय होगा.
- उन्हें बताइये कि आप समझ गये हैं कि स्थानीय समुदाय के सदस्य किस प्रकार खुले में शौच करते हैं. लोग एक दूसरे के मल का सेवन करते हैं. जबकि उन्हें मल से छुए तक के बारे और विकट परिणामों की पूरी जानकारी है.
- उनसे कहिये कि यह न समझा लें कि आप उनसे खुले में शौच को बन्द करने के लिये कहने आये हैं या किसी प्रकार के शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये आये हैं. यदि वे चाहें तो खुले में शौच की परिपाटी को जारी रख सकते हैं.
- हो सकता है कि इस समय उनसे से कोई कहे कि वे इसे और आगे जारी नहीं रखना चाहते हैं. पूछिये क्यों? सामान्य रूप से उत्तर होगा कि शौचालय बहुत मँहगे होते हैं. पूछिये कि सामान्य शौचालय की लागत कितनी होनी चाहिये और कम-से-कम लागत क्या होनी चाहिये? सामान्य उत्तर होगा है रु. 5000/- से रु. 10000/- या अधिक. अगर सबसे पर कम से कम लागत शौचालयों के बारे में बताये और यह भी कि रु. 150/- से रु. 200/- में भी शौचालय बन सकता है. अधिकतर लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे. उनसे कहिये कि यदि वे चाहता में जानना चाहते हैं तो हाथ खड़े करें.
- यदि वे सहमति जताते हैं तो चार्ट पेपर पर ब्लैकबोर्ड बना कर पीछे पर टाँग दीजिये और चित्र की सहायता से समझाइ कीजिये. सरल एक गड्ढे वाले शौचालय का चित्र चार्ट पेपर पर जल्दी से बनाइये. (चाहे तो बनाया चित्र अपने साथ घर से लाइये चार्ट नहीं उनके सामने बनाइये). पूछिये कि इस प्रकार के शौचालय की लागत कितनी होगी और इसे बनाने में कितने कठिनाई आयेगी? उन्हें यह भी बता दीजिये कि यह डिजाइन आपके द्वारा विकसित नहीं किया गया है बल्कि दुनिया के गरीबतम देश के एक गाँव के गरीब लोगों के द्वारा ही विकसित किया गया है. अब समुदाय के द्वारा किस प्रकार समस्यापूर्वक स्वच्छता की स्थिति प्राप्त की गई है यह भी उन्हें बता सकते हैं और इसी प्रकार के अन्य अनुभवों का उल्लेख भी कर सकते हैं. (देखें दिये गये चित्र को नीचे)
- उनसे इसकी लागत पूछिये. हो सकता है कि वे आपके द्वारा बताई गई लागत से भी कम लागत बताये और कहें कि ऐसे शौचालय बनायेंगे. जो लोग ऐसा करने के लिये कहें उनसे हाथ खड़ा करने को कहें तथा उनके नाम लिख लें.

शौचालय के किसी मॉडल विशेष को ही बनाने के लिये मत कहिये. याद रखिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का लक्ष्य सबसे अच्छे और टिकाऊ शौचालय के मॉडल को समुदाय पर लादना नहीं है, वरन् स्थानीय लोग को इस प्रकार जागरूक हैं कि स्थानीय स्तर पर ही लोग अपने विवेक से खुले में शौच के विकल्प ढूँढें.

चिन्ता मत कीजिये यदि कोई भी स्थानीय स्तर पर किसी भी प्रकार की तकनीक कार्यवाई करने के विषय में उनी सम्बन्ध बात नहीं करता है. उन्हें धन्यवाद दीजिये और उन्हें बताइये कि अपनी रिपोर्ट में आप उनके गाँव को ऐसे गाँव के रूप में दर्ज करेंगे कि जहाँ लोग खुले में शौच करते रहना और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना चाहते हैं. (आगे भोगी विचारधारा देखिये). सामान्यतया आपने वैचारिक स्तर पर प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है.

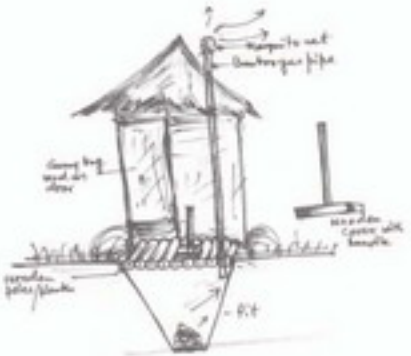

Drawing of a simple pit latrine

प्रतिक्रियाओं के सारांश रणनीति

उपर्युक्त चित्र में कुछ सामान्य प्रतिक्रियाएं दर्शायी गई है. परन्तु समुदायों की प्रतिक्रियाएं बहुत ही अलग-अलग प्रकार की होती है. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के अनुरूप आप अपनी कार्यविधि और योजना को अनुकूल कर सकते है. अगर की शैक्षता की दृष्टि से इन्हें चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है.

सुझाव

विभिन्न स्थितियों के अनुसार आपकी कार्यवाई में भी परिवर्तन हो सकता है. कुछ सुझाव निम्नवत् है.

ट्रिगरिंग के बाद उसी दिन संचालित की जाने वाली गतिविधियां

कुछ काम तो दो या अधिक स्थितियों में किये जाते है और कुछ और किये जा सकने वाले कामों का उल्लेख ट्रिगरिंग के बाद वाले भाग में किया गया है. जब स्वाभाविक नेता "समुदाय के पटवारिता" के रूप में किसी अन्य गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाने में संलग्न होंगे तो समय की जाने वाली गतिविधियां सामान्यतया सुगमकर्ताओं के द्वारा संचालित की जाने वाली गतिविधियों से भिन्न हो सकती है. कई मामलों में पाया गया है कि स्वाभाविक नेता समुदाय के पटवारिता के रूप में खुले में शौच की आदत वाले गांव में आकर एक सप्ताह या उस समय तक के लिये वहां ठहर जाते है जब तक गांव खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता या इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर लेता. कुछ उल्लेखनीय उदाहरण भी सामने आये है. समुदाय के पटवारिता के रूप में गांव में आये स्वाभाविक नेता - महिला/पुरुष - के द्वारा जब पाया गया कि गांव में मल के विशाल ढेर इकट्ठा है तो उन्होंने घोषणा कर दी कि वे तब तक भोजन नहीं करेंगे जब तक वह अपने लिये एक गड्ढे वाला सात शौचालय बना कर सभी ग्रामवासियों को नहीं दिखा देते. ऐसे मामलों में बहुत कुछ संभव ही हो सकता है क्योंकि स्वाभाविक नेता भी उसी गांव में ठहर कर ग्रामवासियों के साथ ही निवास करते है.

पेट्रोल पम्प में माचिस

जब सम्पूर्ण समुदाय पूरी तरह से प्रेरित हो जाता है और खुले में शौच को तत्काल समाप्त करने के लिये स्थानीय स्तर पर एकजुट होकर कार्ययोजना क्रियान्वयन के लिये तैयार हो जाता है तब यह स्थिति होती है.

- कम लागत और सामान्य लागत शौचालयों के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा कीजिये और यह भी जानकारी दीजिये कि निर्माण के लिये सामग्री कहां से और कैसे प्राप्त की जा सकती है.
- पूर्ण होने की तिथि सहित कार्ययोजना बनाने तथा समुदायिक समितियों के गठन की प्रक्रिया को सुगम बनाइये.
- समुदाय के उन सदस्यों की सूची तैयार करने में समुदाय की सहायता कीजिये जो शीघ्र ही शौचालय बनाने के इच्छुक है. शौचालय कब तक बन जायेंगे? तिथि और सप्ताह भी सूची में अंकित करने को कहें.
- अनुसूची भ्रमण के लिये आपकी सहमति से एक तिथि निर्धारित करवाइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ करवाइये. (जमीन पर बनाये गये मानचित्र को एक बड़े चार्ट पेपर पर उतारने की आवश्यकता होगी. इसे ऐसे स्थान पर टांग दीजिये कि सभी लोग इसे देख सकें.)
- समुदाय के किसी सदस्य की पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वाले के साथ सम्पर्क साध सके. पूरक बीजारों में लोगों से ही सुझाव मांगिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और सुगमे प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संतुलन का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को सही सोद्द दीजिये.
- लगन होम चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभियान पहल और गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

आशावनक लौ

जब समुदाय के अधिकांश सदस्य सहमत हो गये हों परन्तु फिर भी कामों लोग संशय और अनिर्णय की स्थिति में बने हों.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और विदा होने के लिये अनुमति मांगिये.
- यदि समुदाय ने से कोई व्यक्ति स्थानीय स्तर पर पहल प्रारम्भ करने के लिये तत्पर हो तो उसे सामने लाइये और प्रोत्साहित कीजिये कि वह समुदाय को बताये कि वह शौचालय निर्माण की दिशा में किस तरह पहल करने का विचार कर रहा है.
- सभी से पूछिये कि क्या वे जानना चाहेंगे कि अन्य समुदायों के द्वारा किस प्रकार कम लागत शौचालयों का निर्माण किया गया है.
- यदि सभी हाथ उठा कर सहमति व्यक्त करें तो एक चित्र वाले सात शौचालय का चित्र बनवाकर उन्हें बताइये कि किस प्रकार स्थानीय सामग्री का उपयोग करके कम लागत का शौचालय बनाया जा सकता है.
- समुदायिक कार्य योजना तैयार करने की प्रक्रिया को सुगम बनाइये. कार्ययोजना में प्रति सप्ताह बनाये जाने वाले प्रस्तावित शौचालयों की संख्या कार्ययोजना के पूर्ण होने की तिथि भी अंकित करवाइये.
- अनुसूची भ्रमण के लिये सबकी सहमति से तिथियों का निर्धारण करवाइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ करवाइये.
- समुदाय के किसी सदस्य की पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वालों के साथ सम्पर्क साध सके. पूरक बीजारों में लोगों से ही सुझाव मांगिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और सुगमे प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संतुलन का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को सही सोद्द दीजिये.
- लगन होम चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभियान पहल और गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

बिखरी हुई चिंगारियां

जब मिल कर काम करने के संदर्भ में समुदाय के अधिकांश सदस्य संशय और अनिर्णय की स्थिति में हों और केवल कुछ ही लोगों के द्वारा ही आगे बढ़ने और समन्वय से निपटने के लिये कुछ कर गुजरने का निर्णय लिया गया हो.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और उनसे कहिये कि वे अपनी शौचालयों की सामग्री का विक्रेता या बढ़ाया ऐसे वाले न समझें. उनसे कहिये कि वे सीटों से चली आ रही परिपाटी को जारी रखें.
- उनसे कहिये कि वे हाथ खड़ा करके बताये कि उनमें से कितने लोग अगले दिन सुबह खुले में शौच के लिये जायेंगे.
- उन्हें बताइये कि आप इस जानकारी के साथ गांव को छोड़ कर जा रहे है कि यह ऐसा गांव है जहां के लोगों ने एक सुबह का मल खुले रखने का निर्णय लिया है.
- जिन्होंने यह बताने के लिये हाथ खड़ा किया है कि वे खुले में शौच करते रहेंगे उनका एक समूह बनाकर उनकी पसंदीदा सीमांत की अनुमति मांगिये. अगर कोई आवश्यक होता है तो परिवर्तन और अपनी मान्यता पूरा करने के लिये समय दीजिये. सामान्यतया थोड़ी देर बाद ही उन लोगों से हाथ खड़े करने के लिये कहा जा सकता है जो कि खुले में शौच

खुले में शौच के कारण सबसे ज्यादा नुकसान बिरोंतियों का होता है. यदि प्रक्रिया को उनके लिये ठीक से सुलभ बनाया जाये तो वे खुले में शौच को बन्द करने के लिये कुछ करीबाई करती हैं. रोकथिये के एक गांव में बिरोंतियों समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के दौरान गतिविधियों में शोभन, बोलनेरा की मीरा मधुरी मधुरियों ने कहा कि क्योंकि उनके पास शौचालय हो गये थे इसलिये अब उन्हें मधुर पहुंचने में देरी नहीं होती. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से पहले उन्हें प्रतिदिन के आवश्यक उस समय का इंतजार करना पड़ता था जब कोई दूसरा आवश्यक न हो. महाजनों की तरह वे सूरज उगने से पहले नहीं जा पाती थीं.

बन कारा चाहते हैं. उनके प्रभाव से अन्य लोग भी हाथ उठा रहे हैं. उनसे जिन पूछिये कि क्या आप उन सभी का फोटो खींच सकते हैं जिन्होंने खुले में शौच बन करने के पक्ष में सहमति के रूप में हाथ खड़े किये हैं.

- इस समय किन्हीं ऐसे व्यक्तियों की पहचान कीजिये जिन्होंने खुले में शौच को बन करने के लिये स्वतंत्र रूप पर पहल करने की इच्छा जताई हो. उन्हें सबके सामने लाइये और सभी से कहिये कि उन्हें सराहने के लिये ताली बजायें.
- दूसरी बार ट्रिगरिंग के लिये यहां आने की तारीख समुदाय की सहमति से तय कीजिये जिससे वे लोग भी भाग ले सकें जो इस बार किसी कारण उपस्थित नहीं हो सके थे.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को यहीं छोड़ दीजिये.

भीगी दिवालाई

जहां पूरा समुदाय ही खुले में शौच बन करने के लिये कुछ भी करने को तैयार नहीं है.

- उन्हें धन्यवाद दीजिये और यहीं से प्रस्थान कीजिये. उन पर कोई दबाव मत डालिये.
- उन्हें बताइये कि आपको आशायें है कि समुदाय के सदस्य यह जानने के बाद भी कि खुले में शौच की परिपाटी के कारण वे सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं, वे खुले में शौच की परिपाटी को चालाये रखते जा रहे हैं.
- अन्दाज कीजिये कि क्या उनके उनकी फोटो लेने के लिये अनुमति मांगना ठीक होगा.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को यहीं छोड़ दीजिये.

- यहां से जाने से ठीक पहले उनसे पूछिये कि क्या वे पास के गांव का भ्रमण करना चाहेंगे जहां समुदाय ने अपने ही बलबूते पर खुले में शौच की परिपाटी को इतिहास की चीज बना दिया है.
- अन्त में, उनसे साथ चायपान करते हुए, आप उन्हें सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त लिख डालने वाली भावनात्मकपूर्ण कथा सुना सकते हैं यदि ऐसी कोई कथा आपके पास हो.

संदूषण के लिये परीक्षण

चाहे समुदाय की जो भी प्रतिक्रिया रही हो हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को यहीं छोड़ दीजिये. यह बाजार में आसानी से मिल जाती है. भारत के कुछ भागों में यह एकबारीक नाम से मिल जाती है और इसकी कीमत लगभग 50 सेंट (यू.एस डॉलर) के बराबर होती है. अलग-अलग देशों में ये भिन्न-भिन्न नामों से मिलती है. इसकी उपलब्धता के विषय में जानकारी जल परीक्षण प्रयोगशालाओं या रसायन विक्रेताओं से मिल सकती है. ट्रिगरिंग के अन्त में समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे इन शीशियों में पीने के पानी के स्रोतों से लिये गये पानी को भर दें - शीशियों पर अंकित निशानों का पालन करते हुए. इसके बाद इन्हें सावधान ठीक से बन कर दें और कागज पर पानी भरने के समय को अंकित करते हुए उसे चिपकाने वाले टेप की सहायता से शीशी पर चिपका दें. उन्हें बताइये कि इन शीशियों को सूरज की धूप से दूर रखना है और कमरे के सामान्य तापक्रम पर - 25-35 डिग्री सेंटीग्रेड, 24 से 48 घण्टे तक रखना है. ठंडी जगहों में इन्हें कपड़े में लपेट कर रखना चाहिये. यदि पानी पीने योग्य नहीं है तो यह काला हो जायेगा जिससे यह पता चलेगा कि उसमें मानवजनित संदूषण है. समुदाय इन शीशियों को अपने पास रख सकता है. इसीलाल के बाद इन शीशियों को तोड़ कर गड्ढों में दबा दिया जाना चाहिये.

समुदाय की कार्य योजना का निर्माण (ट्रिगरिंग के दिन)

नियोजन की प्रक्रिया में सामाजिक सकारात्मक कार्य योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये. गतिविधियों में निम्नांकित को सम्मिलित किया जा सकता है:

- एक विशाल चार्ट को टांगिये और जो लोग सबसे पहले पहल करने के लिये इच्छुक थे उन्हें आगे आने के लिये कहिये.
- उनके सामने आ जाने पर उनका स्वागत जोर से ताली बजा कर कीजिये और कहिये कि वे स्वच्छ भविष्य के लिये समुदाय का नेतृत्व करने वाले नेता हैं.
- उनके जीवन स्तर के विषय में जानकारी कीजिये और उनकी सराहना कीजिये विशेषकर यदि वे गरीब हैं.
- उपस्थित लोगों के सामने उन्हें खड़ा रहने दीजिये.

- जो लोग तात्कालिक सहायता करने के इच्छुक हैं उन्हें भी आगे कुछ रोकिये और उनका भी जोरदार ढंग से स्वागत कीजिये.
- जो लोग इस प्रकार समुदाय के वातावरण को बदलने जा रहे हैं उनकी एक समूह फोटो खींचिये.

समुदाय की सहायता कीजिये जिससे समिति का गठन हो सके. समिति के सदस्यों के नाम लिख लीजिये.

उनसे पूछिये कि गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त करने में कितना समय लगेगा. यदि वे कहते हैं 2-3 माह. तो उनसे पूछिये कि क्या उन्हें 60-90 दिनों तक एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना स्वीकार है. उनका उत्तर हो सकता है कि वे एक दूसरे के शौचालय का उपयोग करेंगे और गड्ढे खोदेंगे तथा मल को मिट्टी से ढक देंगे. ऐसा वे तत्काल करना शुरू कर देंगे.

इस प्रक्रिया के दौरान 2-4 स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जिनमें नेतृत्व क्षमता की अच्छी सम्भावना है.

यदि अनुभवों को बांटने के लिये अनुभवी प्रशिक्षण कार्यशाला प्रस्तावित है तो इसकी सूचना समुदाय को दीजिये और यह भी बताइये कि इसके लिये उन्हें क्या तैयारियां करनी हैं - जमीन पर बनाये गये मानचित्र को चार्ट पेपर पर उतारना, समुदाय के उन सदस्यों के नाम सूची में अंकित करना जो तात्कालिक कार्यवाई करने के लिये उत्सुक हैं, स्थानीय सामग्री का उपयोग करके बनाये जा सकने वाले कम लागत शौचालय के उनके द्वारा ही बनाये गये डिजाइन का खाका, ट्रिगरिंग के बाद से की गई प्रगति का विवरण. कार्यशाला में भाग लेने के लिये महिलाओं, युवाओं एवं बच्चों और स्वाभाविक नेताओं को आमंत्रित कीजिये.

यहां से जाने से पहले स्वाभाविक नेताओं से उन घरों का पूर्वभ्रमण करने के लिये कहिये जो कि खुले में शौच के विरोध में बच्चों के द्वारा लगाये जाते हैं. बच्चों के द्वारा की जाने वाली गतिविधियों को दुरुस्त शुरू कराइये. जब बाहर से आये लोग यहां से जाने लगें तो बच्चे नारे लगाते हुए जुलूस बनाकर कुछ दूर तक उनके साथ जायें.

लोगों को पास-पड़ोस के समुदायों द्वारा किये जा रहे कार्यों के विषय में बताइये. यदि यह उस क्षेत्र का पहला ही गांव हो तो उन्हें बताइये कि उन्हें किसका मान सम्मान मिलेगा और यदि वे पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये तो उन्हें उत्सव मनाने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो जायेगा.

किसी भी प्रकार के लाभ के विषय में कोई वादा न कीजिये और न ही आश्वासन ही दीजिये.

स्कूलों में ट्रिगरिंग और छात्रों की गतिविधियां

भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत जनपद के स्कूलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम की शुरुआत सितम्बर 2007 में हुई. छात्र जागरूक दलों का गठन किया गया. पहले सात सप्ताहों में पूर्णकालिक मुनमकार्जाओं के दलों द्वारा लगभग 125 स्कूलों में यह कार्यक्रम शुरू किया गया - जिले के कुल स्कूलों के आधे से अधिक स्कूलों में. छात्रों के द्वारा मानचित्रीकरण तथा अन्य गतिविधियों को सम्पन्न किया गया. जब वे अनुभव भवन पर गये तो गांव के बयाक उत्सुकतावश उनके पीछे हो लिये. कभी-कभी उपस्थित मल की मात्रा का आगमन खुले में शौच के स्थान पर ही खड़े रह कर किया गया जिससे मल की ढेरियों को देखकर मल की मात्रा का अनुमान लगाया गया. पीर पूया और गर्व से भरे छात्र सक्रियतावादी बन गये. जो बहुत ही तत्पर थे उन्हें संगठित करके स्वाभाविक नेताओं का समूह गठित कर दिया गया और बतरणों को रोलियां, सीटियां और लिखित सामग्री दी गई. उन्हें सामाजिक और पर्यावरणीय उत्पादक कार्य के लिये पुरस्कृत भी किया जाता है जिसके लिये उन्हें अंक मिलेंगे. शिक्षकों को भी सहयोग के लिये उनके साथ संलग्न कर दिया गया है.

एक 12 वर्षीय बालक अन्य छात्रों का नेतृत्व कर रहा था. इनका कार्य था खुले में शौच करते दिखाई देने वाले लोगों को रोक कर जोर-जोर से सीटी बजाना. इस बालक पर तीन बार आक्रमण हुआ परन्तु उसके अभिभावक भी उसे सीटी बजाने से रोक नहीं सके. उसने कहा, "मैं कभी सीटी बजाना बन्द करूं, मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूँ." जब उस पर तीसरी बार आक्रमण हुआ तो गांव में एक विशेष बैठक बुलाई गई और निर्णय किया गया कि बहुत हुआ. खुले में शौच से मुक्त होने के लिये त्वरित कार्यवाई शुरू हो गई. एक रैली आयोजित की गई जिसमें सबसे अधिक सक्रिय छात्रों में से 300 छात्रों को आमंत्रित किया गया. लगभग 50 छात्रों ने भाषण दिया. सहायक जिला आयुक्त के द्वारा सभी को उपहार स्वरूप घड़ियां भेंट की गई.

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में संलग्न सरकारी परियोजना अधिकारी ने कहा, "यह आश्चर्यजनक है, छात्र इतने जोश से भरे हैं. वे तो महान स्वाभाविक नेता सिद्ध हो रहे हैं. वैसे तो कभी नहीं सोचा था कि छात्र इतने उत्साही होंगे. कभी-कभी हम सोचते हैं कि यह विचार पहले हमारे मन में क्यों नहीं आया."

स्रोत: राजेश कौशिक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, पानीपत, हरियाणा, भारत

अनुश्रवण के लिये सामुदायिक मानचित्रीकरण

जब ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप समुदाय पेट्रोल पम्प में मानचित्र या आवश्यक तौर की स्थिति में आ जाये तो वहां बड़े चार्ट पेपर, मार्कर पेन और टेप छोड़ दीजिये जिससे जमीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर उतारा जा सके, नई गठित समिति के नाम लिखे जा सकें, खुले में शौच से मुक्त होने के लिये बनाई गई कार्ययोजना अंकित की जा सके, उन सभी लोगों के नाम लिखे जा सकें जिन्होंने तत्काल या अगले सप्ताह गड्ढे खोदने का निर्णय लिया है. समुदाय के सदस्यों को जमीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर उतारने के लिये उत्साहित कीजिये. यह कई कागजों में बनेगा और उन्हें टेप से जोड़ा जायेगा जिससे सभी उसे साफ-साफ देख सकें. मानचित्र को सार्वजनिक स्थान पर लगाया जाये और इस प्रकार सुरक्षित किया जाये कि वर्षा आदि से यह खराब न होने पाये. इसमें प्रत्येक परिवार की स्वच्छता की स्थिति को दर्शाया जायेगा या अद्यतन किया जायेगा जिससे प्रगति का पता चलता रहे.

स्कूलों में ट्रिगरिंग

स्कूलों में ट्रिगरिंग का अनुभव भारत और जाम्बिया में प्राप्त हुआ है. हो सकता है अन्य स्थानों पर भी ऐसे ही प्रयास किये गये हों. सभी विधियों का प्रयोग किया जा सकता है. स्कूली बच्चे बहुत जल्दी नई बातें सीखते हैं और बहुधा सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय माध्यम या अभिकर्ता भी बन जाते हैं. अवधारणा के प्रसार के प्रारम्भिक चरण में ही स्कूलों में ट्रिगरिंग होती है. यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये मुख्य और प्रमुख कारक हो सकता है जिसकी सामुदायिक ट्रिगरिंग के समानान्तर एवं अनुपूरक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है. स्कूलों में ट्रिगरिंग से अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थियों में एक सक्रिय मैत्री हो सकती है. छात्र जल्दी सीखते हैं और सक्रिय हो जाते हैं. नई पीढ़ी के रूप में छात्रों को इससे जोड़ना और उन्हें स्वयं स्वच्छता की स्थिति का मूल्यांकन तथा विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करना खुले में शौच से मुक्ति की ओर बढ़ते समाज को स्वच्छ बने रहने के लिये एक मजबूत आधार प्रदान करेगा. यह भविष्य के लिये एक बड़ी और महत्वपूर्ण लहर सिद्ध हो सकती है.

स्कूल में ट्रिगरिंग और फिर गांवों में छात्र, अभिभावक और शिक्षकों के साथ ट्रिगरिंग

जाम्बिया के सोन्ग जिले में अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के कार्यियों के लिये एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें यूनिसेफ के सहयोगी मोजाटर और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका के संसाधन अधिकारियों एवं सरकारी स्टाफ के द्वारा भी प्रशिक्षण किया गया. एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ट्रिगरिंग शुरू की गई जिसमें मानचित्रीकरण तथा अन्य साधनों का उपयोग किया गया. तीन गांवों के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा इसमें प्रशिक्षण किया गया. छात्रों को पता चला कि खुले में शौच की आदत उनके तीनों गांवों में व्यापक रूप से फैली हुई है. सभी तीनों गांवों में ट्रिगरिंग एक साथ चलाये गई. छात्र, घर और बस्ती के अन्तर मिट गये. बच्चे, अभिभावक और शिक्षक सभी एक साथ अभियान में जुट गये. बहुत पूया, हंसी-मजाक और उत्तल-पुट के बाद बच्चों ने एक जुलूस बना लिया और नारे लगाने लगे. अगले दिन प्रधानाध्यापक ने एक बैठक में घोषणा की कि उनका स्कूल जाम्बिया का पहला स्कूल होगा जहां के हर छात्र के घर में शौचालय होगा और हर छात्र गर्व से खुले में शौच से मुक्त गांव से स्कूल आयेगा.

अध्याय 4

ट्रिगरिंग के बाद मार्गदर्शिका

ट्रिगरिंग वह समय है जब या तो समुदाय के सदस्य एकजुट होकर खुले में शौच बन्द करने के लिये कार्रवाई करने को तत्पर हो जाते हैं या संतोष, शिथक, असहमति या अनिर्णय की स्थिति में होते हैं. ट्रिगरिंग के बाद का चरण बहुत महत्वपूर्ण होता है. समुदायिक गतिविधी बहुत तेजी से बदल सकती है और समुदाय को विभिन्न दिशाओं की ओर ले जा सकती है. संवेदनशील चरण प्रोत्साहन और सहयोग निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं.

सुगमकर्ता तथा अन्य लोग जो कि समुदाय की सहायता करने की भूमिका का निर्वहन करने में संलग्न होते हैं उन्हें जो कुछ हो रहा होता है उसके प्रति बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता होती है. ठीक समय पर उपयुक्त हस्तक्षेप से बहुत अन्तर पड़ सकता है.

जब प्रशिक्षण कार्यशाला के अंग के रूप में संचालित ट्रिगरिंग के बाद कोई अनुवर्ती कार्रवाई नहीं होती तो कोई परिणाम भी सामने नहीं आता. बिना अनुवर्ती कार्रवाई के ट्रिगरिंग करना खराब बात है. इसलिये पहले से योजना बना लेनी चाहिये और उन व्यक्तियों एवं संस्थाओं के साथ सम्पर्क स्थापित कर लेना चाहिये जिनके द्वारा अनुवर्ती कार्रवाई की जानी प्रस्तावित है.

स्वास्थ्यकर्मी, बोलीविया के एमाजोन वर्षा क्षेत्र में एक इमारीन महिला
मिट्टी, ईंट और पत्थर से बने अपने घर जिसमें सौचालय को पर्दे से
छिपाती हुई. ज्ञानांकन: नेथन साइमन, यूनिसेफ, बोलीविया

दूरन्त बार की अनुवर्ती गतिविधियां और प्रोत्साहन

जहाँ लोगों की प्रतिक्रिया सकारात्मक और प्रबल इच्छा की द्योतक रही है वहाँ सबसे पहले अनुवर्ती गतिविधियों के लिये जाइये और जहाँ प्रतिक्रिया सबसे मन्द रही है वहाँ सबसे बाद में जाइये. जिन समुदायों की स्थिति "पेट्रोल पम्प में माचिस" या "आशाजनक तो" की रिपोर्ट दी है वहाँ अनुवर्ती ध्यान के लिये कुछ ही दिन बाद की तिथियां तय कीजिये. समय और प्रयोजन भी निश्चित कर लीजिये. जहाँ समुदाय "बिखरी हुई चिंगारियों" की स्थिति में पाया गया था वहां एक या दो सप्ताह के बाद जाइये. "थोड़ी दिलचस्पी" वाली स्थिति रखने वाले गांव के अनुवर्ती ध्यान के लिये सामान्यता कोई तिथि निर्धारित मत कीजिये जब तक कि कई लोग या समूह और अधिक जानने की इच्छा व्यक्त न करें. ऐसी स्थिति होने पर पास के किसी ऐसे गांव के ध्यान की योजना बनाइये जहां खुले में शौच से मुक्ति प्राप्त कर ली गई है या जो सम्पूर्ण स्वच्छता की दिशा में सक्रिय रूप से प्रगति के पथ पर है.

शौच ही पुनः ध्यान का एक प्रयोजन हो सकता है डाइट्रोजन सल्फाइड शीशियों के द्वारा जल संदूषण परीक्षण के परिणाम को जानना. इस अवसर पर समुदाय के साथ उन जल स्रोतों की पहचान भी कर लीजिये जिनका जल सबसे अधिक संदूषित पाया गया (शीशियां जिनमें जल स्रोत से पानी के नमूने लिये गये थे और जो शौच ही काला हो गया).

प्रोत्साहन का एक तरीका यह भी हो सकता है कि प्रोत्साहन फोन पर स्वाभाविक वेलाओं में बात कीजिये यदि उनके पास ऐसे फोन हों.

जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सकारात्मक कार्य शुरू हो गया हो वहां लोगों की सहायता कीजिये और उनके कार्य को सावधानी से सुदृढ़ बनाइये. उनके जोश को यह बता कर बढ़ा दीजिये कि यदि वे 100 प्रतिशत स्वच्छता प्राप्त कर लेते हैं तथा खुले में शौच बन्द कर देते हैं तो समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की अनुवर्ती गतिविधि के रूप में ट्रायंगिलेशन से समुदाय के समक्ष सार्वजनिक प्रगति का अनुमान के लिये करते थे. ट्रिगरिंग के बाद पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे सप्ताहों में परिणामों द्वारा निर्मित तथा उपयोग में लाये गये परिणामों को आमने-सामने रख के सारांश गया.

पास के गांवों से तथा बाहर से कई लोग उनके गांव को देखने के लिये आयेंगे. यदि वह क्षेत्र में ऐसा करने वाला पहला गांव है तो वह सहभोल, जिले और राज्य में प्रसिद्ध हो जायेगा.

निर्धारित तिथियों को बार दिलाइये

कोई ऐसा काम न कीजिये जिससे समुदाय की आप पर निर्भरता बढ़े. समुदाय के द्वारा स्वयं के निर्णयों के आधार पर किये जा रहे कार्यों में उनकी सहायता कीजिये. जितनी जल्दी हो सके वहां से विदा हो जाइये.

सफाई कार्यकर्ता और अन्य बाहर लोगों को गांवों का ध्यान करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये जिससे उनकी जिम्मेदारी बढ़ सके और जो कुछ किया जा रहा है उसे देखकर उसकी सराहना कर सकें. इससे समुदाय की भावनाओं को बल मिलेगा और उनकी कार्यवाई को मजबूती मिलेगी.

ट्रिगरिंग के दौरान किसी के द्वारा सबसे पहले शौचालय बनाने की पहल की गई होगी. इसे देखने के लिये सम्पर्क कीजिये. एक समय निर्धारित कराइये जब इस शौचालय को अन्य लोगों को भी दिखाया जा सके. सबसे पहले शौचालय बनाने वाले व्यक्ति को ही समुदाय के अन्य सदस्यों को इसे देखने के लिये आमंत्रित करने दीजिये. गांव के नेताओं को आमंत्रित कीजिये और आप स्वयं भी उपस्थित रहिये. यदि तकनीकी कार्मिक वहाँ उपस्थित हों तो उनके द्वारा न तो टोका जाना चाहिये और न भाषण ही दिया जाना चाहिये वरन् पुनरावृत्त देखा जाना चाहिये. प्रगति का यह समय विकासों पर परिचर्चा कराने के लिये भी बहुत उपयुक्त हो सकता है.

समुदाय के कार्य और अनुवर्ती गतिविधि

पहले दिन किये गये कार्य को आधार बनाते हुए निम्नांकित गतिविधियों के लिये प्रोत्साहित कीजिये तथा कार्य को सुदृढ़ बनाइये:

- स्वच्छता कार्य समिति का गठन और गतिविधियां (गांव के सभी भागों और समूहों से प्रतिनिधियों को सम्मिलित करके)
- मानचित्र का प्रयोग करके स्वच्छता की स्थिति और प्रगति दर्शाना
- खुले में शौच बन्द करने के लिये परिवारों के द्वारा बनाई गई योजनाओं का विकास. सुलभता से सम्बन्धित परिवार मेहतर शौचालय बना लेते हैं जिसका उपयोग वे मिल कर कर लेते हैं.
- गड्ढे खोदना और उनका उपयोग लघु अवधि शौचालयों के रूप में करना.

- अनेकवृत्त सम्पन्न परिवारों से यत्न लेना कि वे अतिशीघ्र ही शौचालयों का निर्माण करायेंगे.
- शौचालय निर्माण की सामग्री की आपूर्ति की व्यवस्था का पता लगाना. कई काम किये जा सकते हैं. सबसे पहले तो यह पता लगाना बहुत आवश्यक होगा कि गांव में ही क्या सामग्री उपलब्ध है. कम्बोडिया के कम्पोंग प्रोंग के एक गांव में (सेम पेन्ह के पास) एक मिस्त्री ने, जो कि वर्षों के जल संचय के लिये जार बनाता था, बैठने का चबूतरा, पैर और रिंग बनाना शुरू कर दिया क्योंकि गांव के खुले में शौच से मुक्त हो जाने के बाद से स्वच्छता की सामग्री की मांग बहुत बढ़ गई थी. स्थानीय रूप से बनी गई यह स्वच्छता की सामग्री बहुत ही अभिनव डिजाइन की थी और बाजार में उपलब्ध सामग्री से बहुत भिन्न भी थी.
- खुले में शौच से मुक्त गांवों के इस सपने में दिलचस्पी रखने वाले सदस्यों को ऐसे गांवों में भ्रमण के लिये ले जाया जा सकता है जहाँ स्वच्छता से जुड़ी सामग्री का निर्माण करने की अभिनव पहल की गई हो.

सम्पन्न लोगों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे सामने आयें और गरीब लोगों की सहायता करें जिससे खुले में शौच को पूर्ण रूप से बन्द करने के लिये कोई रास्ता निकाल सकें. उन्हें बताइये कि उन्हें भी इसका लाभ होगा क्योंकि वे भी उसी वातावरण में जी रहे हैं. सम्पन्न लोग जमीन दे सकते हैं, लकड़ी और बांस निःशुल्क दे सकते हैं या थोड़े समय के लिये गरीब लोगों को अपने शौचालयों का प्रयोग करने की अनुमति दे सकते हैं. इस प्रकार के उदार लोगों की पहचान कीजिये उन्हें एकत्र जनसमूह के सामने लाइये और उनके द्वारा प्रस्तावित सहायता की सार्वजनिक रूप से घोषणा कीजिये. इस प्रकार की घोषणाएं बाकी अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित करती हैं और वे भी आगे आ कर सहायता करते हैं. चूंकि खुले में शौच मुक्त होने से पूरे समुदाय को लाभ होता है इसलिये इस आधार पर सभी को परस्पर एक दूसरे की सहायता करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.

यह जरूरी है कि स्वाभाविक वेलाओं की पहचान की जाये और उन्हें कार्यवेलाओं के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व उठाने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. स्वाभाविक वेला ही यह सुनिश्चित करेंगे कि लोगों के व्यवहार में आया परिवर्तन बना रहे.

हमेशा याद रखिये कि आप यहां खुले में शौच को बन्द करने की दिशा में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल के लिये प्रेरणा जगाने के लिये गये हैं. आपका काम इसे स्वयं करना नहीं वरन् लोगों को प्रेरित करना है जिससे उनके व्यवहार में स्थायी परिवर्तन आ सकें.

ट्रिगरिंग के बाद गांवों के इस मॉडल को परिचय सहायता पुस्तिका, जिसे बनाया उदयिका, दीनाजपुर जिला, बांग्लादेश के स्थानीय समुदायों के द्वारा बोका बांग्लादेश के "जिलेला जन जिलेला" या "इस इलाके जिले" कार्यक्रम के अन्तर्गत खुले में शौच से मुक्त होने के उत्सव के दौरान प्रस्तुतियों के लिये बनाया गया. प्रत्येक कार्ड एक पूरे तथा उसकी स्वच्छता की स्थिति को दर्शाता है. आयताकार की पुस्तिकाएं और उदयिकाएं में 2000 से अधिक लोगों के द्वारा उत्सव और प्रस्तुतियों का आनन्द लिया गया

ट्रिगरिंग के बाद सतर्क रहिये

जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता समुदाय में एकजुट होकर सामूहिक कार्यवाई करने की प्रेरणा जगा देती है वहाँ खुले में शौच की पहचानों में तीव्रता से कमी होने लगती है और खुले में शौच की परिपाटी शीघ्र ही पूरी तरह समाप्त हो सकती है. कुछ ही दिनों, सप्ताह या महीनों में खुले में शौच से सामूहिकतः मुक्ति की स्थिति प्राप्त हो सकती है. कितना समय लगेगा यह समुदाय की स्थिति और आकार पर निर्भर होता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के परिणामों को दीर्घकालीन बनाने के लिये अनुवर्ती गतिविधियां और भ्रमण महत्वपूर्ण हैं. इसका महत्व इसलिये भी है क्योंकि शौचालयों और आदतों में सुधार होने में काफी समय लगता है.

सकारात्मक परिवर्तनों के लिये सजग रहिये

- ऐसे लोग जिनके पास शौचालय है और वे अन्य लोगों को भी शौचालय बनाने के लिये मदद चाहते हैं.
- लोग जो तुरन्त कार्यवाई करने लगते हैं.
- सम्पन्न लोग जो कि गरीबों की सहायता करने के लिये तैयार हैं.
- औपचारिक या अनौपचारिक नेता जिनके द्वारा बैठकें आयोजित की जाती हैं (जैसे धार्मिक नेता)
- लोग जिनके पास स्वच्छता की सामग्री है परन्तु उसका उपयोग नहीं किया गया था और अब उसे लगाकर उपयोग करने की सूचनाएं दी जा रही हैं.
- प्रक्रिया के दौरान उभर कर सामने आये स्वाभाविक नेता.
- प्रबल स्थानीय गुट के साथ विकसित किये गये शौचालयों के नये मॉडल और डिजाइन.
- सामुदायिक पुरस्कार, अनुभवों, दण्ड और प्रशंसा की उभर कर सामने आई अभिनव प्रणालियाँ और व्यवस्थाएं.

समुदाय को प्रोत्साहित तथा सहयोग करते समय संवेदनशील रहना आवश्यक है. किसी भी दशा में कर्मचारी मत बनिये और मजबूत अपने हाथ में लेने का प्रयास मत कीजिये. किसी भी प्रकार सकारात्मक मत डालिये जिससे उनके मनोबल और जोश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो और उन्होंने स्वयं यह सब किया है ऐसा उनका बोध घटने न पाये. याद रखिये कि यह उनकी प्रक्रिया है, आपकी नहीं.

बाईं: बोलांगीर के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के द्वारा बनाई गई जो इस इलाके को विभिन्न प्रकार के शौचालयों की मार्फत्रिक में दर्शाता था, इन चार्टों को भी शीघ्र किया गया जिन्होंने पुराने में या चल में पुराने में शौचालय नहीं बनाये, इससे पुराने की बीच में एक प्रतियोगिता शुरू हो गई

अगर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग से प्रस्तावित प्रतियोगिता में एक समुदाय के द्वारा प्रगति के अनुभवन के लिये मार्फत्रिक का प्रयोग

नकारात्मक बातों के लिये सतर्क रहिये

- पूर्व में शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था से जुड़े नेता जो कि समुदाय को अपनी स्वयं की सहायता नहीं करने देना चाहते।
- राजनीतिक नेता और अफसर फैलाने वाले जो कि प्रचार कर सकते हैं कि आर्थिक सहायता की शीघ्र घोषणा होने वाली है।
- आर्थिक सहायता कार्यक्रमों से जुड़े अन्य संगठन जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते हैं या लोगों का ध्यान हटाते हैं।
- तकनीकी या अन्य बातों के आधार पर संदेह व्यक्त करने वाले बाहरी लोग।
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कार्यकर्ता को यह महसूस होना कि उनका महत्व घट रहा है और उन्हें इस बात की आशंका भी हो सकती है कि भविष्य में उन्हें हटा दिया जायेगा।

इन सभी को प्रभावहीन करने के लिये:

- अपनी बात बातचीत रखने के लिये स्थानीय नेताओं को प्रोत्साहित कीजिये।
- लोगों से पूछिये कि क्या किस्त वर्षों में प्रदान की जा रही आर्थिक सहायता से अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए।
- उन्हें स्पष्ट कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एक प्रक्रिया है और तकनीकी तथा अन्य समस्याओं का निराकरण यथासमय किया जा सकता है, उदाहरण के लिये स्वच्छता की सीढ़ी चढ़ते हुए।
- तकनीकी या किसी अन्य प्रकार के व्यक्त किये गये संदेहों की वैधता की पूरी पड़ताल कीजिये।
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कार्यकर्ता को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ बढ़ाइये और उन्हें प्रक्रिया का हिस्सा बनाइये।
- जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति जगाई गई है उनके साथ बैठक कीजिये जिससे अनुभवों, चेतावनियों और किये गये कार्यों की जानकारी हो सके।

जब कई समुदायों में एक साथ ट्रिगरिंग की गई हो (जैसा कि बहुधा सुलभकर्ताओं के प्रशिक्षण के दौरान होता है) उनमें ट्रिगरिंग के बाद समाहित बैठक आयोजित कीजिये, स्थानीय नेताओं से पूछिये कि ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बाद क्या

अगर जिला निर्माण के अलावे चार्ट के समुदाय के सदस्य साइन बोर्ड लिखते हुए दिख पर घोषणा अंकित है कि उनका गांव सम्पूर्णतया खुले में शौच से मुक्त हो गया है

कार्रवाई हुई, समुदाय के द्वारा क्या निर्णय लिये गये, काम जो पहले ही पूरे किये जा चुके हैं, उनकी कार्यकलापों, क्या है, और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्ति की प्रस्तावित तिथि क्या है. जो अधिक जोशीले हैं वे "बिखरी हुई पिंडारियों" और "भौंगी दिशाओं" की स्थितियों वाले समुदायों को प्रोत्साहित कर सकते हैं, चाहे वे कहां हों.

शुरुआत में समुदाय के सदस्यों के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर जो निर्णय लिये गये और प्रतिबद्धता व्यक्त की गई उनके बोर्डों बना लेना बाद में अन्य लोगों को प्रेरित करने के लिये बहुत मददगार सिद्ध हो सकता है. कम लागत शौचालय के निर्माण की बोर्डों चित्रण बनाने से लोगों को स्पष्ट हो सकता है कि वे क्या कर सकते हैं.

सहभागी अनुभवन और संकेतक

जमीन पर बनाये गये मार्गचित्र को जब कागज पर उतारा जाता है तो उसमें दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय हैं और किनमें नहीं. बैठक की कार्यवाही जारी पर इस मार्गचित्र को लगाने से, जहां सभी इसे देख सकें, लोगों को उनके द्वारा कार्रवाई करने के लिये दिये गये वचनों को याद दिलाने में मदद मिल सकती है. जैसे-जैसे लोगों को शौचालय उपलब्ध होने लगते हैं (अपने या किसी और के) और लोग खुले में शौच करना बन्द करने लगते हैं तो अवसर स्थिति को दर्शाने के लिये समय-समय पर मार्गचित्र में भी संशोधन किया जा सकता है. यह काम नियमित रूप से स्थानीय नेताओं के द्वारा किया जा सकता है. कुछ लोगों के द्वारा कार्यान्वयन के अलग-अलग सप्ताहों के लिये तथा पुराने के शौचालयों के उपयोग के लिये भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग किया गया है. इस प्रकार यह मार्गचित्र अनुभवन का एक साधन बन जाता है और समुदाय के सदस्यों में शौचालय निर्माण के लिये एक प्रतियोगिता पैदा कर देता है. यह मार्गचित्र उस समय तक जीवन रहना चाहिये जब तक

बाईं: पुडुचेरी और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह शौचालय का मॉडल जिसे अन्नामलाई, महाराष्ट्र, भारत के एक स्थानीय नेता और सामुदायिक स्वास्थ्यकर्मी द्वारा अधिकतम स्वच्छ के रूप में विकसित किया गया. स्थानीय नेता अपने द्वारा विकसित इस सुलभ शौचालय को खुले में पड़ा कर इस काम अपने साथ ले जाता है. यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विषय में लोगों को बताने का एक भी अवसर नहीं खोता तथा अपने साथ मॉडल का विज्ञापन भी देता है. स्मरण कीजिये कि किस प्रकार गांधी जी ने चरखे की छोटी डिब्बी, लकड़ी, खुले गांधी जी चरखे, भारतीय मॉल, मिट्टी और भारतीय की डिब्बी का प्रयोग इस मॉडल को बनाने में किया गया है.

सभी परिवारों को शौचालय का उपयोग करते हुए नहीं दर्शाया दिया जाता और गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त घोषित नहीं कर दिया जाता.

समुदाय के सदस्यों और स्थानीय नेताओं से पूछिये कि वे प्रगति का अनुभवन करने के लिये और किन संकेतकों का प्रयोग करना चाहेंगे. उन्हें उनके द्वारा सोचे गये संकेतकों का उपयोग करने तथा उन्हें सार्वजनिक करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.

प्रक्रिया और प्रगति का अनुभवन

प्रक्रिया और प्रगति को दर्शाने के लिये निम्नांकित संकेतकों पर ध्यान दीजिये:

- महिलाओं, पुरुषों, युवाओं और अन्य वर्गों से ऊपर कर सामने आये स्थानीय नेताओं की संख्या
- संयुक्त रूप से शौचालयों का निर्माण कर रहे परिवार
- पड़ोसियों, सम्बन्धियों या पारम्परिक या अन्य समूहों द्वारा एक पूरे के शौचालयों का उपयोग किया जाना
- नये समूहों का अस्तित्व में आना
- अच्छी खासी हालत वाले लोगों का निर्बल वर्ग के लोगों की सहायता करने के लिये आगे आना
- पारम्परिक सामुदायिक सहकारिता समूहों का फिर से सक्रिय हो जाना (जैसा जाना में गंजेरा रोपेरा और ढोलपोंगिया में देखें)
- स्वयंसेवियों, पारम्परिक राहगीरों और अन्य लोगों का सक्रिय हो जाना
- नये नारे, गीत और कविताएं
- बाजारों में स्वच्छता सामग्री की बिक्री में वृद्धि
- शौचालयों के विभिन्न मॉडलों का सामने आना
- शौचालयों के निर्माण के लिये गैर-पारम्परिक सामग्री का उपयोग
- खुले में शौच पर समुदाय द्वारा रगड़ रोने की व्यवस्था का विकास
- कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों का पूरे समुदाय द्वारा एकजुट हो कर सहायता प्रदान करना
- स्वच्छता की सामग्री को उपहार स्वरूप देना (उदाहरण के लिये जब विवाहित दम्पतियों को)
- डायरिया आदि बीमारियों में कमी तथा इनकी दरों के विकास में कमी
- स्थानीय नेताओं पर खर्च में कमी और प्रोत्साहन विकल्पों की आवश्यकता में कमी

सम्पन्न स्वाभाविक नेता

ट्रिगिंग की प्रक्रिया से ही स्वाभाविक नेता ऊपर का सामने आने लगते हैं. महिला, पुरुष, बुढ़ा, बच्चेबुद्ध, घ/तथा विशेष भूमिका निभाने वाले लोग जैसे धाई, गांव के मुखिया या अन्य कोई भी स्वाभाविक नेता हो सकते हैं. निर्माण, अभिनव पहल, अनुकरण, सामुदायिक मानकों एवं नियमों के निर्माण और कार्यान्वयन, निर्माण तथा आदतों में बदलाव को, समाज के अन्दर और बाहर भी, बढ़ावा देने की प्रक्रियाओं में स्वाभाविक नेता सक्रिय रहते हैं. सभी चरणों में उनकी भूमिका निर्णायक होती है. स्वाभाविक नेताओं की विशेषता खोज करना, उनकी सराहना और उन्हें प्रोत्साहित करना हर ग्रुप की गतिविधियों का महत्वपूर्ण भाग होना चाहिये. स्वाभाविक नेताओं को एकत्रित समूह को सम्बोधित करने का अवसर प्रदान करना चाहिये. इण्डोनेशिया में स्वाभाविक नेताओं को विशेष रूप से सम्मानित करने के लिये हैट और टी-शर्ट प्रदान किये गये हैं. उन्हें बैठकों में आमंत्रित कीजिये. अन्य स्थानों पर आयोजित ट्रिगिंग प्रक्रिया के दौरान उन्हें वार्ताकार और सुगमकर्ता के रूप में योगदान करने के लिये बुलाइये. उनमें से चयनित लोगों को सुगमकर्ता और प्रशिक्षक के रूप में अभियान से जोड़िये. इन कार्यों के माध्यम से उनका सम्मान कीजिये और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाइये.

महिला स्वाभाविक नेताओं की खोज में रहिये, उनका उत्साहवर्द्धन और सहयोग कीजिये

शौचालय निर्माण के मामले में तो महिला स्वाभाविक नेता पुरुष स्वाभाविक नेताओं की अपेक्षा कम ही सामने आती हैं परन्तु वे शौचालयों के रखरखाव, उनके प्रयोग के मानकों के निर्माण और आरोग्यपूर्ण स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को सम्बोधित करने रखने के मामले में अधिक सक्रिय और उत्तरदायी होती हैं. परिणामस्वरूप बच्चा, सामग्री उधार देने, ऋण चुकाने, और पारस्परिक आदान-प्रदान के अभिनव तरीके सामने आ सकते हैं. वास्तव में जैसे ही शौचालय बन कर तैयार हो जाते हैं महिलाएं इसकी व्यवस्था अपने हाथ में ले लेती हैं. वे शौचालयों का उपयोग सफाई के साथ करने के लिये बच्चों को प्रशिक्षित भी करती हैं.

धर्म और धार्मिक नेताओं की भूमिका का सम्मान कीजिये

खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की दिशा में प्रगति की गति रोकने के लिये धार्मिक नेताओं की भूमिका बहुत प्रभावी और सार्थक सिद्ध होती है. गिरजाघरों, पैगोडाओं, मस्जिदों के परिसरों को अनुक्रम भ्रमण में सम्मिलित किया जा सकता है या स्थानीय समुदाय के परामर्श से इन्हें वार्तालाप में शामिल जा सकता है. ऐसा करने से समुदाय को प्रार्थना-पूजा के स्थानों की पवित्र और वातावरण को रोकने में मदद मिलती है और यह पता चलता है कि धार्मिक नेता भी एक गन्दे वातावरण में जीने को विवश है. क्या यह लोगों को स्वीकार होगा कि उनके धार्मिक गुरु और पूज्य लोग भी उनके मल को खुले में खाना हो, या यह कि लोग प्रार्थना-पूजा के लिये उन कपड़ों में जाने जिनका महिलाओं के द्वारा मल साफ किया गया है या मुर्गियों के द्वारा मल साफ किया गया हो जब कपड़े सुखाने के लिये धूप में डाले गये हों? इस प्रकार की बातों पर परिचर्चा बहुधा धार्मिक नेताओं को भी कुछ करने के लिये अभिप्रेरित कर देती है.

इण्डोनेशिया में अबाता के पास एसएसएनडीआर में एक ट्रिगिंग अभ्यास के दौरान अनुक्रम भ्रमण रात को एक चर्च के पास पाया में मानव मल का एक ढेर मिला. जबकि कुछ लोग इसे तुरन्त मिट्टी में ढकने का प्रयास कर रहे थे कि

बायें: सबसे पहले सामने आने स्वाभाविक नेता. (बायें) गांव मनिल जोन राज और (दायें) गांव संतुए पामान, सीनेखेड़ा, बामबाना, राजस्थानी, बोगनोरेत, लेखक के साथ. दोनों ही राजस्थानी और आजमगढ़ के जिलों में सम्पूर्ण स्वच्छता में अपने योगदान के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सामुदायिक पत्रकारिता के रूप में बहुत ही सम्मिलित हो गये.

बायें: बुढ़ा महिला स्वाभाविक नेता जिन्हें बोगनोरेत में सम्बोधित पुस्तिका और प्रार्थना में बहुत अच्छी तरह याद याद है. पाकबाग जिले की बुढ़ा महिला स्वाभाविक नेता, प्रार्थनाएं: एसएनडीआर, बोगनोरेत
ऊपर और नीचे बोगनोरेत के राजस्थानी जिले की महिला स्वाभाविक नेता

जिससे लोग इसे न देख ले बहुत से लोगों ने इसे देख लिया था और वे चिन्ता यह थी कि उनके धार्मिक स्थान को भी खुले में शौच करने वालों ने नहीं छोड़ा. अनुक्रम भ्रमण में साथ चल रही कई महिलाएं तो बहुत ही दुखी हो गईं और रोने लग गईं. इसका परिणाम यह हुआ कि प्रक्रिया तीव्र गति से होने लगी और प्रेरणा की निरन्तरता जानने का क्षण जल्दी ही पास आ गया.

बोगनोरेत के कई गांवों में इमामों के द्वारा मस्जिद के लाउडस्पीकर का उपयोग करते हुए नियमित रूप से लोगों से खुले में शौच बन्द करने अनुरोध किया जाता था. इसलाम और पवित्र कुरान का हवाला देते हुए वे लोगों को स्वच्छता की आवश्यकता और प्रार्थना के समय स्वच्छ कपड़े पहनने के महत्व को स्पष्ट करते थे.

इण्डोनेशिया के राजिनी सुबाया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान से आच्छादित गांवों में साप्ताहिक कुरान पाठ प्रतियोगिताओं के दौरान खुले में शौच बन्द करने और शौच के बाद तथा भोजन से पहले साबुन से हाथ धोने से जुड़े मुद्दों पर परिचर्चा की जाती थी. इन परिचर्चाओं के कारण गांवों ने कम समय में ही खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया.

कई समुदायों ने सूर्य के लिये उपलब्ध राशि का उल्लेखनीय भाग गिरजाघरों, मस्जिदों, पैगोडाओं, मन्दिरों और अन्य धार्मिक मुद्दिशाओं के निर्माण और रखरखाव पर खर्च किया जाता है. समुदाय के सदस्यों से विभिन्न रूपों में काफी बड़ी धनराशि नियमित रूप से इकट्ठा की जाती है. यह सामाजिक एकजुटता और सहकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण है. यदि ट्रिगिंग ठीक से की जाये तो अलौकिक रूप से इस

धार्मिक प्रणालियों का प्रभाव कर रहे लोग आगे आ जायेंगे और समुदाय के द्वारा एकजुट होकर कार्रवाई करने के प्रयास को बल प्रदान करेंगे तथा गरीबों की सहायता करेंगे जिससे खुले में शौच से शीघ्र मुक्ति प्राप्त हो सके.

समुदाय के निर्धन और निर्धन वर्ग की सहायता हेतु आगे आने वालों का उत्साह बढ़ाइये

प्रायः समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी और प्रभावी ट्रिगिंग के फलस्वरूप समुदाय के सम्पन्न लोग गरीबों की सहायता और सहयोग के लिये तैयार हो जाते हैं. यह सहायता कई रूपों में हो सकती है. इसमें अपनी जमीन की सीमान्त पर शौचालय निर्माण की अनुमति देना, कुछ बांस, लकड़ी के तख्ते, या शौचालय के पैन खरीदकर देना या उन्हें बिना ब्याज के ऋण उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित हो सकता है.

समुदाय में उभरने वाले दलितों को पहचानने और उन्हें सहारा देने के लिये सतर्क और तत्पर रहिये. ऐसे लोगों की पहचान करने में समुदाय को मदद कीजिये जो दुर्बल, गरीब, भूमिहीन अथवा ऐसे लोग जो अन्य कारणों से अपने शौचालय नहीं बना सकते, की मदद करने को स्वेच्छा से तैयार हों. इस प्रकार के असहाय लोगों में बूढ़े, विधवा, एकाकी माताएँ, विकलांग, गंभीर रोगों से ग्रसित लोग या अन्य सम्मिलित हो सकते हैं. एकत्र समुदाय समूह से पूछिये कि वे ऐसे लोगों की समस्याओं का हल किस प्रकार करेंगे. कोई सुझाव मत दीजिये. जिस समुदायों ने सम्पूर्ण स्वच्छता को ठीक से समझ लिया है वहाँ इस प्रकार की समस्याओं के समाधानों की अपेक्षा की जा सकती है. आपका काम है दुर्बल और निर्धन लोगों तथा उनकी मदद करने को तैयार बेहतर जीवन स्तर वाले लोगों के बीच एक सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित कराने में सहायक होना. यह सहायता किसी भी रूप में हो सकती है. गड्ढे खोदने और शौचालय निर्माण के लिये श्रम के रूप में या/और सामग्री, धन या ऋण उपलब्ध कराने के रूप में.

खुला खुले में शौच बन्द करने लिये गरीब लोगों में जागरूकता और भावना सहज ही समृद्ध लोगों को उनकी मदद करने के लिये अभिप्रेरित कर देते हैं.

अभियान में बच्चों को सम्मिलित कीजिये

हर ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान बहुत से बच्चे इकट्ठा होते हैं और प्रक्रिया को आनन्द के साथ देखते हैं. कुछ सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे बच्चों को वहाँ से दूर ले जायें जहाँ वयस्कों के द्वारा मानचित्रीकरण किया जा रहा है और बच्चों से दूसरी जगह पर अलग से मानचित्रीकरण करायें. इस काम में ही वे खुले में शौच बन्द करने का विचार समझ सकते हैं. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे उपयुक्त नारे विकसित करें जिन्हें वे गाँव में एक जुलूस बनाकर जोर से लगाते हुए निकाल सकते हैं. वयस्कों को उत्साहित कीजिये वे आकर बच्चों के द्वारा बनाये गये मानचित्र को देखें और बच्चों की प्रतिज्ञाओं को सुनें. यह ट्रिगरिंग के बाद खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्ति पाने तक तथा अन्य गाँवों से भ्रमण पर आये लोगों के समक्ष भी चलता रह सकता है.

- स्कूल और शिक्षक साथी के साथ मिल कर बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं. बच्चों से स्कूलों में पूछा गया कि क्या उन्हें शौचालय उपलब्ध है और क्या वह उसका उपयोग करते हैं. हाथ खड़ा करके बताये. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सीखे गये कुछ गीत बच्चे गा भी रहे हैं. स्कूलों में स्थानान्तर स्वच्छता व्यवहार सिखाया भी जाता है और सुदृढ़ भी किया जाता है.

सभी स्थानीय भाषाओं और समुदायिक भाषाभिव्यक्तियों की सीमा प्रदर्शित करने और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर करने की अपनी ही विशेषज्ञ शैली होती है. मोहम्मद शाहिद उल्लाह, स्थानीय नेता, हैदराबाद मुस्लिम, मिदनापुर जिला, बंगलादेश में एक गाँव में ट्रिगरिंग करते हुए. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रचार और विस्तार की गति इस बात पर निर्भर करती है कि सरकार तथा गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा स्थानीय नेताओं की क्षमता पर विश्वास भरोसा किया जाता है और उनका प्रोत्साहन किस प्रकार किया जाता है तथा उन्हें किस प्रकार का सहयोग दिया जाता है.

बायें समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रत्येक ट्रिगरिंग में बच्चों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है. जब शौच से ट्रिगरिंग की जाती है तो अभियानकर्ता और वयस्क बच्चों के द्वारा किये गये विश्लेषण से इकट्ठा हो गई बातें सीखते हैं. संचालित के एक गाँव में बच्चे उन प्रतिज्ञाओं को लिखते हुए जिनमें पीछे में स्कूल जाते समय शौच करते हैं.

अपना कोलंबिया के एमडीएम फाउंडेशन के एक गाँव में जहाँ सभी तरह खुले में शौचालय निर्माण सामग्री आपूर्ति का निश्चयपूर्ण कार्यक्रम चलाया गया, खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग बच्चों के लिये की जा रही थी. द्वितीयक पहुँ अभियानकर्ता अपने ही बच्चों को खुले में शौच बन्द करने के लिये समझाते हुए पेशकर आश्चर्यचकित और अभिप्रेरित हो गये. उनके विचार एकत्रित करा गये. चारों में 'आवश्यक सी' 'पेड़ोंत पास में आना' में बताए गई जिसके लिये बच्चे ही उत्तरदायी सिद्ध हुए.

बच्चे परिवर्तन का शक्तिशाली माध्यम हैं

उत्तर पश्चिमी बांग्लादेश के जनपदों में बच्चों को "विश्वू वाहिनी" (विश्वू सेना) के नाम से जाना जाता था. उन्हें सीटियाँ दे दी गई थीं और उनका काम था खुले में शौच करने वालों की खोज में रहना. एक युवक ने बताया कि खुले में शौच से मुक्त होने के लिये चलाये जा रहे अभियान के दौरान उसने कम-से-कम 40 बार सीटियाँ बजाईं. कुछ मामलों में तो बच्चे "गू-झण्डा" लेकर जाते थे. इन झण्डों पर खुले में शौच करने वाले का नाम लिख कर उसी स्थान पर लगा दिया जाता था जहाँ उसके द्वारा शौच की गई थी. इसी प्रकार पश्चिमी सुन्दरा के सिंदुर्दुग जिले में बच्चे गड़बड़ी करने वालों की खोज में रहते थे, परन्तु इस मामले में, सांगीतमय संस्कृति होने के कारण, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के गीत शौचों व्यक्ति को सतर्क करके गाते थे.

कोन्ना के होया के में बच्चों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. उन्होंने अपनी कार्ययोजना बनाई और उसे बड़ों के सामने प्रस्तुत किया.

ऊपर: इलाके कोलोंबिया में लगातुला के पास एक गांव में बच्चे खुले में शौच की जगहों के जगीन पर बने सुंदर मानचित्र के सामने खड़े हैं और उस संदूषण के मार्गों का चित्र प्रस्तुत करते हुए

मार्गों संदूषण संबंधित सम्पूर्ण स्वच्छता की ऐतिहास में बच्चों की भूमिका बहुत अहम होती है. इथियोपिया के एलाएलाबेडा के गांव में मानचित्र के विश्लेषण के निष्कर्षों को विश्लेषण करता हुआ दल

नीचे: इस नक्शीदार और चमन के एक गांव में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चों का जुलूस

बच्चों के अभियान की गतिविधियां, पूर्वी जावा

पूर्वी जावा के लुमाजंग जिले के पुर्वोरेजा गांव के बच्चों ने गांव को खुले में शौच से मुक्त बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. गांव के चार प्राथमिक और एक माध्यमिक स्कूल के छात्र निम्नांकित गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे:

- खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस उस समय तक नियमित रूप से निकालते रहे जब तक गांव पूरी तरह से खुले में शौच से मुक्त नहीं हो गया
- गन्दे क्षेत्रों और खुले में शौच की जगहों का पता लगाने के लिये अलग-अलग जगहों और घर पड़ोस में अनुसन्धान भ्रमण
- शौचालयों के प्रकार और स्वच्छता से जुड़ी आदतों से सम्बन्धित सूचनाओं को घर-घर जाकर एकत्र करने के लिये सर्वेक्षण. प्रत्येक छात्र को इस परिवारों से सूचनाएं एकत्र करके रिपोर्ट करने का काम सौंपा गया था.
- जल स्रोतों आदि की जाँच, उदाहरण के लिये पीने के पानी के भण्डारण के लिये इस्तेमाल में लाये जा रहे बर्तनों के प्रकार तथा पीने के पानी के बड़े बर्तनों में मच्छरों के लार्वा तथा अन्य संदूषण की उपस्थिति की जाँच.

स्वच्छता सम्बन्धी निर्वाण सामग्री की उपलब्धता सुगम बनाना (आगे विस्तार शीर्षक भी देखिये)

सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे स्थानीय बाजारों से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित करने में समुदाय की सहायता करें.

जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति किसी भी स्तर पर जग दी गई है ऐसे अधिकतर स्थानों में स्वच्छता सम्बन्धी निर्वाण सामग्री की मांग उसकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है. कम लागत की निर्वाण सामग्री का अभाव प्रगति में रोड़ा अटका सकता है जिससे समुदाय की स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने की गति धीमी पड़ सकती है. पारम्परिक निर्वाण सामग्री बहुधा बहुत मोटाई, जटिल, भारी और मानसीकृत होती है कि चयन की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती. दूरस्थ क्षेत्रों में तो यह उपलब्ध भी नहीं होती. साथ ही सभी लोग सबसे सस्ती सामग्री क्रय करना पसन्द नहीं करेंगे. यह सुनिश्चित कीजिये कि विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो जिससे चुनाव करने की संभावना रहे.

ऊपर: मार्गदर्शन निकाली हुई महिला, होंडुरास के कोपान, प्रायोगिक: निर्वाण अंतिमवर्ष, पहाड़ कोपान

ऊपर: महिलाएं मार्गदर्शन कार्ड पोस्टर प्रस्तुत करते हुए बच्चे, होंडुरास के कोपान, प्रायोगिक: निर्वाण अंतिमवर्ष, पहाड़ कोपान

ऊपर: जल के मुद्दे तक संदूषण मार्ग प्रस्तुत करते हुए बच्चे, जल पहाड़ कोलोंबिया. बच्चों की मदद से जल का नीलाम और उनके घर तक पहुंचना

नीचे: मुलाकात पोस्ट, सोशल मुलाकात, इथियोपिया में खुले में शौच के विरोध में प्रमोद यात्रा में गीत गाते हुए बच्चे

सूर्य जिला सिवोन के कनाक जिले में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते बच्चों का जुलूस. यह जुलूस कुछ समय के लिये उन गांवों के रास्ते रवाना भी अपने भी खुले में शौच कर रहे हैं

जैसे-जैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रगति और प्रसार होता जाता है स्वच्छता की बेहतर निर्माण सामग्री की मांग बढ़ती जाती है और स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन होने पर लोग अपने शौचालयों के डिजाइन और गुणवत्ता में सुधार करने के लिये इच्छुक होने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक होना बहुत महत्वपूर्ण होता है. इन्हीं गतिविधियों के संदर्भ में उपयुक्त सहायता और सहयोग प्रदान करना श्रेयस्कर होता है. ट्रिगरिंग के शौच बार पर खुले में शौच से मुक्त होने के बाद समुदाय के सम्मुख लोग बेहतर शौचालय बनाने के लिये प्रयत्नशील हो जाते हैं और विद्यमान शौचालयों में सुधार करना चाहते हैं. कुछ लोग तो पहली बार ही बहुत अच्छे और आधुनिक शौचालय बनाने में लग जायेंगे और कम लागत मॉडलों को छोड़ देंगे क्योंकि उन्हें लागत की चिन्ता नहीं है.

जो कार्य तत्काल किये जा सकते हैं उनमें सम्मिलित हैं:

- पता लगाइये कि किस चीज की जरूरत है (उदाहरण के लिये पैन, रिंग, टंकानियां और इंजिनीयिंग में एक फिट वाले शौचालयों के गड्ढों के लिये हैण्डल वाले ढक्कन की जरूरत थी और पैन निकालने के लिये प्लास्टिक के पाइपों की बहुत मांग थी)
- स्थानीय अभिनव पहल तथा निर्माण और उपयोग को प्रोत्साहित कीजिये
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गांव की बैठक में स्थानीय व्यापारियों को आमंत्रित कीजिये जिससे वे समुदाय से सीधे सम्पर्क कर सकें, उनकी आवश्यकताओं को समझ सकें और बिक्री की संभावनाओं को परख सकें.
- आसपास के बाजारों में स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री के ठेलों की खोज कीजिये और व्यापारियों को उचित सुझाव दीजिये, संभावनाएं स्पष्ट कीजिये, उन्हें अभिप्रेरित कीजिये कि वे उस सामग्री की आपूर्ति की व्यवस्था को जिससे समुदाय को आवश्यकता है.
- प्रोत्साहित कीजिये और एक समुदायिक प्रणाली की व्यवस्था कीजिये और स्वच्छता की निर्माण सामग्री के स्टॉल लगवाइये.
- स्थानीय ठेकेदारों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे स्वच्छता से जुड़ी निर्माण सामग्री अपने गांव में लायें.
- स्थानीय ठेकेदारों तथा समुदाय के अन्य सदस्यों को स्वच्छता की निर्माण सामग्री का निर्माण/उपयोग करने के लिये प्रशिक्षित कीजिये.
- कम लागत की उपयुक्त तकनीकों के विषय में पता लगाइये (जैसे कि तोड़ डालने वाला प्लास्टिक गलाने वाला सांचा सुरक्षायुक्त और न टूटने वाला हल्का प्लास्टिक का पैन) और विक्रेताओं एवं आपूर्तिकर्ताओं के बीच सम्पर्क स्थापित कराइये.

स्वच्छता निर्माण सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं और जनरल स्टोर के मालिकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अपना व्यापार बढ़ाने और साथ ही समुदाय की सहायता करने का अवसर दिखाई देता है. वे इस अवसर और मांग को भुना सकते हैं. इसके लिये वे पास के गन्तों और उप गन्तों से स्वच्छता की निर्माण सामग्री समुदाय के सदस्यों को सुदूर बेचने के लिये ला सकते हैं. बहुधा वे पैन तथा अन्य सामग्री को बिना स्थान के उधार देकर भी समुदाय की सहायता कर सकते हैं. उधार शौच ही चुका दिये जाने की संभावना रहती है. जैसे ही चलन का पैसा मिलता है उधार चुका दिया जाता है. गन्तों और उप-गन्तों में विचार कर रहे कुछ व्यापारियों के सम्बन्धी शहरी बाजारों के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने में भी सहायक हो सकते हैं.

बारिश और बाढ़ के बाद जब सिंगल पिट शौचालय ढह जाते हैं तो बेहतर और अधिक टिकाऊ शौचालयों की मांग होने लगती है. परिवार, विशेष रूप से महिलायें, फिर से खुले में शौच की ओर वापस नहीं जाना चाहते. यही वह समय है जब कि समुदाय के सदस्य विकल्पों की खोज में रहते हैं और बेहतर शौचालयों के मॉडलों को अपनाना चाहते हैं. यह जानने के लिये सतर्क रहना महत्वपूर्ण है कि क्या खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के कुछ ही महीनों में ऐसी स्थितियां सामने आने तो नहीं लगे हैं. स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहित/विकसित करने तथा बाजारों के साथ व्यावहारिक सम्पर्क स्थापित करने के माध्यम से निर्माण सामग्री की बढ़ती मांग के अनुरूप आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है. इसके लिये आवश्यक होगा कि पूरी प्रक्रिया में समुदाय की सक्रिय सहभागिता हो.

खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण

खुले में शौच से मुक्त होने की स्थिति का सत्यापन कराना एक मुख्य गतिविधि है. सत्यापन के लिये आवश्यक है कि निरीक्षण किया जाये जिससे पता किया जा सके कि क्या समुदाय पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त वातावरण को पा सका है या नहीं. प्रमाणीकरण इस स्तर की प्राप्ति का पुष्टिकरण है और अधिकारिक रूप से मान्यता प्रदान करता है. विशेषकर जहाँ खुले में शौच मुक्त होने पर पुरस्कार की व्यवस्था है समुदाय और कार्यिक गांव के खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने से पहले ही पुरस्कार के सम्बन्ध में प्रमाणीकरण प्राप्त करने की कोशिश कर सकते हैं. जहाँ प्रमाणीकरण के आधार पर पुरस्कार दिये जाते हैं वहाँ धोखा देने और भ्रष्टाचार के मामले सामने आते हैं. इससे बचाव रखने के लिये तथा वास्तव में खुले में शौच मुक्त स्तर को स्थायी बनाये रखने के लिये कई उपाय उपयोग में लाये गये हैं. निम्नांकित के द्वारा अलग-अलग ढंग से साथ मिल कर निरीक्षण किये जा सकते हैं और किये गये हैं:

- पड़ोसी समुदायों के सदस्य (विशेष रूप से जब प्रतियोगिता हो)
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के स्थानीय नेता और अन्य लोग
- एक सामाजिक समिति
- सरकारी विभाग के कार्मिक
- गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिक
- शिक्षक
- समाज के सामान्य सदस्य, उदाहरण के लिये कई लोगों को पड़ोसी गांवों में से चुनाया जा सकता है.

कुछ उपयोगी सिद्धान्त और व्यवहार

- सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों में स्थायी सदस्य नहीं होने चाहिये. सदस्यों को बदलते रहना आवश्यक है (जहां पुरस्कार योजनाएं हैं वहां भ्रष्टाचार के खतरे को कम करने के लिये)
- खुले में शौच से मुक्त गांवों के स्थानीय नेताओं को निरीक्षण समितियों का सदस्य बनाया जाना चाहिये
- महिलाओं को सदस्य बनाइये जिससे महिलाओं की स्वच्छता व्यवस्थाओं की जांच की जा सके
- जांच के लिये एक से अधिक बार भ्रमण होने चाहिये
- अचानक भ्रमण भी आयोजित होने चाहिये
- सत्यापन और प्रमाणीकरण के लिये सभी सदस्यों के द्वारा हस्ताक्षर करवा लेने चाहिये
- जब तक कि कम-से-कम 6 माह तक खुले में शौच मुक्त स्तर बना न रहा हो तो कोई भी प्रमाण पत्र जारी न किया जाये
- जब पूरी बस्तियों से तथा सख्ती के साथ सत्यापन हो जाये तो गांव के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगा देना चाहिये जिस पर अंकित हो कि गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाता है
- जब किसी पूरे प्रशासनिक क्षेत्र का सत्यापन किया जाय हो तो संगठनों के सदस्यों और आम लोगों में से बहुत व्यक्तियों को सत्यापन में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाना चाहिये जैसे कि उत्तर पश्चिम बंगलादेश के उप-जलवायु के संदर्भ में किया जाता है (जहाँ एक मामले में निरीक्षण दल के सदस्यों की संख्या 500 तो गई थी)

प्रमाणीकरण की घोषणाओं के स्तर का परीक्षण इस बात से हो जाता है कि किस बारम्बारता के साथ उन्हें रोका जाता है या चालान से लिया जाता है. निरीक्षकों के रूप में स्थानीय नेता ही सबसे अधिक सख्त और बारीकी से चीजों को देखने वाले होते हैं. कम्बोडिया में जहाँ उनके द्वारा भाग लिया गया 9 में से 7 समुदाय विफल पाये गये.

सत्यापन की गतिविधियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं, किये गये हैं:

- पूर्व की खुले में शौच की जगहों का भ्रमण
- पौ फटने से पहले और गोधूलि बेला के बाद जाँच
- शौचालयों का निरीक्षण
- जानना कि क्या शौचालयों के रास्तों का उपयोग किया गया है

- खुले लोगों और बच्चों से बातचीत
- समुदाय से पूछना कि स्वास्थ्यकर व्यवहार में आये परिवर्तन का अनुश्रवण किस प्रकार किया जाता है
- स्वास्थ्यकर व्यवहार परिवर्तन के स्पष्ट और गुण संकेतक, उदाहरण के लिये हाथ धोने के लिये साबुन, शौचालयों के पास पानी भरी बाल्टी, इत्यादि
- ज्ञानपत्रों के विषय में पूछना और जानना कि इन बातों में क्या किया गया
- घर खाने वाले जानवरों को देखना
- जांच से पता लगाना कि क्या सभी लटकते और टैंसे हुए शौचालय नष्ट कर दिये गये हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के सत्यापन को जब मूल्यांकन समितियों में सम्मिलित किया जाता है तो वे खुले में शौच मुक्त होने के स्तर को प्राप्त करने के लिये अभिनव युक्तियों का प्रयोग करते हैं, उदाहरण के लिये आम, कटहल या किसी अन्य फल को काटना जिसकी महक तेज होती है और जो मक्खियों को आकर्षित करता है तथा यह जीव करता कि क्या खुले में शौच बन्द होने के कारण मक्खियों की जनसंख्या में कमी हुई है.

सामुदायिक मूल्यांकनकर्ता और जानवरों के मल

धार्मिजनक रास्ता. बांग्लादेश के किशोरगंज जिले के महेर चार यूनियन में मलुह का एक सरपंच, पड़ोस के गांव का रहने वाला एक ग्रामवासी, अन्तर्ग्रस्त हो गया. अन्य लोग उसकी प्रतीक्षा करने लगे. जब अन्त में वह फिर सामने आ गया तो उसने कहा कि वह अपना कर्तव्य कर रहा था. वह एक मुर्गी का पीछा कर रहा था जिसकी टांग में मल लगा होने का शक था. मुर्गी का पीछा करते हुए वह मालम मल तक तो नहीं पहुंच पाए, वह गांव के गोबर तक जरूर पहुंच गया.

जब योजना का प्रचार बड़े स्तर पर होता है तो सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों के सामने बहुत सी समस्याएं आ जाती हैं जैसा कि भारत में निर्मल ग्राम पुरस्कार के संदर्भ स्पष्ट होता है. सत्यापन इस बात में है कि यदि बड़े स्तर पर इस प्रकार का काम करना हो तो विकेन्द्रीकरण करना चाहिये और स्थानीय स्तर पर सक्रिय सौजन्य चाहिये.

खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर उत्सव मनाइये

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय समुदायों और स्थानीय सरकारी तंत्र के बीच समुह सम्बन्ध स्थापित कीजिये, परन्तु सरकारी कार्यिकों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता के प्रस्ताव से समुदाय को गुमराह करने का प्रयास न करें. परन्तु यदि जोशपूर्ण और ज्ञानपूर्ण सहयोग मिलता है तो उसे सहर्ष स्वीकार करें.

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रचार

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रचार करने में समस्याएं सामने आती हैं, विशेषकर तब जब कि पुरस्कार की व्यवस्था भी लागू हो. भारत में, निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना के अन्तर्गत उन गांवों को पुरस्कृत किया जाता है जो खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेते हैं तथा साथ ही पर्यावरणीय स्वच्छता भी सुनिश्चित कर लेते हैं. सफल समुदायों के नेताओं का राष्ट्रपति के द्वारा सम्मान किया जाता है और समुदायों को एक बड़ी रकम पुरस्कार के रूप में प्राप्त होती है. शुरुआत में सत्यापन और प्रमाणीकरण बहुत सख्ती से किये जा रहे थे. हिमाचल प्रदेश के मण्डी जनपद के एक गांव ने बहुत अच्छा प्रयास किया था परन्तु उसे अपात्र घोषित कर दिया गया सिर्फ इसलिये कि एक भगवान बुद्ध के दो रास्तों पर "शौचालय" लिखा हुआ था (इस तथ्य के बावजूद कि कहीं भी कोई पैर नहीं लगे थे). हाल ही में जबकि आबादी की संख्या हजारों में चली गई है (अनुपूरक मूल्यांकनों के अनुसार 15000 से 20000), सत्यापन और प्रमाणीकरण के काम को अनुक्रम के आधार पर गैर-सरकारी संगठनों को सौंप दिया गया है जिन्होंने अपने स्तर से इसे उप-अनुक्रम के आधार पर अन्य को सौंप दिया है, और कुछ मामलों में तो इन उप-अनुक्रम धारकों द्वारा आगे और उप-अनुक्रम कर दिये गये हैं, कभी-कभी तो अनजान व्यक्तियों को मूल अनुक्रम में सिर्फ पारिश्रमिक के एक छोटे से भाग के भुगतान की बचनबद्धता के साथ. एक सही सूचना रखने वाले स्रोत का यह मानना है कि जब ऐसा होता है तो परिणाम तो केवल एक "मजाक" ही होगा, और जब सफलता के आधार पर सम्मान और अच्छी धनराशि के आर्थिक पुरस्कार की व्यवस्था हो तो दुरुपयोग की संभावना स्पष्ट रूप से रहती ही है. इसकी अपेक्षा स्थानीय स्तर पर आयोजित सत्यापन कहीं अधिक सफल होता है जहां प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान, गौरव तथा खुले में शौच से मुक्त होने पर मिलने वाले अन्य लाभों के अतिरिक्त कोई पुरस्कार नहीं होता है.

ऐसा करने का एक अच्छा तरीका यह है कि खुले में शौच मुक्त होने के उपलक्ष्य में उत्सव मनाने के लिये स्थानीय सरकारी तंत्र को सम्मिलित कर लिया जाये. जब भी किसी समुदाय या गांव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर को प्राप्त कर लिया जाता है तो पुरस्कार के रूप में एक उत्सव मनाने की व्यवस्था कीजिये जिससे अन्य लोगों में भी जोश आये और उनके द्वारा भी प्रतिज्ञा की जाये. वरिष्ठ कार्यिकों, राजनेताओं, पत्रकारों, संघर्ष मानवों से अन्य लोगों और उसी स्तर के राजस्व ग्रामों के समुदाय सदस्यों को आमंत्रित कीजिये. यह सुनिश्चित कीजिये कि जो भी सम्मानित अतिथि सम्बोधित करें उन्हें पहले से ही सही और पूर्ण सूचनाएं दे दी जायें. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे अन्य लोगों को भी सार्वजनिक रूप से व्यवहार रोने के लिये आमंत्रित करें और समुदाय को प्रशंसा और योजनाओं से अवगत कराये. जब समुदाय के द्वारा पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर ली जाये तो समुदाय से कहिये कि वे एक बोर्ड लगायें और उसपर यह तथ्य अंकित करा दें. इससे उनका गौरव बोध बढ़ेगा और बाहर आने वाले लोगों की टिप्पणियां भी बढ़ेंगी जो कि अपने गांव वापस जाकर अपने गांव को भी इसी प्रकार स्वच्छ बनाने के लिये प्रेरित होंगे.

अनुश्रवण और खुले में शौच मुक्त स्तर को बनाये रखना

स्वच्छता के प्राप्त स्तर को बनाये रखने का संकेत इस बात से भी मिलता है कि क्या समुदाय स्वच्छता सीढ़ी पर ऊपर की ओर चढ़ रहा है. स्वच्छता के स्थायी रूप से बने रहने और जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाने के लिये आवश्यक है कि लोगों के व्यवहार में परिवर्तन हो. यह व्यवहार परिवर्तन यदि स्थायी रूप का हो तभी स्वच्छता स्थायी हो सकती है. इसलिये इस व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से ही सम्बोधकता के संदर्भ में अनुश्रवण किया जा सकता है.

यदि खुले में शौच करने वाले कुछ व्यक्तियों को समुदाय द्वारा रंगित किया जाता है तो इससे यह पता चलता है कि समुदाय स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध हो गया है और इसे बनाये रखना चाहता है. शौचालय, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर चलाये जाने वाले कम लागत के शौचालय, बहुत दिनों तक नहीं टिक पाते और एक-आध साल में ही उनके गड्ढे भर जाते हैं, या गड्ढे की दीवारें ढह जाती हैं, या ढांचा ही टूट जाता है. सम्बोधकता का संकेत तब मिलता है जब परिवारों के द्वारा सहज ही दूसरे शौचालय का निर्माण कर लिया जाता है, विशेषकर जब नया शौचालय पहले वाले से अधिक अच्छा और टिकाऊ हो. सामान्यतः समुदाय के द्वारा स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने का रुझान भी सम्बोधकता का स्पष्ट संकेतक है.

अनुश्रवण से स्पष्ट हो जायेगा कि और आगे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है. कभी-कभी हल्के-फुल्के अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियों की आवश्यकता होती है. उदाहरणार्थ समुदाय के सदस्यों के द्वारा पूर्व में की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करना, या खुले में शौच से शीघ्र मुक्त होने के लिये एक दूसरे के शौचालयों का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करना.

कहानियाँ - इथियोपिया से

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को पहान इथियोपिया और सम्प, पूर्वी, तथा दक्षिण अफ्रीका के सात अन्य पहान देशों में फरवरी-मार्च 2007 में पहली बार शुरू किया गया. प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने दक्षिण पश्चिमी इथियोपिया के सदर्न नेशन्स, नेशनैलिटीज एण्ड पीपुल्स क्षेत्र में अवाशा के आसपास 12 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि से गांवों में जोश की चिंगारी जगाने के लिये ड्राइव की गई. प्रशिक्षण कार्यशाला के तीन माह के अन्दर ही पहान इथियोपिया के अनुवर्ती कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 से अधिक गांवों ने अपने को पूर्ण रूप से खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया. स्थानीय गांवों के सशक्तिकरण के उम्दा और सुन्दर उदाहरण निम्नवत् हैं. यह सभी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ड्राइव के ही परिणाम थे.

खुले में शौच करने वाले अपना दण्ड स्वयं निर्धारित करें

इथियोपिया के भूतूत कंबेले गांव में गांवों के पास कुछ भी करने का नया तरीका होता है. वे इसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कहते हैं परन्तु इसका एक हिस्सा तो बहुत ही सख्त है. खुले में कोई शौच नहीं, कभी नहीं. इस गांव के कुछ गांवों को यह भ्रम था कि यह नियम उन पर लागू नहीं होता इसलिये वे पहाले की तरह ही खुले में शौच करते रहे. लेकिन उसमें तक उतरी हुई पैंट के साथ पकड़े गये लोग सीधे ही यह पूरा मानने को विवश हो गये कि अच्छा होता यदि उन्होंने समुदाय की इच्छा का आदर किया होता. उन्होंने पाया कि वे अपने ही मल को लेकर पड़ोसी के शौचालय तक जा रहे हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को जब फरवरी 2007 में शुरू किया गया तो स्वाभाविक नेताओं में से एक श्रीमती चोंबेले बैसाइसा चोर्बू ने यह प्रतिज्ञा की कि वह अपने गांव को खुले में शौच से मुक्त कर देंगी. उल्लंघन करने वालों का सामना करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि उनकी प्रतिज्ञा पक्की थी. उनके शब्दों में:

"समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के हमारे गांव में संचालित होने के बाद गांव के हरेक परिवार ने गड्ढे खोदकर अपने लिये शौचालय बनाये. बाहर से आने वालों के लिये हमने मुख्य सड़क के किनारे-किनारे सात सामुदायिक शौचालय भी बनाये. इन सारे प्रयासों के बाद भी मैंने चार व्यक्तियों को गांव के खुले खेतों में अलग-अलग समय पर शौच करते हुए पाया. मैंने उन्हें आदेश दिया कि अपने मल को अपने ही हाथों से उठाये और सबसे पास के शौचालय तक ले जाकर उसमें डालें. उन्हें जब पकड़ा गया तो उनकी पैंट उतरी हुई थी इसलिये उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया, बल्कि मुझसे प्रार्थना की कि मैं उन्हें पत्नियों की सहायता से मल को उठा कर ले जाने दूं. मैंने उन्हें अनुमति दे दी और उन्होंने पत्नियों पर मल को उठाकर पास के शौचालय में उसका निपटान कर दिया."

सुश्री गंबेबाडी, जेमेल चोर्बू ने कहा, "मैंने देखा कि कुछ आगन्तुक खुले खेतों में शौच करने की तैयारी कर रहे हैं. मैं जोर से चिल्लाया और उन्हें शौच करने से पहले ही रोक दिया. मैं हमेशा निगरानी करता रहता हूं जिससे हमारा गांव स्वच्छ रहे और खुले में शौच से मुक्त बना रहे."

भूतूत कंबेले में बैसाइसा और जेमेल गांव में स्वच्छता के रखवाले बन गये हैं और उन्होंने अन्य लोगों से भी उनके साथ आने का अनुरोध किया है. अदो आगोंचू कंबेले, भूतूत कंबेले के अध्यक्ष ने स्वच्छता सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार करते रहने का वादा किया है. अपने प्रयासों से समुदाय को पहान इथियोपिया, वाटर एक्शन और स्थानीय सेंटेड हैल्थ एण्ड वाटर ऑफिसेज से सहयोग प्राप्त हुआ है. आगेतता टिचू, स्थानीय प्रचार कार्यकर्ता, को अपने परिवार के सदस्य के विषय में कोई संशय नहीं है. "हमारे गांव में खुले में शौच की प्रथा इतिहास बनती जा रही है."

न आर्थिक सहायता और न ही कोई प्रतियोगिता - परन्तु समुदाय के द्वारा की जा रही पहान से ही स्वच्छता सम्बन्धी आंकड़ों में वृद्धि होती जा रही है. इथियोपिया के सेंटेडने चोंटा में पहाले आठ गांवों ने फरवरी 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार किया. तीन माह से भी कम समय में यह 57 गांवों तक पहुंच गया और 1436 परिवारों ने एक गड्ढे वाले शौचालय अपने ही पहान पर निर्मित कर डाले. सेंटेडने चोंटा के स्वास्थ्य कार्यालय के प्रमुख अदो गेंटिचे काशा ने उल्लेख किया है कि भूतूत कंबेले के 1266 परिवारों के पास अब अपने शौचालय हैं और इनमें से 465 का निर्माण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के शुरू होने के बाद किया गया.

जागरूक की लागत

इस पहान को पहान इथियोपिया का सहयोग प्राप्त है जिसके अन्तर्गत लगभग 2000 अमेरिकी डॉलर से समुदाय के स्वाभाविक नेताओं, गांव के स्वास्थ्य अधिकारियों, स्वास्थ्य प्रचार कार्यकर्ताओं, और सहयोगी संस्थाओं के कार्यियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है. जिला वार्षी में पहान के द्वारा प्रति परिवार स्वच्छ शौचालय के पखाने मात्र के लिये 25 डॉलर खर्च किये जाते थे. इसलिये 1436 शौचालय बनाने के लिये तो 35000 अमेरिकी डॉलर की जरूरत होती. आज यहां कोई आर्थिक सहायता नहीं है. कोई प्रतियोगिता भी नहीं है. समुदाय अपने ही आय से खर्च करके अपने ही स्तर से यह पहान कर रहे हैं. वे अपने गांवों को खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त करने के लिये कटिबद्ध, दृढ़ निश्चय और जोश से भरे दिखाई दे रहे हैं. मुख्य किरदार निभाने वाली संस्थाओं - पहान इथियोपिया, वाटर एक्शन, सेंटेडने चोंटा हैल्थ एण्ड वाटर ऑफिसेज, स्वाभाविक नेता और समुदाय के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध है. इस सबसे स्पष्ट होता है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से स्वच्छता और स्वास्थ्यकर व्यवहार पर प्रभाव और फर्क पड़ता है तथा खुले में शौच से मुक्त होने में मदद मिलती है. परन्तु प्रक्रिया को उचित ढंग से संचालित करना और मुख्य बदलाव तथा गुणवत्ता और सुविधाओं के उपयोग पर संबंधित अनुवर्ती गतिविधियां बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं.

दुष्ट आत्माओं का डर - मोहिनी (चार्म)

सिवा लियोन के दक्षिणी, पूर्वी और उत्तरी प्रान्तों के कुछ भाग की "मेंडे सोसाइटी" के द्वारा 'चार्म', जो स्थानीय भाषा का शब्द है का प्रयोग किया जाता है. चार्म का अर्थ है एक भौतिक संरचना जिसमें एक सिलाई सिमकी और बांस से बनाई जाती है और इस पर एक विशेष प्रकार से चित्रांकन लपेट दी जाती है. इस प्रतीक का उपयोग लोगों को दुष्ट आत्माओं से डराने के लिये किया जाता है. दुष्ट आत्माएं शरीर में प्रवेश कर जाती हैं और शरीर को रोग ग्रस्त कर देती हैं जिसका परिणाम मृत्यु भी हो सकता है. जहां भी इसे रखा जाता है वहां लोग जाने से कतराते हैं क्योंकि उन्हें दुष्ट आत्माओं का डर रहता है. परन्तु यह भी मान्यता है कि जब लोग बुरी नियत से इनके पास जाते हैं तभी दुष्ट आत्माएं आक्रमण करती हैं. इन्हें सामान्यतया पहाड़ोंरान, चर्चों, गोरभोरेन झाड़ियों (जहां मेंडेज सोसाइटी के सदस्य ही जा सकते हैं) और निर्माण स्थलों पर लगाया जाता है.

सिवा लियोन के केनेमा के जिले 'स्मल बो' चीफडोम के कपाइ गांव में स्थानीय समुदाय के द्वारा चार्म के इस चिन्ह का इस्तेमाल कुछ खुले में शौच के स्थानों से लोगों को डरा कर भगा देने के लिये किया जाने लगा.

जोसेफ ए. कोनुरा, प्रोग्राम इंजीनियर
क्रिश्चियन एड टु अफ्टर एफिलिएटेड सोसाइटीज एक्रीडेबेयर, मोंग्यूलर्स, सिवा लियोन

अध्याय 5

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे

सन् 1999 के उत्तरार्ध में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल की शुरुआत से अब तक इसका तेजी से प्रसार हुआ है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को कम-से-कम 15 देशों में सफलतापूर्वक शुरू किया गया है. यह मुख्य रूप से इस हस्तपुस्तिका के प्रधान लेखक के द्वारा चलाये गये व्यवहारिक प्रशिक्षणों के माध्यम से सम्भव हो सका है. प्रधान लेखक के द्वारा वर्ष 2000 से 2007 तक 15 देशों में कम-से-कम 65 व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का संचालन क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया. यह प्रशिक्षण 1400 से अधिक प्रशिक्षकों, कार्यान्वयनकर्ताओं, चटाखान के परामर्शदाताओं, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, गैर-सरकारी संगठनों और सहायता प्रदान करने वाले संगठनों के सदस्य और कम-से-कम 50 विभिन्न अभिकरणों के प्रसार कार्यकर्ताओं के लिये संचालित किये गये. यह सब कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठनों के सहयोग और अभिनव पहल से सम्भव हो सका है. यह सभी संस्थाएं सक्रिय रूप से इसके प्रसार और प्रचार में सहयोग करती रही हैं जिससे जहां इसे शुरू किया गया वहां फैलाने तथा नये देशों में शुरू करने में मदद मिली.

(अभिकरणों, देशों और प्रशिक्षणों की विस्तृत जानकारी के लिये देखिये
– www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html)

इन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षित कई लोगों ने अपने संगठनों के अन्य लोगों को ट्रेनिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया है. कम-से-कम भारत, बांग्लादेश, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में प्रशिक्षित लोगों के द्वारा यह प्रशिक्षण अपने संगठन के बाहर अन्य लोगों को भी दिया गया है जिनमें सरकारी कार्मिक भी सम्मिलित हैं. इनमें से कुछ प्रशिक्षण तो बहुत अच्छे रहे हैं. परन्तु कामी प्रशिक्षणों में उच्च गुणवत्ता नहीं बनाये रखी जा सकी है जो कि एक चिंता का विषय है.

नेपाल, बांग्लादेश में समुदाय संचालित पहल की सफलता का उत्सव मनाने के लिये पहले से तीन से पूर्ण समुदायों के द्वारा आयोजित विशाल सभा और समारोह. अपने क्षेत्र की सभा आयोजन की पूर्णतया कार्यावली के अध्ययन और सहाय इस प्रसार की सभाओं और उत्सवों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिये आयोजित किये जाते हैं. पूरे गये उन प्रतिक्रियाओं में से उच्च का अपने पेशेवर अन्य लोगों को प्रोत्साहित करके समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में सीधे ही महत्वपूर्ण योगदान करते हैं.

प्रशिक्षण और प्रसार – क्या करें और क्या न करें

आगे लिखी बातों में अवसर हो परिवर्तन करने और कुछ जोड़ने की आवश्यकता होगी. स्थितियां बदलती रहती हैं और रणनीतियां भी भिन्न-भिन्न होती हैं, परन्तु अब इतनी जानकारी हो गई है कि अनुभव तथा सामान्य विवेक के आधार पर सुझाव दिये जा सकते हैं, इनमें वह चीजें भी शामिल हैं जो अनिवार्य हैं तथा वह भी जिनसे बचने की आवश्यकता है.

क्या अवश्य करें

- जिन्हें प्रशिक्षण मिल चुका है उनसे से ऐसे व्यवहारिक प्रशिक्षकों की पहचान कीजिये जिनका ट्रेनिंग का काम अच्छा रहा है और उनके द्वारा जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाई गई है वहां के लोगों ने जो व्यवहार परिवर्तन को अपना लिया है.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध संगठनों के अच्छे व्यवहारिक सुगमकर्ताओं को चुनिये, प्रशिक्षित कीजिये और उन्हें पूरा सहयोग प्रदान कीजिये
- इस बात पर जोर दीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यवहारिक हों जिससे समुदाय के बीच जाकर व्यवहारिक रूप से ट्रेनिंग कराने का अनुभव प्रशिक्षणियों को मिल सके. सभी प्रशिक्षणों में ट्रेनिंग और सामाजिक अनुवर्ती भ्रमण के माध्यम से अनुभव आधारित प्रावधान सम्मिलित होना चाहिये.
- कोशिश करें कि मुख्य प्रशिक्षक और सुगमकर्ता पूर्णकालिक हों.
- सुगमकर्ताओं को इस प्रकार व्यवस्थित कीजिये कि वे ट्रेनिंग से पहले, ट्रेनिंग के दौरान और ट्रेनिंग के बाद एक टीम या दल के रूप में काम कर सकें.
- अधिक अनुकूल स्थितियों से शुरू कीजिये और फिर अधिक चुनौतीपूर्ण स्थितियों की ओर बढ़िये (अध्याय 2 ट्रेनिंग से पहले, देखिये)
- उन सम्पर्कों के साथ सम्पर्क साधिये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति समर्पित हैं और लगातार दीर्घ काल तक सहयोग कर सकते हैं.
- अभियान शुरू कीजिये.
- प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये, सफलता का उत्सव मनाइये.
- अभियान चलाने और सीखने को बढ़ावा दीजिये, खुले में शौच से मुक्त घोषणों को सीखने के लिये प्रयोगशाला बनाइये.
- समुदाय में से सुगमकर्ताओं को पहचान कीजिये और उनके साथ सहयोग कीजिये. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की भर्ती से जरूरत समुदायों के व्यवहारिक नेताओं में से सुगमकर्ताओं की पहचान कीजिये और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, सहयोग, और प्रोत्साहन दीजिये जिससे वे अन्य समुदायों में ट्रेनिंग और अनुवर्ती भ्रमण कर सकें.
- ट्रेनिंग के बाद प्रगति की समीक्षा कीजिये. यदि प्रगति संतोषजनक नहीं है तो ट्रेनिंग बन्द कर दीजिये तथा वह नई कमी का पता लगाने के लिये पूरी प्रक्रिया का पुनरावलोकन कीजिये.
- प्रयास कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान ऐसा हो जाये कि अपने आप चलता चला जाये.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को शुरू की एक रणनीति के रूप में देखिये जिससे समुदाय का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि वे अन्य विकास कार्यों में भी नई पहल एकजुटता के साथ अपने ही स्तर पर कर सकें.

सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि

- सुनिश्चित कीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यवहारिक हों जिससे समुदाय के बीच ट्रेनिंग करने की प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया हो.

गम्भीर खतरों एवं गतिविधियों से बचने के लिये चार कीजिये कि सहभागी ग्राम अध्ययन का कितने बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया गया था, कब से ही प्रशिक्षण दिया जाने लगा था, व्यवहार और अभिवृत्ति की उपेक्षा होती थी, समुदाय के बीच में कोई एक गतिविधि संचालित की जाती थी और अनुवर्ती गतिविधियों को छोड़ दिया जाता था, साधनों का प्रचार तो होता था परन्तु लोगों का सशक्तिकरण नहीं. ऐसा ही कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ भी हो चुका है और इस प्रकार के दुरुपयोग से हर कीमत पर बचने की आवश्यकता है. इसका अर्थ है:

क्या नहीं करना है

- प्रचार करने की इच्छा के कारण कोई जल्दबाजी न कीजिये जिससे प्रक्रिया की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े.
- प्रशिक्षकों और सुगमकर्ताओं के किसी भी ऐसे प्रशिक्षण को न तो आयोजित होने दीजिये और न ही उनके लिये सहयोग दीजिये जिसमें प्रशिक्षण कक्ष में बातों के माध्यम से ही प्रशिक्षण का प्रयास किया जा रहा हो और सम्बन्धित समुदाय के बीच जाकर ट्रेनिंग और अनुवर्ती भ्रमण एवं गतिविधियों के आवश्यक मार्ग का समावेश न किया गया हो.
- ऐसे प्रशिक्षण एजेंसियों और संस्थाओं के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो कि समुदाय के बीच जाकर गतिविधियों का आयोजन नहीं करतीं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये तैयार दिखती हैं.
- ऐसे गैर-सरकारी संगठनों और अन्य एजेंसियों के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो अपने लाभ के लिये तथा समुदायों का शोषण करने के लिये पहुंचे और सुविधित करने जैसी गतिविधियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का नाम देकर आगे बढ़ने में लगे रहते हैं.

अधिकारों के कार्यिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा रणनीतिक कार्य

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय अभिकरणों तथा सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं, नेताओं, सरकारों, अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, नीति-निर्धारण से जुड़े राजनेताओं के साथ मिलकर इस प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं जिससे विषयों का प्रचार हो, लोगों की सोच में प्रभाव पड़े और अधिकाधिक अवधारणाओं का प्रतिपादन हो सके. यह संभव मामलों से जुड़े लोगों पर भी लागू हो सकता है.

इस प्रकार के सभी लोगों और उनके संगठनों के लिये:

- सीखी गई बातों और प्राप्त किये गये अनुभवों को बांटने तथा यह राशि के लिये क्या उपलब्ध हो सकती है सफल मामलों की जानकारी देने के लिये कार्यशालाओं और बैठकों का आयोजन एवं संचालन कीजिये.
- एक देश से दूसरे देश और एक राज्य से दूसरे राज्य के भ्रमण की व्यवस्था कीजिये जिससे खुले में शौच से मुक्त समुदायों, स्थानीय नेताओं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के पैरोकारों के बीच आमने-सामने अन्तर्क्रिया हो सके.
- अनुवर्ती बैठकों और परिचर्चाओं का आयोजन कीजिये जिससे नीतियों में यथायथक परिवर्तन करने का प्रयास किया जा सके.

और सहयोग के लिये

- ऐसे संगठनों की पहचान कीजिये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये उत्सुक हों तथा उनका सम्पर्क अथवा काम करने वाली अन्य संस्थाओं से कर दीजिये और उनके लिये व्यवहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था कीजिये.
- सफलता और विफलता की पटकथाओं, प्रशिक्षण और सीखने की सामग्री, पार्श्वलेख, वीडियो आदि का संग्रहण, राष्ट्रीय अथवा संस्थाओं के स्तर पर अभिलेखीकरण, प्रकाशन और प्रचार कीजिये. और ऐसे गुणवत्ता करने वाली सामग्री के प्रति अत्यन्त सतर्क रहिये जिसके माध्यम से हानिकारक व्यवहार का पुनःप्रचार किया गया हो.

यह सबसे महत्वपूर्ण है कि नीति-निर्धारकों, प्रबन्धकों, वित्त अधिकारियों को, चाहे वे सरकार में हों या अनुदान अथवा ऋण देने वाले अधिकारी में या गैर सरकारी संगठनों में, को यह स्पष्ट कर दीजिये और दिखा दीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की एक मुख्य पूर्वशर्त है कि परिवारों को निर्माण सामग्री पर आंशिक सहायता/सब्सिडी प्रदान न करने की निश्चित और लगातार एकसी नीति हो. जहां पर पुनर्वित्तपोषण की व्यवस्था है सब्सिडी के लिये आवंटित राशि को प्रशिक्षण आदि के लिये व्यय किया जा सकता है, यहां पूर्व में स्वीकृत आवंटित धनराशि में बहुत कम भाग के व्यय हो पाने की आशंका होती है. राजिनी और उदाहरण देखें. यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का असर देखने में होता है तो शुरुआत में कम व्यय करने तथा बाद में अधिक व्यय करने की स्थिति होगी. जब एक बार शुरुआत हो जाये और पूरा गांव खुले में शौच से मुक्त हो जाये तो प्रशिक्षण, क्षमता विकास, खुले में शौच मुक्त गांवों के भ्रमण, स्थानीय नेताओं के सामुदायिक पाठशालाओं के रूप में उपयोग पर होने वाले व्यय में वृद्धि होने लग जायेगी और इसके लिये पर्याप्त बजट आवंटन की आवश्यकता होगी परन्तु फिर भी बहुत अधिक राशि की आवश्यकता नहीं होगी.

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परिवारों के लिये सब्सिडी के रूप में स्वच्छता सामग्री पर होने वाले व्यय को "समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता" का नाम न दिया जाये. ऐसे किसी भी प्रयास की पहचान की जानी चाहिये तथा तत्काल इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिये.

कार्यान्वयनकर्ता अभिकरण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं क्योंकि इसकी कम लागत से उनके द्वारा किये जाने वाला धनराशि वितरण सीमित हो जाता है. ऐसे अभिकरणों को चाहिये कि वे तत्परता बनें और शुरू में कम तथा बाद में ज्यादा खर्च करने के लिये तैयार हो जायें.

जब बजट में निर्धारित बहुत बड़ी राशि को समय से खर्च करने का दबाव रहता है तो नीतियों में परिवर्तन लाने के लिये रणनीतियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं:

- आवंटित धनराशि को प्रारंभिक इकाइयों के बनाने जाने, बढ़ाने एवं स्थानों की स्वच्छता पर खर्च करने की व्यवस्था
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये पूर्ण रूप से समर्पित और जो गैर-सरकारी संगठन को वित्तीय सहायता (जैसे कि बांग्लादेश में सिराजी के लिये किया गया है)
- पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर लेने वाले समुदायों को पुरस्कृत करना (जैसे भारत में किया गया है) (यह वित्तीय प्रलोभी है/हो सकता है इस विषय पर विविध प्रकार के दृष्टिकोण और विचार हैं)
- पार्श्वलेख के रूप में चाहे अपने स्तर पर क्रियान्वित करना जिस सुगमकर्ता ठेका में नई अवधारणा का चाहे और प्रचार कीजिये (WSLIC2 में हुआ). जब बड़े क्षेत्रों में अभियान फैल जाये तो उसके अनुसार अधिक खर्च कीजिये
- शोध कीजिये और व्यवहारिक अनुभव के माध्यम से सीखिये

गांव के स्तर पर ट्रेनिंग के लिये सुगमकर्ता दलों का प्रशिक्षण

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यशालाएं सामान्यतया 4 या 5 दिनों की अवधि की होती हैं. गावों के भ्रमण का दिन और समय समुदाय के परामर्श से ही निर्धारित किया जाता है. 5 दिवसीय कार्यशाला की योजना और विषयों/गतिविधियों का अनुक्रम इस प्रकार हो सकता है:

आवंटित राशि के कम खर्च होने की समस्या का समाधान

बांग्लादेश में शौचालयों का निर्माण लोकप्रिय था क्योंकि बजट की बचतवाले सीधे उन गरीब परिवारों पर खर्च की जा सकती थी जिनके बच्चों को प्रायोजित किया गया था और एक शौचालय निर्माण की सामग्री पर 30-50 डॉलर तक खर्च किया जा सकता था. लेकिन पलान को यह जानकारी थी कि इस प्रकार निर्मित सभी शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था तथा सभी गरीबों तक सहायता नहीं पहुंच सकती थी. 2003 में कम्बल बाट द्वारा प्रशिक्षित किये जाने के बाद पलान के स्टाफ को समझ में आ गया कि किस प्रकार एक पूरा समुदाय खुले में शौच बन्द करने की शपथ ले सकता है और लोग अपने आप ही अपने लिये शौचालयों का निर्माण कर सकते है. जबकि पलान ने 600 शौचालयों के निर्माण का लक्ष्य रखा था उन्हीं गांवों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अंगीकार कर लिये जाने के फलस्वरूप गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये और उन्होंने 6000 से ज्यादा शौचालयों का निर्माण कर डाला. इन परिणामों से स्टाफ बहुत प्रसन्न हो गया परन्तु कन्ट्री डायरेक्टर के रूप में मुझे जल्दी ही एक समस्या दिखाई देने लगी. चूंकि अब हम सामग्री और तकनीकी स्टाफ के लिये भुगतान नहीं कर रहे थे हम केवल 12000 डॉलर ही खर्च करने जा रहे थे और यह भी प्रशिक्षण तथा प्रचार सामग्री पर जबकि उस वर्ष के लिये हमारा बजट 60000 डॉलर था. हम लोग बहुत सफलता प्राप्त कर रहे थे, लक्ष्य से बहुत अधिक, परन्तु हम बजट का केवल चौथाई हिस्सा ही खर्च कर रहे थे. मुख्यालय की दृष्टि में बजट का कम खर्च होना खराब नियोजन तथा कार्यान्वयन की क्षमता की कमी की निशानी होगा तथा प्रायोजकों से प्राप्त धन का लाभ सीधे समुदायों को मिलता हुआ नहीं दिखाई देगा.

और अनुभव हो जाने पर शेष राशि के अच्छे उपयोग का रास्ता मिल गया. अन्य लोगों को जोड़कर दिखाई धन की एक नई गैर-सरकारी संस्था का गठन कर लिया गया जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पूरे बांग्लादेश में बढ़ावा देने के प्रति समर्पित थी. और इस प्रकार स्वच्छ की नई धनराशि से गरीबों को इतना ज्यादा फायदा हुआ कि उसे नापा नहीं जा सकता.

स्रोत: एडवर्ड एवे, पूर्व कन्ट्री डायरेक्टर, पलान बांग्लादेश

पहला दिन: *अभिमुखीकरण एवं तैयारी, पुनर्पूर्ति, स्वच्छता के लिये पारम्परिक आर्थिक सहायता आधारित विधि के स्थान पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि का विकास, जिला वर्षों की विकासशाला, विधियों का पुनर्भ्यास और अभिमुखीकरण, समूह गठन, भूमिका निर्धारण (मुख्य सुगमकर्ता, सह-सुगमकर्ता, विषय वस्तु और प्रक्रिया रिपोर्टर, वातावरण नियंत्रक, बच्चों की गतिविधि को सुगम बनाने के लिये कम-से-कम दो सुगमकर्ता), महिलाओं के साथ काम करने के लिये महिला प्रतिभागियों के समूहों का गठन, समूहों द्वारा स्वयंसेवियों का निर्धारण.*

गांव या उप-गांव के मुखिया, स्थानीय समुदाय के नेता, या जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का ट्रिगरिंग किया जाना है वहां के समुदाय के चयनित सदस्यों को सामान्यतया कार्यशाला में प्रशिक्षण करने के लिये आमंत्रित किया जाता है. जब पहले दिन के सत्र पूरे हो जाते हैं तो यह आयोजित लोग (प्रत्येक चयनित गांव से एक या दो) अपने समुदाय के पास एक बड़ी बैठक का सुविधाजनक स्थान पर आयोजन करने के लिये लौट जाते हैं. अगले दिन जब ट्रिगरिंग दल वहां पहुंचता है तो समुदाय बैठक के लिये तैयार होता है और होक को बैठक के स्थान की जानकारी होती है.

दूसरा दिन: *समुदायों के बीच जाकर ट्रिगरिंग और अनुभवों का आदान-प्रदान*

तीसरा दिन: *संशोध में अनुभवों को बांटना और द्वितीय ट्रिगरिंग: पहले दिन के अनुभवों को संशोध में बांटना तथा सीढ़ियों रेखाएं जिससे पता चल सके कि सुगमकर्ताओं द्वारा किस प्रकार प्रक्रिया संचालित की गई और विशेष रूप से यह जानना कि उनकी अभिमुखि और व्यवहार किस प्रकार का रहा. परिवर्तन कि इनमें किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है और फिर किसी दूसरे समुदाय में ट्रिगरिंग.*

चौथा दिन: *गांव में की गई ट्रिगरिंग के अनुभवों को बांटना, तथा सीढ़ियां शेष बातों को उजागर करना विशेष रूप से पहले और दूसरे दिन की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के अनुभवों की तुलना करना. यदि पहले दिन के अनुभव के आधार पर बातों को ठीक से सोचा जाता है तो सामान्यतया दूसरे दिन की ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के संचालन में बहुत सुधार देखा जा सकता है. प्रतिभागियों के संगठनों के संदर्भ में कार्य योजनाओं का निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण. ट्रिगरिंग के बाद के अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियों के संदर्भ में प्रतिभागियों की भूमिका का निर्धारण निर्णायक हो सकता है. संयुक्त मूल्यांकन, घोषणा और उत्सव मनाने की तिथियों का निर्धारण भी महत्वपूर्ण होता है.*

पांचवां दिन: *फीडबैक और अनुवर्ती गतिविधि कार्यशाला जिसमें कार्य योजनाओं और कार्य पर समुदायों से फीडबैक लिया जाता है. इससे समुदायों के बीच तथा स्थानीयक नेताओं के बीच प्रतियोगिता शुरू हो सकती है.*

मुख्य लोगों को पांचवें दिन आयोजित किया जाना चाहिये. संदर्भ के आधार पर यह राजनेता, सरकारी अधिकारी/कर्मचारी, गैर-सरकारी संगठनों से जुड़े लोग और स्वच्छता के कार्य में संलग्न द्विपक्षीय, बहुपक्षीय अधिकारियों से जुड़े व्यक्ति हो सकते हैं. इससे उन्हें समुदाय के प्रतिनिधियों को देखने और सुनने का अवसर मिलेगा तथा यह भी जान सकेंगे कि पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उनकी कार्य योजनाएं क्या हैं.

ध्यान देने योग्य बिन्दु:

- भाषा, यदि सम्भव हो तो अच्छा होगा कि मुख्य सुगमकर्ता स्थानीय भाषा में चतु हो. अन्य के संदर्भ में प्रतिभागियों की व्यवस्था आवश्यकतानुसार करनी होगी.
- समूहों द्वारा पाई गई बातें - महिलाओं, बच्चों के समूहों द्वारा पाई गई बातें - ट्रिगरिंग के अन्त में अन्य लोगों के समक्ष इनका प्रस्तुतीकरण किया जाना है.
- गांव के मुखिया और स्थानीय सरकारी कर्मचारियों को बहुत पहले से ही यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में किसी भी प्रकार की सब्सिडी या आर्थिक सहायता का प्रावधान नहीं है. यह इसलिये आवश्यक है कि कहीं ये ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बीच में ही अचानक से प्रकट होकर सब्सिडी की बात न शुरू कर दें. यदि सम्भव हो तो जिला वर्षों में (जिले/राज्य/देश में) पहाड़े जा रहे सब्सिडी आधारित स्वच्छता कार्यक्रम के इतिहास पर उनसे परिचर्चा की जानी चाहिये तथा उनकी समीक्षा की जानी चाहिये. इस प्रकार के मुद्दे और प्रश्न जैसे कि सब्सिडी किसे मिलेगी? उसका चयन किस प्रकार किया गया? क्या सब्सिडी का परिणाम खुले में शौच से मुक्त

स्तर प्राप्त करना हुआ? क्या सरकार सबको सब्सिडी देने का साथ वहन कर सकती है? इन सब बातों पर परिचर्चा की जानी चाहिये.
- समुदाय के सदस्यों को समय और स्थान की सूचना पहले से दी जानी चाहिये. चार दीवारों कि समुदाय से जितने अधिक लोग भाग लेंगे उतना ही अधिक ट्रिगरिंग से सफल होने की सम्भावना होगी.

यह महत्वपूर्ण है कि जिन लोगों को प्रशिक्षित किया है उनसे मिल जाने जब उनके द्वारा गांवों में जाकर ट्रिगरिंग सत्र करके व्यवहारिक अनुभव प्राप्त कर लिया गया हो. यह सर्वोत्तम करने तथा कौशल एवं कार्यविधि को सुदृढ़ करने का एक अच्छा अवसर है. इस समय सामने आने प्रश्नों और मुद्दों के समाधान पर भी विचार किया जा सकता है. इस प्रकार की किसी भी बैठक में सामने आने नये विकेंद्रों को आयोजित किया जा सकता है जिससे वे अपने अनुभवों को सामने रख सकें और सुधार के लिये नई रणनीतियों को विकसित करने में सहायक हो सकें.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता

तेजी से प्रसार, प्रशिक्षण की बढ़ती मांग और कार्य आधार में वृद्धि होने के कारण कुछ स्थानों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. सरकारी और सहायता प्रदान करने वाले अधिकारणों के द्वारा निर्णय और चयन के आधार पर खुले बाजार से प्रशिक्षण अभिकरणों की सेवाएं ली जा रही हैं. इनमें से कुछ अभिकरणों के द्वारा बहुत से प्रशिक्षणों का आयोजन किया जा चुका है. यह प्रशिक्षण व्यवहारिक रहे जिससे समुदाय के बीच जाकर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग सम्मिलित थी परन्तु जिन समुदायों में ट्रिगरिंग की गई उनकी संख्या के सापेक्ष बहुत कम समुदाय ही खुले में शौच से मुक्त स्तर पाने में सफल पाये गये. इस अनुभव तथा खुले में शौच मुक्ति की ओर अग्रसर होने के अन्य सकेतकों पर बारीकी से नजर रखी जानी चाहिये. यदि स्थिति असंतोषजनक हो तो स्पष्ट है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही होगी या अनुवर्ती भ्रमण का अभाव.

प्रतिभागियों के लिये फोटोज़ के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के लोग वर्षों से खुले में शौच से मुक्त अपने गांव को बताते हैं अपने लोगों को दिखाते हुए जिनमें बच्चाने गांव और आसपास के क्षेत्र के फोटोज़ कार्यालय के अन्दर भी सम्मिलित हैं.

परियोजना के रूप में परिवर्तन - न्यून आय वाले समुदायों के लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन परियोजना 2, इण्डोनेशिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

जब न्यून आय समुदायों के लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन परियोजना (WSLIC2) 2001 में प्रारम्भ हुई तो समुदायों को सौचालयों के निर्माण के लिये 3000 डॉलर के बराबर राशि का अनुदान एक परिवारों कोष बनाने के लिये दिया गया. परिणाम बहुत उत्साहवर्धक नहीं रहे. अधिकांश लाभ केवल आय वाले को ही मिला. जिस प्रयोजन के लिये यह धनराशि उपलब्ध कराई गई थी उस पर व्यय करने के बाद किसी भी समुदाय के द्वारा इसे कोष में वापस करने का कोई प्रयास भी नहीं किया गया. सम्भव यह भी कि परियोजना में स्वच्छता एवं स्वास्थ्यकर गतिविधियों की अपेक्षा जागरूकता पर अधिक ध्यान दिया जाता था. समुदायों को यह पता नहीं था कि सौचालयों की मांग में वृद्धि कैसे हो सकती है और जिस मांग के विकल्पों को बढ़ावा दिया जा रहा था वह गरीब लोगों की पहुंच से बाहर थे.

नई 2005 में चार लक्ष्य जिलों (तथा एशियन डेवलपमेंट बैंक द्वारा सहायित स्वच्छता परियोजना के दो जिलों) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का परीक्षण किया गया जिसमें निर्माण सामग्री पर सब्सिडी की व्यवस्था नहीं थी. इन जिलों में सफलता मिलने पर 2007 के प्रारम्भ में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार 6 और जिलों तक किया गया. 2007 के शुरू में परिवारों कोष की रणनीति को त्यागा गया और सभी नये परियोजना गांवों के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपनाने का निर्णय लिया गया. अगस्त 2007 तक 34 गांव तथा 2 उपजिले शतप्रतिशत खुले में शौच से मुक्त हो गये, जबकि पूर्व की परिवारी कोष परियोजना कार्यान्वयन के पहले तीन वर्षों में एक भी गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुआ था. परियोजना के कार्यान्वयन के क्षेत्र में दो दृष्टिकोण तथा कार्यविधि में मौलिक परिवर्तन हुआ. यह क्षेत्रगत समान्य विषयों के वांछित कार्यिकों की प्रतिबद्धता और वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम की सहायता से. इसका श्रेय व्यावहारिक प्रशासन और प्रतिदान को भी जाता है जिसके अन्तर्गत कार्यके लिखाया गया कि किस प्रकार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि से बिना किसी प्रकार की सब्सिडी दिये बहुत कम समय में कितने अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं. इसे सम्भव करने में स्वास्थ्य गांवों का भी हाथ है जिन्होंने घोषित कर दिया था कि उनके विभाग के लिये स्वच्छता की नई रणनीति समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ही होगी. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत निर्माण कार्य सीखने का अवसर प्राप्त हुआ. अनुभवी प्रशिक्षकों, सुगमकर्ताओं और व्यावसायिक नेताओं के समूह को विकसित करने का अवसर मिला. कुछ जिलों के लोगों ने पाया कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अन्य जिलों में शुरू हो गई थी और उनके बहुत अच्छे परिणाम सामने आ रहे थे. उन्हें डर था कि कहीं वे छूट न जायें. ऐसे जिलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मांग पैदा करने का अवसर भी मिला. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परियोजना के क्षेत्र में ही परिवर्तन करके वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज 2 ने इण्डोनेशिया की ग्रामीण स्वच्छता नीति में परिवर्तन को प्रेरित कर दिया है.

स्रोत: नीना सतीवां, पार्टिसिपेटरी डेवलपमेंट एण्ड कैपेसिटी बिल्डिंग एडवाइजर, (WSLIC 2) इण्डोनेशिया

पाकिस्तान में समुदायिक सक्रियतावादियों के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार

पाकिस्तान के प्रान्तों तथा स्थानीय स्तर से सरकारी कार्यिकों, गैर-सरकारी संगठनों तथा अनुदान देने वाली संस्थाओं के कार्यिकों के द्वारा 2007 में बांग्लादेश का अवलोकनार्थ भ्रमण किया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अपेक्षा से अधिक सफलता का पाकिस्तानी लिए मनहास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और उन्हें स्पष्ट हो गया कि खुले में शौच से मुक्त होने के मार्ग में गरीबी के कारण कोई रुकावट नहीं आती. जबकि इस अभियान के पूरे बांग्लादेश में फैलने के कार्य में गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया जा रहा कार्य बहुत महत्वपूर्ण था यह महसूस किया गया कि गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से इसका प्रसार कराने में पाकिस्तान के क्षेत्रों में दिक्कतें आयेंगी.

इस अनुभव और बोध के आधार पर कराल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क ने निश्चय किया कि सामुदायिक एकजुटता प्राप्त करने के लिये गांव के सक्रियतावादियों का उपयोग एक प्राथमिक संसाधन के रूप में किया जायेगा. जो तरीका अपनाया गया वह मूल रूप से उद्यम विकास का तरीका है. इसके माध्यम से यह प्रयास किया जाता था कि लोगों में एक साथ जागरूकता पैदा हो और वे एकजुट होकर 'खुले में शौच से मुक्त' होने की आवश्यकता महसूस कर सकें.

इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिये कराल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. यह प्रशिक्षण स्थानीय सामुदायिक सक्रियतावादियों को प्रदान किया गया. इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने वाले सभी सक्रियतावादियों को एक अनुभव दिया जायेगा जिसमें वे गैर-सरकारी संगठनों, सरकार और मानवतावादी संगठनों से प्रति गांव के हिसाब से भुगतान प्राप्त कर सकें जिसमें उनके द्वारा ट्रिगरिंग की गई और वे खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

इस तरीके से प्रसार को सुगम बनाने के लिये कराल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क ने ग्राम स्तरीय उप सक्रियतावादियों के लिये एक सत्र के आयोजन की व्यवस्था की है जिन्होंने सफलतापूर्वक किसी गांव को इस प्रकार ट्रिगर किया कि वह पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गया. इन सत्रों में सबसे अधिक सफल रहे सक्रियतावादियों को अपने साथियों के साथ अनुभव बांटने के लिये आमंत्रित किया जाता है. इस व्यवस्था के लिये कराल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क के द्वारा सभी सक्रियतावादियों की सूची का डाटाबेस तैयार किया गया है जिन्होंने गांवों में सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की और उन्हें खुले में शौचमुक्त होने का स्तर प्राप्त करने में सहायता की (गैर-सरकारी संगठनों, सरकारी तथा मानवतावादी संगठनों के लिये संबंधित परामर्शदाताओं के रूप में).

स्रोत: शान्ता खान, कराल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क और मार्क एलनी, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, इस्लामाबाद

गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिये सुझाव:

1. सभी प्रशिक्षकों का मूल्यांकन सावधानी से कीजिये. सभी सुगमकर्ता अच्छे प्रशिक्षक नहीं हो सकते. प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते.
2. चयनित अधिकारियों से अनुरोध कीजिये कि अपने संबंधित प्रशिक्षकों को निश्चित गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण में प्रतिभाग कराने के लिये भेजें.
3. उपयुक्तता, योग्यता, व्यवहार, अभिरुचि और प्रशिक्षण के दौरान कार्य-निष्पादन के आधार पर अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करके उनका चयन कीजिये.
4. चयनित हो जाने के बाद प्रशिक्षकों को सशक्त होना चाहिये और उन्हें गांवों के चयन और गतिविधियों के अनुक्रम और समय का निर्धारण करने के लिये स्वतंत्र होना चाहिये. यदि आवश्यक हो तो इसमें क्षेत्र भ्रमण की गतिविधियों को आगे-पीछे करना भी सम्मिलित है. उदाहरण के लिये यहां प्रशिक्षक के नियंत्रण से बाहर के किसी कारण से चलते ट्रिगरिंग सफल नहीं हो पाती है या प्रतिभागी पूरी बातों को उस समय तक ठीक से नहीं समझ पाते हैं तो पूरानी ट्रिगरिंग पे शिलाभ किया जा सकता है. प्रशिक्षण डिजाइन को बिना पर्याप्त चाहा से आयोजित नहीं किया जाना चाहिये. विशिष्ट अतिथियों को प्रशिक्षण के बीच में बातें रोने के लिये आमंत्रित करने से बचना चाहिये.
5. प्रशिक्षण जब प्रगति पर हो तो अचानक और बिना किसी पूर्व निर्धारित क्रम के निरीक्षण और जांच की जानी चाहिये.
6. यह सुनिश्चित कीजिये कि प्रशिक्षण प्रदान करने वाले अधिकांश केवल प्रशिक्षक ही हों उत्तरदायी न हों वरन् ट्रिगरिंग से पहले, ट्रिगरिंग के दौरान, ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती गतिविधियों में और स्पष्ट रूप से परिभाषित जिले व क्षेत्र के संदर्भ में सभी गतिविधियों के संदर्भ में समान रूप से उत्तरदायी हों. (कुछ मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को पूर्ण समाप्त किया जाता है यदि 25-30 गांवों में ट्रिगरिंग सम्पन्न हो जाये और कोई अनुवर्ती कार्यवाई या भ्रमण न हो तो भी). इसमें प्रशिक्षण के लिये सही प्रतिभागियों का चयन सम्मिलित है जिससे ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियां प्रभावी हो सकें. उदाहरण के लिये गांवों के भूगोल, स्थानीय औपचारिक और अनौपचारिक नेता, जिससे वे अवधारणा और कार्यविधि को ठीक से समझ लें और उसे बेकार न होने दें.
7. कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन रीपोर्टिंग के संदर्भ में परिणामों के आधार पर कीजिये न कि भौतिक उपलब्धियों के आधार पर. इसका अर्थ यह है ट्रिगरिंग के बाद के कार्य-निष्पादन और खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने के आधार पर मूल्यांकन करना न कि की गई ट्रिगरिंग या आयोजित किये गये प्रशिक्षकों की संख्या के आधार पर. सम्पर्कता निर्धारित होनी चाहिये और कम से कम हर 6 माह में होनी चाहिये.

यह उन अधिकारियों के संदर्भ में होनी चाहिये जिन्हें प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये नियुक्त किया गया है. अच्छे प्रशिक्षण, मूल्यांकन और अनुवर्ती कार्यवाई के संकेतकों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- घरों में शौचालय निर्माण की त्वरित प्रगति
- ट्रिगर किये गये गांवों की संख्या के सापेक्ष खुले में शौच से मुक्त गांवों की संख्या का उच्च अनुपात
- स्थानीय नेताओं का उच्च कर सामने आना
- शौचालयों में सुधार, स्वच्छता सीढ़ी में उच्च चढ़ाव
- स्थानीय समुदाय का एकजुट होकर कूड़े-कचरे के प्रबन्धन, जल निकासी, गांव के पर्यावरण की स्वच्छता की ओर अग्रसर होना
- विषयगत सामग्री विकास

अभियान

बांग्लादेश, भारत, इण्डोनेशिया के कुछ हिस्सों तथा अन्य स्थानों पर भी गहन अभियान प्रणाली सिद्ध हुए हैं. भारत में कुछ अभियान दो जिलों के स्तर पर चलाये गये हैं जैसे महाराष्ट्र में जालना, हिमाचल में मण्डी और हरियाणा में पानीपत. सामान्यतया पूरे उप-जिले के लिये खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, उदाहरण के लिये कुलियन व उपजिला (बांग्लादेश), सालुका, विकास खण्ड, पेचायत समिति व ग्राम पेचायत (भारत), या केकामातान (इण्डोनेशिया). इस प्रकार के अभियानों को नीति के स्तर पर समर्थन तथा स्थानीय स्तरों के नेतृत्व और सहयोग की आवश्यकता होती है.

इन स्थानीय अभियानों के मुख्य अवयव निम्नांकित के संयोजन में निहित हैं:

- प्रतिबद्ध स्थानीय नेतृत्व, राजनैतिक भी और प्रशासनिक भी
- विभिन्न स्तरों पर समर्पित कार्यदल
- संगठनों के अन्दर तथा सम्बन्धित सभी विभागों, एवं संगठनों में एक साथ के रूप में काम करने की भावना (सरकार, गैर-सरकारी संगठन इत्यादि)
- स्तर, चाहे सरकारी हो या गैर-सरकारी संगठनों का, अभियान में पूर्ण कालिक कार्य करने के लिये समर्पित है
- धार्मिक नेताओं, राजनेताओं, गांव के अभियंताओं तथा अन्य के लिये अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण
- बच्चे, परिवार के लिये सक्रिय अभिकर्ता के रूप में
- बैठकों का उपयोग - नियमित और विशेष गोले प्रकार की - अभियान पर जोर देने के लिये, प्रगति आगम प्राप्त करने के लिये, अच्छा काम करने वाले व्यक्तियों और समुदायों का सार्वजनिक रूप से सम्मान करने के लिये, समुदायों, स्थानीय नेताओं और सरकार के बीच प्रतिबद्धता पैदा करने के लिये
- नियमित रिपोर्ट करने की प्रणाली
- खुले में शौच से मुक्त होने का दावा करने वाले हर समुदाय का सत्यापन

- खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव का आयोजन (आगे देखिये)
- संचार माध्यमों का उपयोग - रेडियो, वीडियो, टेलिविज़न, समाचार पत्र, टेलिविज़न

अभियानों के दौरान रिपोर्ट में बढ़ा-चढ़ा कर बातें लिखी जा सकती हैं और सूखे रास्ते हो सकते हैं, विशेषकर तब जब लक्ष्य निर्धारित हों और लक्ष्य प्राप्त करने पर पुरस्कार की व्यवस्था हो. इससे बचाव करने या इसे न्यूनतम करने के लिये शायद सबसे अच्छा उपाय है सख्ती के साथ सत्यापन और प्रमाणीकरण करना. दूसरे मान्यताप्राप्त और स्वीकृत निजी ग्रुपों के स्वाभाविक नेताओं को यह भूमिका देनी चाहिये. विकल हुए समुदायों की संख्या सत्यापन की गुणवत्ता का सबसे अच्छा संकेतक है. यदि कोई भी गांव विकल नहीं हुआ तो सत्यापन में जरूर कुछ गड़बड़ी समझी जानी चाहिये.

अभियान - कई संगठनों और कर्ताओं के साथ

बांग्लादेश में हाथीबन्ध उपजिला पहला उपजिला था जिसे खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाना था. प्रशासनिक मुखिया के नेतृत्व में तथा सभी राजनैतिक दलों के समर्थन से गहन अभियान चलाया जा चुका था. अन्य मुख्य कारक थे स्थानीय शासन के साथ मिल कर काम कर रहे गैर-सरकारी संगठन के स्टाफ की प्रतिबद्धता - पहाड़ बांग्लादेश और रिसर्टी, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को समर्पित गैर-सरकारी संगठन, स्थानों का प्रशिक्षण और उनके द्वारा मस्जिदों से दी गई नसीहत; हर स्तर के कार्य दल; विभिन्न संगठनों के स्टाफ के द्वारा गांवों का निरीक्षण तिथियों पर एक साथ मिल कर श्रमदान; नियमित बैठकों के माध्यम से रिपोर्ट प्राप्त करना (जिसमें पीछे रह गये समुदायों को सूचना पढ़ सकता था "अच्छा तो आप अभी भी यू सा रहे हैं"); बच्चों के मंच और सक्रिय भागीदारी; खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर के सत्यापन के लिये कई निश्चित दल ("जो लोग आयोजित नहीं हैं वे भी आ सकते हैं"); और जिलाधीश के द्वारा प्रमाणीकरण. जनवरी 2006 में उपजिले के खुले में शौच से मुक्त हो जाने के स्तर को प्राप्त कर लेने के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव में भाग लेने के लिये लगभग 10000 लोग आये. लोग उस उत्सव को आज भी याद करते हैं और सोचते हैं कि वह कितना अच्छा समय था. अभियान का ध्यान अब शौचालयों में सुधार की ओर चला गया है और समुदाय निर्धारित रूप से स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर की ओर बढ़ रहा है. अब ध्यान स्कूलों की स्वच्छता तथा परिवारों को स्वास्थ्यकर स्वच्छता की शिक्षा देने पर है.

भारत के पश्चिम बंगाल प्रांत की बाकुरी ग्रामपंचायत में आयोजित विज्ञापन बोर्डों में खुले में शौच से मुक्त समुदाय द्वारा गर्व के साथ अपने क्षेत्र के स्वच्छता स्तर की घोषणा की गई. इससे स्तर की कई सीमित बोर्डों पर प्रश्न पड़ा कि वे भी खुले में शौच से मुक्त होने के लिये प्रयास करें.

गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन

समुदायों, वार्डों, अन्य प्रशासनिक इकाइयों, उपजिलों एवं जिलों के बीच गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है.

यह दूसरी ट्रिगरिंग की तरह हो सकता है. इसे करने के कुछ तरीके यह हैं:

- बहुत सफल समुदायों के गांवों के भ्रमण को प्रोत्साहित कीजिये. इन्हें बहरी व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं के रूप में प्रयोग में लाइये. आसपास के गांवों के लोगों के द्वारा भी बहरी लोगों को आये हुए देखा जायेगा और फिर वे भी अपनी अंतड़ी से देखने के लिये आयेंगे.
- सफल और प्रतिष्ठित स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जो कि अन्य समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर कर सकें और सहयोग कर सकें. ऐसे सरकारी अथवा गैर-सरकारी संगठनों का पता लगाइये जो कि उन्हें पता लगा, पहचान, निर्देश आदि से सम्बन्धित गवाहाना सहायता कर सकें. यह सब करते समय समुदायों में सहज ही चैन नहीं अवलोकन और यह एक जोश को कम करने की गुंजाइश नहीं कीजिये.
- समुदायों और प्रशासनिक इकाइयों में प्रगति अवलोकन प्राप्त करने के लिये बैठकों का उपयोग कीजिये, प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये और प्रतियोगियों से उनकी चेतावनी और निर्धारित लक्ष्यों के विषय में जानकारी लीजिये.
- इन बैठकों में सबसे सफल काम करने वाले से पूछिये कि क्या वे उन लोगों से सहयोग लेंगे जो बेहतर काम कर रहे हैं. गर्व की भावना के कारण बहुत सा लोग मना करेंगे परन्तु यह उन्हें बेहतर करने के लिये उत्साहवर्धक अवसर, अनुभवों और विधियों के विषय में विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित कीजिये.

विशेषज्ञों (पैथियनों) से फर्क पड़ता है

दक्षिण सुमात्रा के मुआरा एनिम के उपजिले लैम्पाक के स्वास्थ्य केन्द्र की प्रमुख डॉ. पुरनेम अगस्तीन ने स्थानीय प्रयास का नेतृत्व किया जिससे पूरा उपजिला खुले में शौच से मुक्त हो गया. डॉ. अगस्तीन, जो कि स्वयं एक दन्त चिकित्सक हैं, ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के एक कोर ग्रुप का गठन किया और दूसरा सहित अपने पूरे स्टाफ को प्रशिक्षित किया. इस दल ने ग्राम समुदाय द्वारा गठित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता दलों को प्रशिक्षित किया तथा 'सफाया सप्ताहान' के लिये सहयोग प्रदान किया. डॉ. अगस्तीन ने ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की सभी गतिविधियों में दलों की सभी शाखों को सम्मिलित कर लिया. उनके इन प्रयासों के फलस्वरूप ही उपजिले के 18 में से 16 गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो गये और शेष दो गांव भी इस स्तर को प्राप्त करने के बहुत करीब आ चुके थे. डॉ. अगस्तीन को उनके इन प्रयासों के लिये इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया और सबसे अच्छे पुरोकेसमास (उपजिले के स्वास्थ्य केन्द्र) के मुखिया के रूप में उनका अभिनन्दन किया गया.

- संचार माध्यमों को सूचित कीजिये - स्थानीय रेडियो, समाचार पत्र, टेलिविज़न - और उन्हें अनुभवों से सम्बन्धित कथाएं उपलब्ध कराइये. उन सभी बड़ी बैठकों में उन्हें आमंत्रित कीजिये जिनमें समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रमुख रूप से परिचर्चा होनी है.
- प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति कलेक्टर, राजनेताओं, गैर-सरकारी संगठनों के स्टाफ, निजी क्षेत्र के लोग, स्वाभाविक एवंसिद्धान्त के मरगम, और अन्य क्षेत्रों के पैथियनों की पहचान कीजिये और उनके साथ मिल कर काम करने के लिये प्रयासरत रहिये.
- खुले में शौच से मुक्त घोषित करते समय उत्सव का आयोजन कीजिये जिसमें स्वाभाविक नेताओं, समुदाय के उदार राजियों, समुदायिक अभिभावकों और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सेवकों का सम्मान कीजिये.

एक बकरी के लिये प्रतियोगिता

पूर्वी जावा के बोन्डोवोसो जिले के गांव सुमबरकोटेग के मुखिया ने एक पुरस्कार की घोषणा की और गांव के गुटों के बीच खुले में शौच बन्द करने के लिये एक कोटे की प्रतियोगिता शुरू कर दी. उन्होंने सबसे पहले खुले में शौच से मुक्त होने वाले गुटों को एक बकरी इनाम में देने की घोषणा कर दी. यह पुरस्कार मरहाब का प्रतीक था. बकरी इनाम में देने की घोषणा ने प्रतियोगिता को बहुत जीवन्त कर दिया.

स्रोत: चार्ल्स इमानुएल, इमानु एस पी, ई एस पी, इण्डोनेशिया

भारत बांग्लादेश ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती बैठक में स्वच्छता की निर्धारित सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं को आमंत्रित किया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के बाद जब शौचालयों की निर्धारित सामग्री की मांग बढ़ती है तो उपलब्धता के छोटे तथा उपयोगकर्ताओं के बीच सम्पर्क सामान्य स्थापित करना महत्वपूर्ण हो जाता है.

शौचालय निर्माण की सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ाना दीजिये (अध्याय 4 भी देखिये)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से बहुत तेजी से शौचालय निर्माण सामग्री की मांग पैदा हो जाती है. बहुत से लोग एक गड्ढे वाले सरल शौचालय बना लेते हैं और प्लास्टिक, टिन तथा अन्य सामग्री का उपयोग ऊपरी संरचना बनाने के लिये कर लेते हैं. अन्य लोग उच्चतर स्तर के और अधिक टिकाऊ शौचालय की इच्छा कर सकते हैं. साथ ही जो लोग पहले सरल शौचालय बनाते हैं वे भी सुधरे शौचालय को निर्मित करना चाह सकते हैं और स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ने के लिये प्रयासरत रहते हैं. जब ऐसा होता है, विशेषकर जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का तेजी से विस्तार होने लगता है, तब सामग्री की आपूर्ति बहुधा मांग से बहुत पीछे रह जाती है.

आपूर्ति को बढ़ाना देने और उपलब्धता बढ़ाने के लिये कई काम किये जा सकते हैं. इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे गांव में आपूर्ति के छोटे का पता लगायें जिससे सामग्री को गांव में प्राप्त किया जा सके और स्थानीय स्तर पर बेचा जा सके. उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये वे गांव में सामग्री प्राप्त कर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराये.
- समुदाय की बैठकों में स्थानियों को आमंत्रित कीजिये.
- उन समूहों के साथ सहयोग कीजिये जो गांव में सामग्री का प्रबन्ध करके समुदाय को सस्ते दामों पर बेचते हैं (उदाहरण के लिये पानीपत रूरल सेनिटरी मार्ट - बांग्ला देखें).

करल सैनिटरी मार्ट, हरियाणा के चरखी जिले की अभिनव पहल

यह जिला अपेक्षाकृत रूप से अधिक समृद्ध है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विस्तार इस जिले में बहुत तेजी से हुआ जिसके कारण स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री और गतिविधियों की मांग बहुत बढ़ गई. 10-20 लाभिकयों से मिलकर बने 5 स्वयं सहायता समूहों को स्वच्छतीय शौच भागीदारी तथा किफायत रहित दुकान उपलब्ध करा दी गई (करल सैनिटरी मार्ट नाम से) जिससे पैर तथा अन्य सामग्री निर्माताओं से थोक में क्रय करके लाई जा सके. गांव की जरूरत एवं स्वच्छता समिति द्वारा गांव के लिये पूरी सामग्री यहां से क्रय कर ली जाती है और गांव पहुंचा दी जाती है. इस व्यवस्था के कारण सामग्री के मूल्य में काफी कमी आ गई है और मार्ट को भी कुछ साधारण सा मुनाफा भी हो जाता है. मार्ट के द्वारा गतिविधियों के साथ मिल कर शौचालयों का निर्माण भी कराया जा रहा है जिनमें से कई तो काफी कम लागत के शौचालय है.

स्रोत: डॉ. अमित अग्रवाल, अतिरिक्त उपायुक्त, चरखी

- स्थानीय उद्यमियों, सामुदायिक संगठनों, युवा समूहों, स्वाभाविक नेताओं तथा अन्य को लिंग, सलैम जैसी स्वच्छता सामग्री का निर्माण करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये (यदि उपयुक्त हो तो).
- राजनीतिज्ञों और गांव के अभिभावकों को प्रोत्साहित कीजिये और ठेठा सैनिटेशन एण्ड मार्केटिंग प्रोजेक्ट के आपूर्तिकर्ताओं से उनका सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करवा दीजिये.(बॉक्स देखें)

अनुभव से सीखिये

यही बात है जहां सीखने, अभिनव पहल करने और परिवर्तन करने की. सुगमकर्ता के रूप में किये गये कार्य और समुदायों की प्रतिक्रियाओं के अनुभवों को समेकित कीजिये और उन पर पुनर्विचार कीजिये. यह विचार मन्थन स्थानीय नेताओं, समुदायों के सदस्यों तथा अन्य के साथ मिल कर कीजिये.

नई पहल वाले अन्य संगठनों, क्षेत्रों और देशों से सीखिये. भविष्य की कार्यविधि को बेहतर बनाने के लिये विभिन्न अनुभवों से निष्कर्ष निकालिये. जहां भी संभव हो सीखी गई बातों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्य समुदायों और क्षेत्रों में प्रसार और विस्तार के लिये उपयोग में लाइये. सफल समुदायों के अनुभवों को सीखने का आधार बनाइये. उन स्थानों के अनुभवों से भी सीखिये जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत ही नहीं हो सकी. यदि आपके लिये सम्भव हो तो अपने अनुभवों को स्थापक रूप से प्रस्तुत करके अपने कार्य के प्रभाव का दायरा बढ़ाइये.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के चार

यह सिद्ध हो गया है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं समुदाय आधारित अन्य पहल के लिये एक सशक्त आधार प्रदान करती हैं. खुले में शौच से मुक्ति पाने स्वच्छता सीढ़ी में ऊपर की ओर प्रगति के लिये एक उत्कृष्ट आधार है जिसके कारण स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है और एक स्वस्थ पर्यावरण सृजित हो जाता है और आजीविका के लिये आधार मिल जाता है.

स्वच्छता सीढ़ी को चार्ट में दर्शाया गया है. खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के बाद आने वाली गतिविधियों में सम्मिलित हैं हाथ धोने की व्यवस्था, बाढ़ से अप्रभावित रहने वाले उंचे हुए शौचालय, सेप्टिक टैंक सीटेज, कम्पोस्टिंग शौचालय, स्नानघर, जल भण्डारण और इसी प्रकार के कई सुधारों को प्रोत्साहित करना.

जब गांव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त स्तर पा लेने के बाद समुदाय तथा परिवारों के स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है तब धीरे-धीरे शौचालयों की गुणवत्ता में सुधार की ओर सहज सिलसिले से आगे है. ट्रिनीदाद के बाद ब्राजील में बनाये गये कम लागत के एक पहले वाले शौचालयों की गुणवत्ता सुधारने के लिये निर्माण करने का अभिनव परिवर्तन को मिल जाता है. परिवारस्तरीय स्वच्छता की निर्माण सामग्री की मांग में वृद्धि बनाये रहने स्थानीय समुदाय के साथ या समुदाय की जाती है. ऊपर दिए गये चित्र में गांव स्तर के एक कम्पोस्ट गुट के एक गांव के एक स्वच्छता परिवार को दिखाया गया है जो कि कार्य चल इकोसैन के लिये सीमेंट के जार बनाते थे. उन्हें बोधन अपने कार्यों में विभिन्न तरह की आवश्यकता की दिखने में शौचालयों के लिये पाइप, पैर और टिन प्लेट का बना सकें और खुले में शौच से मुक्त होने के कारण स्वच्छता की निर्माण सामग्री की बढ़ती हुई मांग को पूरा कर सकें. परिवार की आय पांच गुना बढ़ गई और इससे उनकी खुशी का ठिकाना न रहा.

इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता विपणन परियोजना

इस परियोजना को नेदुस फाउण्डेशन से सहायता प्राप्त हुई है. यह इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में चल रहा है. इस परियोजना के तीन जुड़े हुए अवयवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता भी एक अवयव है. अन्य दो अवयव हैं स्वच्छता सामग्री विपणन और उपयुक्त वातावरण सृजन. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता सामग्री के विपणन को परस्पर एक दूसरे को सुदृढ़ करने वाला माना जाता है और विस्तृत रूप से फैल रहे स्वच्छता सम्बन्धी और स्वास्थ्यकर व्यवहार को बनाये रखने तथा सम्वर्धित करने के लिये आवश्यक सामग्री जाता है. स्वच्छता सामग्री विपणन खुले में शौच से मुक्त हो गये गांवों में सृजित मांग को और आगे ले जाता है तथा स्थानीय उद्यमियों के विकास को बढ़ावा देता है तथा बाहरी उद्यमियों के साथ सम्पर्क सम्बन्ध को सुदृढ़ करता है. इससे बाजार संतोष और उत्पादन तथा बाजारों के विकास को बल मिलता है. उपयुक्त वातावरण सृजन का सम्बन्ध स्वच्छता से जुड़ी संस्थाओं से है जिनका दायित्व है स्थानीय निकायों के ढांचे में सुधार और राष्ट्रीय नीतियों तथा रणनीतियों में वांछित परिवर्तन जिससे स्थानीय स्वच्छता बाजारों में मांग और आपूर्ति की शक्तियों का बिना रुकावट के विकास हो सके और बाजार पर प्रभाव डालने के प्रयास के दौरान प्राप्त अनुभवों से उपयुक्त सीख ली जा सके.

स्रोत: डॉ. नीलांजना मुखर्जी, कन्सल्टेन्ट, इन्सु एस पी - ईएचई, जकार्ता, इण्डोनेशिया

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एकजुटता से फसल संरक्षण उत्कर्ष का निर्माण: एक समुदाय संचालित पहल

बांग्लादेश के किशोरगंज भूविषम में, जहां हर वर्ष बहुत बड़े क्षेत्र की धान की फसल बाढ़ के कारण नष्ट हो जाती है, कई समुदायों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया गया. जो समुदाय पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये थे उनमें बहुत सुदृढ़ सामाजिक एकजुटता विकसित हो गई थी तथा आपस में सम्पर्क सूत्र भी स्थापित हो गये थे. कम-से-कम 17 जगहों के स्वाभाविक नेताओं को 'कोशा' नामक संस्था के द्वारा फसल संरक्षण के विषय में प्रशिक्षित किया गया. स्वाभाविक नेताओं के रुझान में पूर्व के तथा वर्तमान के भूविषम परिवार अध्यक्षों के द्वारा समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की जाने वाली पहल के लिये सहयोग करने का आश्वासन दिया गया. 10 गांवों के ग्रामवासी एकजुट हो गये और उन्होंने अपने-अपने इलाकों के लिये उत्कर्ष संरक्षण समितियां गठित कर दीं जिससे उनके गांवों से होकर गुजरते हुए 5 कि.मी. लम्बे उत्कर्ष की मरम्मत की जा सके. समुदायों ने धन इकट्ठा किया. जिनके पास बड़ी जमीनें थीं उन्होंने दान के रूप में धनराशि दी. दो सप्ताहों में ही 2379 डॉलर इकट्ठा हो गये. समुदायों के द्वारा उपकरणों की व्यवस्था की गई. कटाने और ढोलाने के रूप में प्रयोग किये जाने के लिये जानवर उपलब्ध कराये गये. गरीबों और भूमिहीनों के द्वारा श्रम के माध्यम से योगदान किया गया. एक उत्कर्ष का सा मरम्मत था. अन्तिम रूप से समतल करने का काम केयर संस्था के काम के बदले अनाज कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया. भूविषम परिवार के सदस्य हबीबुर रहमान के अनुसार समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की गई इस पहल ने सबको एक दूसरे के बहुत नजदीक ला दिया और समुदायों के बीच एक ऐसा मजबूत भाईचारा और सौहार्द सृजित कर दिया जो पहले कभी नहीं था.

कृषि स्वयंसेवी आलाउद्दीन ने कहा, "हमें याद नहीं है कि हमने पहले कभी भी धान की इतनी अधिक फसल प्राप्त की होगी जितनी उत्कर्ष की मरम्मत के बाद पिछले वर्ष हमें मिली. इसने भूविषम परिवार नेतृत्व के दो समुहों के बीच चलने वाली प्रतिद्वन्द्विता को समाप्त कर दिया, भाइचारे को मजबूत कर दिया और सम्पन्न लोगों के द्वारा किये जाने वाले शोषण का न्यूनीकरण कर दिया." कुछ ग्रामवासियों ने टिप्पणी की कि गांव के बहुत गरीब अधिक लोगों को काम की तलाश में शहर नहीं जाना पड़ेगा. केवल एक वर्ष की अच्छी फसल के कारण परिवारों के स्तर पर खाद्य सुरक्षा की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है.

स्रोत: मोहम्मद कमरुज्जमां, प्रोजेक्ट ऑफीसर, एजुकेशन प्रोग्राम, कोशा, बांग्लादेश, ढाका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से खाद्य सुरक्षा की ओर

इथियोपिया के आर्थोमिया के पास स्थित उलीटाना बोकोल गांव में अक्टूबर 2006 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार काफी पीने के आयोजनों के माध्यम से होने लगा जहां जिन परिवारों ने अपने इलाके को स्वच्छ बना लिया था वह दूसरों को दिखाते और बताते कि उन्होंने यह कैसे किया. पहले चार घरों के मालकों ने अपने आप शौचालयों के लिये गड्ढे खोदे परन्तु लगभग 26 परिवारों के लिये उन्होंने समुदाय द्वारा एकजुट होकर काम करने की देसी पारम्परिक विधि को पुनर्जीवित कर दिया जिसे वे काफी लम्बे समय से भूल गये थे. ट्रिगरिंग के कुछ माह बाद ही गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गया. उनका एलेट बाजार "आर्रे" (स्थानीय भाषा में आर्रे का मतलब मानव मल) से मुक्त हो गया. इस उपलब्धि को पाने पर लोगों को यह समझ में आया कि समूह बना कर काम करने से वे ज्यादा अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं.

सहभागी समीक्षात्मक विश्लेषण के दौरान महिलाओं को समझ में आ गया कि देसी प्रणाली का प्रयोग करके वे गांव में ऋतु विशेष में होने वाली भूख की समस्या को समाप्त कर सकते हैं. उन्होंने अपने एलेट बाजार के पीछे के लिये खाद इकट्ठा करनी शुरू कर दी. एलेट को भोजन के लिये तैयार करना एक समय-साध्य काम है परन्तु देसी का प्रयोग करके वे यह सुनिश्चित कर सकते थे कि खाद्य सामग्री की कमी के समय कोई भी परिवार भूखा न रहने पाये.

उन्होंने पास के एक गांव, आगा हाइजो, में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग कराने का प्रस्ताव भी किया जहां 70 परिवार बसते थे.

उलिताना बोकोल के समुदाय के द्वारा यह रिपोर्ट सोलोमन केबेडे और सोफिया मैकडोनल किस्टीन को इथियोपिया में जुलाई 2007 में आयोजित सहभागी समीक्षा बैठक (आरपीआई) के दौरान दी गई.

देश में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सुलभता होने के बाद बहाना नगर नहीं, कालीमुहार, जैसे ग्राम वाले स्थानीय के पैर पुते, भारत के किसी क्षेत्र के प्रतिनिधि के द्वारा दिखाए और लिखित किये गये. इस प्रकार के बन गाना पैर (पे. 100-200) के नमूने इथोपिया और अफ्रीका के अन्य देशों को भेजे जा रहे हैं.

पेंगा मोंगा, इथियोपिया में एक समुदाय के द्वारा एक बाल ग्राम होने के अभिनय गेम का विकास किया गया. प्रेरणा स्थानीय के दिलों का प्रयोग रोटी को साझ किया गया जिससे शौच के बाद साबुन से हाथ धोने का सके.

पारिवर्तक अभियान का बीजारोपण और सहयोग

बहुत अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अपने आप फैलने वाले अभियान का स्वरूप धारण कर ले या जिसके लिये बाहर से बहुत कम सहयोग की आवश्यकता हो. जिस आदर्श को लक्षित करना चाहिये वह तो यह होगा कि यह समुदाय संचालित प्रसार और विस्तार प्रक्रिया बन जाये. इसके लिये देखिये कि क्या आप स्थानीय नेताओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं तथा उन्हें सक्षम बना सकते हैं जिससे वे सुगमकर्ता के रूप में आगे चलें और अन्य समुदायों में ट्रिगरिंग कर सकें तथा लगातार प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान कर सकें.

यहां अवसर है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय स्तर पर कम लागत के साथ विस्तार और प्रसार का. जहां शासी अधिकरण, सरकारी विभाग, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन अपने स्वच्छता कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लेते हैं और स्थानीय सशक्तिकरण के मूल सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं करते हैं, या इसका प्रयोग स्थायक आर्थिक योजनाओं या स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये एक सुलभता के रूप में करते हैं उन्हें यह याद रखना चाहिये कि समुदायिक परामर्शदाता और सुगमकर्ता सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होंगे.

स्थानीय लोग ही सबसे अच्छे सुगमकर्ता सिद्ध होते हैं जिनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अपने ही समुदाय में सुधार काम कराने के अनुभव से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सीखा गया है और जिन्होंने "शिक्षा" देने की आदत विकसित नहीं की है. बार-बार ऐसे अनुभव सामने आये हैं कि प्रेरित और जोश से भरे स्थानीय नेताओं के द्वारा पास के गांवों में जाकर सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की गई है. परन्तु यह अनुभव वहीं तक सीमित रह गये.

खुले में शौच समाप्त करने से खाद्य सुरक्षा तक

बांग्लादेश के नवाबगंज जिले के गरीबतम गांवों में से एक जालालपुरी, ऋतु विशेष में प्रतिवर्ष आने वाले खाद्य संकट - मोंदा - के प्रकोप से पीड़ित था जिसके लिये यह क्षेत्र कुख्यात है. मोंदा के दौरान गरीबतम परिवार भूख से मरने लगते थे. इसलिये वे अन्यत्र पलायन कर जाते थे या साकारी खाद्य वितरण की मदद पाने की कोशिश में जुटे रहते थे. मोंदा से कुछ समय पहले अक्टूबर 2004 में, गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. खुले में शौच से मुक्त होने के उत्साह और आनन्द के बढ़ने के साथ समुदाय की एकजुटता में भी वृद्धि हो गई. समुदाय के सदस्य एकजुट होकर अपनी समस्याओं का समाधान अपने स्तर से ही कर लेने के प्रति प्रतिबद्ध हो गये. खेतों वाली हालत वाले अब पहले की अपेक्षा अधिक उदार हो गये और गरीबों तथा भूमिहीनों के प्रति उनकी चिंता बढ़ गई तथा वे उन्हें अधिक सहायता और सहयोग देने लगे. 'मध-आलू', एक पारम्परिक फसल जिसे लोग लगभग भूल ही चुके थे, की पहचान की गई और पाया गया कि इससे खाद्य समस्या का हल हो सकता है. सभी परिवारों ने इसे अपने घरों के आसपास और घरों की बगीचों में उगाने का निर्णय किया. एक सप्ताह के अन्दर ही लगभग सभी परिवारों के द्वारा 4000 से अधिक गड्ढे खोद डाले गये और जन अभियान की तरह मध-आलू के बीज बो दिये गये. भूमिहीन परिवारों ने अपने घरों में 4-5 पौधे लगाये और 8 माह के बाद हर पौधे से उन्हें 3-4 किलो आलू मिला. जिसके बाद अपने खेत से उन्होंने अपने अंकवारों और अन्य पौधों की कतारों के बीच की जगहों में गरीबों को मध-आलू बोने दिया. अगली मोंदा ऋतु बिल्कुल भिन्न हो गई और बड़ी मात्रा में मध-आलू की उपज हुई. खूब खाद्य गया और बाजार में बेचा भी गया. आज 2007 में जालालपुरी केवल 25 टन से अधिक मध आलू ही उत्पादित नहीं करता वरन् 10 मीट्रिक टन बीज की आपूर्ति भी अन्य गांवों को करता है और मोंदा का संकट पूरे तौर पर समाप्त हो गया.

प्रथम खुले में शौच से मुक्त होने का सम्मान प्राप्त कर लेने के तुरन्त बाद बांग्लादेश चाकला यूनियन, कालिगंज उपजिले के दिलपुर और बोकाली के समुदायों को ज्ञात हो गया कि इलाके में बागनेपुर उपखण्ड के टीलों को ऋतु के द्वारा होने वाले नुकसान से बचाने विशेष आवश्यक है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के दौरान तथा इसके बाद किसी सफलता के निर्धारित पूर्ण एकजुटता की स्थिति को आजमाते हुए इलाकों के कभी भी विस्मृत हो जाने वाले टीलों पर बसे लोगों ने अपने स्थायित्व प्राप्त का प्रयोग करते हुए ऐसी ही योजनाओं का निर्माण कर दिया. यह विशिष्ट योजनाएं अनुकरणीय हैं और बाकि टीलों के आकार के अनुसार बढ़ाई जा सकती हैं. इन योजनाओं को बनाने में योगदान का प्रयोग किसुपुर नहीं किया गया. आश्चर्यजनक आकर्षण कि इस प्रकार की एक विशेषीकृत सस्ती योजना को लागत केवल बांग्लादेश द्वारा बनाई जा रही योजना की लागत के पांचवें हिस्से के बराबर है.

प्रथम कार्यरत चुनिन्दा, कालिगंज जिला, बांग्लादेश में कई खुले में शौच से मुक्त हो गये समुदाय एक साथ जुट गये और उपजिले प्रशासन को मुनासिब करने के लिये सम्मे उपखण्ड का निर्माण किया जिसमें उपरोक्त चार को एकमात्र फसल को इलाके क्षेत्र की मानिक बाढ़ की विभीषिका से बचाया जा सके. छायांकन: कमलचन्द्र, केयर बांग्लादेश

बायें और प्रथम बांग्लादेश के नवाबगंज जिले के जालालपुरी गांव के स्थानीयक्षेत्र ऐसे 'मध आलू' की फसल काट कर दिखाते हुए जिसे उपजीने बड़ी मात्रा में बीज का विकल्प के हर वर्ष आने वाली 'मोंदा' ऋतु विशेष की भुखमरी और खाद्य असुरक्षा का मुकाबला कर सकें. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गांव में पूर्ण सफलता के कारण ही यह पता हो सकी. विशिष्ट प्रकार के मध आलू जो कि इस क्षेत्र में बहुत अच्छी फसल देते हैं के कारण ही यहां बहुत बड़ा अन्तर पड़ा यहां समुदाय के सभी सदस्य गांव के भुखमरी को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहते थे.

प्रथम और सबसे ऊपर के परिसर संगठन द्वारा ये कामगारों की निजीकरण कोठरियों गरीबतरिका के समुदाय की महिलाओं ने निर्माण किया है अपनी कोठरियों में सभी 20 दिन घरों के सदस्यों को सब्जियां उगा देती और सोकेन्द्र के महिलाओं निर्मित कर देते जिसमें गाय, बछड़े, कुत्ते-बच्चों, और गरीबों का प्रयोग पीने के पानी के स्रोत के पानी और न होने वाले. गरीबतरिका के द्वारा उन्हें सुख ईंट-चूना उपलब्ध करा दिये गये और दोन सभी व्यवस्थाएं उपजीने स्वयं की. यह सब खुले में शौच से मुक्त स्वा पाने के दो माह के भीतर हुआ. यह सबसे पहली मोंदा घटती भी जिसे खुले में शौच से मुक्त होने का दौरान प्राप्त हुआ. एक वर्ष के अन्दर ही गरीबतरिका इलाके की सभी 12 मोंदा कोठरियां खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गईं.

समुदाय संचालित नाटक के माध्यम से प्रचार

केन्द्र की विशेष परियोजना के अन्तर्गत उत्तर पश्चिम बांग्लादेश में खुले में शौच से मुक्त गुटों की सहायता की जाती है कि वो नाटक के माध्यम से पड़ौस में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करें. स्थानीय सूत्रधारकर्ता पहले एक गुटने में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को दिशा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं. जब कुछ सप्ताहों में यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त कर लेता है तब एक सभा का आयोजन किया जाता है जिसमें अन्य गुटों के लोगों को बुलाया जाता है. समय शाम का रखा जाता है. विशेष के द्वारा व्यवस्था सम्बन्धी सहयोग प्रदान किया जाता है जैसे प्रोजेक्टर और ध्वनि प्रसारण प्रणाली, लेकिन पूरे कार्यक्रम का आयोजन और संचालन गुटने तथा उनके स्वाभाविक नेताओं के द्वारा ही किया जाता है (उनमें से अधिकतर गरीब वर्ग के होते हैं). यहाँ लोग मंच पर खड़े होते हैं और दर्शकों को बताते हैं कि उन्होंने किस प्रकार खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त किया. केन्द्र के सूत्रधारकर्ताओं के द्वारा प्रक्रिया के संदर्भ में किसी प्रकार के निर्देश नहीं दिये जाते हैं. उनके द्वारा समुदाय के सदस्यों को कार्यक्रम को अपने ढंग से तैयार करने और संचालित करने के लिये प्रेरित मात्र किया जाता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता द्वारा सृजित एकजुटता को इस प्रकार के कार्यक्रम और सुदृढ़ कर देते हैं तथा स्वाभाविक नेता एवं अन्य लोग अपनी उपलब्धि पर गर्व करते हैं और उसकी खुशी मनाते हैं.

ग्रामीण बांग्लादेश के लगभग सभी समुदायों में कोई न कोई स्वाभाविक कवि होता है जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर गीतों की रचना कर सकता है और कोई न कोई गायक भी होता है जो कि इसे मंच से गाकर सुना सकता है. इसी प्रकार ऐसे अन्य लोग हैं जो कि स्वच्छता पर जागरी से नाटक लिख सकते हैं जिसे स्वाभाविक नेताओं, किसानों और किसानियों के द्वारा मंच पर अभिनीत किया जा सकता है. सामान्यतया नाटकों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया के सामने आने वाली चुनौतियों का हास्य के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है. एक समुदाय द्वारा नाटक में एक खास नाटक को प्रस्तुत किया गया. यह एक ऐसे समृद्ध व्यक्ति की कथा थी जो कि शौचालय नहीं बनवा चाहता था. नाटक में दिखाया गया कि उस अमीर आदमी की कन्या के विवाह के लिये एक वैवाहिक वर का प्रस्ताव लेकर आया और अपने साथ वर पक्ष की ओर से कुछ अतिथियों को भी लाया. एक अतिथि को तत्काल शौचालय जाने की जरूरत महसूस हुई. लेकिन अमीर आदमी के पास शौचालय था ही नहीं. इस सन्दर्भात्मक स्थिति को हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया जिससे दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये. इस सन्दर्भात्मक स्थिति के बाद अमीर आदमी ने स्वाभाविक नेता को बुलाया और शौचालय बनाने के लिये उसकी सहायता करने को कहा.

इन अवसरों से जुड़ा मनोरंजन और उत्सव पड़ोसियों को प्रेरित करता है कि वे भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया अपने लिये प्रारम्भ करें.

स्रोत: असमाउल हक, टीम लीडर, एसडीयू, केयर, बांग्लादेश

प्रचार सहज भी हो सकता है परन्तु अनुभव से यह पता चलता है कि सहयोग और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है. गैर-सरकारी संगठनों के लिये सहयोग और सहायता प्रदान करने के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और विस्तार करने के लिये बहुत बड़ा अवसर है.

केन्द्र के किलिकि जिले में सहज प्रचार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सफलतापूर्वक जाटीकुरी गांव में पहाड़ इन्टरनेशनल की टीम के द्वारा दिशा दिया गया. अनुवर्ती भ्रमण के दौरान स्थानीय मुखिया के द्वारा की गई घोषणा से वे सभी आश्चर्यचकित रह गये. उन्होंने बताया कि गांव की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को दिशा देने वाली टीम उपजिले के सभी गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करने जा रही है और इसके लिये भ्रमण की तिथियां निर्धारित की जा चुकी हैं. इस अभिप्रेरणा का एक कारण यह था कि अन्य गांवों के कारण जाटीकुरी गांव का जल प्रदूषित हो रहा था.

स्रोत: मैमुदार खुरशेदी, प्रोग्राम सपोर्ट मैनेजर, पहाड़ केन्द्र, मिरपुर.

सामुदायिक सूत्रधारकर्ताओं की सहायता करने के लिये उपलब्ध विकल्पों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं:

- मौखिक प्रोत्साहन और सम्मान
- इस हस्तपुस्तिका में दिये सुझावों तथा स्थानीय अनुभव पर आधारित लघु प्रशिक्षण
- सामुदायिक सूत्रधारकर्ताओं के द्वारा अपनाई गतिविधियों का अभिलेखीकरण तथा अनुभवों का बंटवारा
- स्वाभाविक नेताओं को ही अपनी कार्यनीतियां जिससे अनुभवों का आदान-प्रदान हो सके और प्रचार की रणनीति तैयार की जा सके.
- एक वैबसाइट का निर्माण जिसमें उन सहायिकाओं स्वाभाविक नेताओं के नाम, फोटो और सम्पर्क सूत्र हों जो कि सामुदायिक परामर्शदाता और सूत्रधारकर्ता के रूप में उपलब्ध हो सकते हैं.
- ऐच्छिक भत्ता, पारिश्रमिक, मानदेय, पारा के लिये सुविधा या भत्ता आदि के रूप में थोड़ी सी सहायता प्रदान करना. ऐसा करते समय यह ध्यान रखना होगा कि सहायता इस प्रकार की जाये कि लोगों को प्रोत्साहन और सहयोग मिले परन्तु उनके जोश और प्रतिबद्धता को कोई ठेस न पहुंचे.

पाकिस्तान में सहज प्रचार और विस्तार के अधिक औपचारिक, परन्तु विकेन्द्रीकृत तथा स्व-संचालित स्वरूप का अनुसरण किया जा रहा है जहां 70 स्वाभाविक नेताओं को प्रशिक्षित किया गया है (पाकिस्तान में समुदायिक सक्रियतावादियों के माध्यम से प्रचार शैक्षिक भी देखें). यह स्वाभाविक नेता ऐसे सूत्रधारकर्ता हैं जिनका उपयोग स्थानीय प्रतिभागियों के द्वारा किया जा सकता है. अनुक्रम का सरपरस तैयार कर दिया गया है जिसका प्रयोग इन्हें ट्रेनरों और अनुवर्ती गतिविधियों को सरल करने के लिये अनुवीक्षित करने के लिये किया जा सकता है.

इन सभी मामलों में लक्ष्य है स्थानीय संसाधनों की सहायता से कम लागत पर प्रचार और विस्तार करना. इस समय की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है कि किस प्रकार यह किया जा सकता है के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करना और सीखना तथा यह जानना कि किस स्तरण के सहयोग और प्रोत्साहन अधिक प्रभावी होते हैं. इस हस्तपुस्तिका का उपयोग करने वालों से अनुरोध है कि वे इस पर चिंतन और विचार करें और अपने अनुभवों को पुस्तकों के साथ बांटें. पाकिस्तान की संस्था सरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा विकसित और स्थापित वेबसाइट के माध्यम से स्वाभाविक नेताओं के अनुभवों को बांटने की तथा आपस में आदान-प्रदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है.

यह वैबसाइट है: www.rspn.org ई-मेल: Tkhan@rspn.org.pk

एकजुट समुदाय को शामिल करने खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त करने के माध्यम से आसपास के चार गांवों के कोलकाता स्तर के पास स्थित बागमारी गरमालिका की विद्यालय कॉलोनी के सहायक हुए. समुदाय ने 12 वर्षों तक खुले-बर्तनों के कारण अस्वस्थ स्थिति वाली की समस्या का डाली. कार्यक्रम में गांवों वालों का पूरे उत्साह का स्थिरता था, बच्चों को शिक्षा ही नहीं दी गई था कि वर्षों तक इकट्ठा होते रहे खुले-बर्तनों के ढेर में पीने वाली हुई इनकी तरफ और मजबूत स्थिति वाली सही होगी.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को इस प्रकार बढ़ावा देने और उत्प्रेरित करने के माध्यम से अपने आप फैलने वाले अभियान का रूप धारे के लिये प्रयास करने के महत्व पर जितना बल दिया जाये उतना ही कम है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार के लिये कई प्रकार के गतिविधियों और कार्यविधियों तथा पहल की आवश्यकता होती साथ ही यह भी सतत जारी रहने की आवश्यकता होती कि क्या ऐसा रहा जो उचित परिणाम देने में सहायक है और क्या ऐसा रहा जिसे स्थान देना ही उचित होगा. वर्तमान में थोड़े से संकेतसहित सहयोग के आधार पर काम कर रहे सामुदायिक सूत्रधारकर्ताओं के माध्यम से प्रचार, प्रसार और विस्तार की सबसे अधिक सकारात्मक संभावना दिखाई देती है जिससे बहुत थोड़े से समय में बहुत लोग पूर्ण स्वच्छता और स्वास्थ्यकर पर्यावरण का लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

परिशिष्ट

परिशिष्ट क: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल 1999 में डॉ. कमल कार द्वारा की गई जबकि वह बांग्लादेश में कार्यरत बाटरहड (एक ब्रिटिश गैर-सरकारी संगठन) के लिये मूल्यांकन मिशन का नेतृत्व कर रहे थे. मिशन के द्वारा बाटरहड की सहायता से बाटरहड तथा उसके सहयोगी गैर-सरकारी संगठन जिलेज एडुकेशन रिसोर्स सेन्टर (जेईआरसी) के द्वारा संचालित स्वच्छता परियोजना का मूल्यांकन किया जा रहा था. इस परियोजना में बहुत भारी कमिओं के साथ रोकथाम निर्माण सम्मिलित था जिसके लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति बाहर से की जाती थी.

मिशन ने पाया कि यद्यपि गांव में शौचालयों की संख्या में तो वृद्धि हुई लेकिन खुले में शौच की परिपाटी चलती रही. मूल्यांकन ने यह भी पता चला कि बांग्लादेश के विभिन्न इलाकों में गरीबी का स्तर अलग-अलग था लेकिन फिर भी स्वच्छता के लिये प्रदान की जा रही कमिओं की राशि सभी जगहों के लिये समान थी. मिशन की एक संस्तुति यह थी कि सहायता विधि से गरीबी का मूल्यांकन किया जाये और गरीबी के स्तर के आधार पर कमिओं की अलग-अलग राशि प्रदान करने की व्यवस्था का विकास किया जाये.

अगले चरण में मिशन ने गरीबी और खुले में शौच के बीच के सम्बन्ध पर विचार किया - बांग्लादेश के राजशाही जिले के मौलभेडा गांव पर ध्यान केन्द्रित करके. डॉ. कार और मिशन के कुछ साथियों ने पाया कि शौचालय निर्माण सामग्री पर बाहर से प्राप्त होने वाली स्वच्छता कमिओं लोगों को खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लेने के लिये प्रेरित नहीं कर रही है. इसके विपरीत यह पूरे समुदाय के द्वारा एकजुट होकर लिया गया निर्णय होता था. इसका कारण होता था पूरे समुदाय के द्वारा ठीक से समझ लेना कि समुदाय में तब तक कोई भी सुरक्षित नहीं है जब तक प्रत्येक सदस्य खुले में शौच बन्द नहीं कर देता और अपने स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन नहीं कर लेता. खुले में शौच से मुक्त पर्यावरण एक 'सार्वजनिक सम्पत्ति' है. ऐसी स्थिति प्राप्त करना तब तक संभव नहीं है जब तक कि कुछ लोगों के पास शौचालय हों जो कि निजी सम्पत्ति है, और अन्य लोग खुले में शौच करते रहें.

यह भी सामने आया कि बाहर से दी जाने वाली कमिओं (और शौचालय का निर्देशात्मक डिजाइन) वास्तव में समुदाय के द्वारा एकजुट होकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में रुकावट पैदा कर देते थे. जिन कुछ गांवों में सबसे पहले समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई उनके समुदायों के द्वारा कहा गया कि यदि गरीबों के लिये शौचालय निर्माण सामग्री पर कमिओं उपलब्ध कराई जा रही हो तो वे सभी गरीब वर्ग में वर्गीकृत होने का प्रयास करेंगे. दूसरी ओर जब इन गांवों में रहने वाले लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान उनके अपने अवलोकन से) तब उन्होंने कहा कि वे इतने गन्दे वातावरण में नहीं रह सकते और इसलिये उन्होंने निर्णय किया कि वे खुले में शौच बन्द कर देंगे.

मौलभेडा के द्वारा अपने स्वच्छता की स्थिति जानने के लिये किये गये सहभागी विश्लेषण और इसके बाद उनके द्वारा एकजुट हो कर खुले में शौच बन्द करने का निर्णय एक ऐसी खबर बन गयी जो वनाग्नि की तरह पास पड़ोस के गांवों में तेजी से फैल गई. पड़ोस के गांवों के द्वारा भी इसी प्रकार की गतिविधियों को संचालित किया जाने लगा. मौलभेडा तथा पड़ोस के अन्य गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेने पर सहायकों लगवा दिये गये जिन पर घोषित किया गया था कि इन गांवों में कोई भी खुले में शौच नहीं करता.

बांग्लादेश के उत्तर और दक्षिण में जिलेज एडुकेशन रिसोर्स सेन्टर की गतिविधियों की परिधि में आने वाले चार और जिलों में इस नई कार्यविधि और दर्शन का अनुसरण किया गया और वहां भी उसी प्रकार के उत्साहित करने वाले परिणाम प्राप्त हुए. सैकड़ों गांवों ने अपने को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया.

बाटरहड के सहयोग से जेईआरसी ने परियोजों के स्तर पर शौचालय निर्माण सामग्री पर कमिओं देने के दर्शन को बदल दिया और सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के कार्यान्वयन को बिना कमिओं के जारी रखा. परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक थे तथा शौचालय निर्माण सामग्री के लिये कमिओं लोगों के अन्तर्गत आवंटित राशि की बचत की गई और इसका उपयोग उधार कर सामने आये स्थानीय नेताओं के क्षमता विकास के माध्यम से नई अवधारणा के प्रसार और विस्तार, कार्यशालाओं के आयोजन, प्रशिक्षण तथा अन्य प्रसार गतिविधियों के लिये किया गया. समुदाय के अभियन्ताओं के द्वारा स्थान विशेष के लिये अनुकूल तथा उपयुक्त रूप से डिजाइन किये हुए 30 से अधिक कम-लागत शौचालयों के परिदृश्य विकसित किये गये. खुले में शौच से मुक्त हुए गांवों में सैकड़ों स्थानीय नेता उभर कर सामने आये जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नये क्षेत्रों तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान किया. इनमें से कई स्थानीय नेताओं का उपयोग सामुदायिक प्रशिक्षणशालाओं के रूप में उन गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया गया जिन्होंने अपने स्वच्छता कार्यक्रम में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपना लिया था. विस्तृत जानकारी के लिये कृपया देखिये आईडीएस वर्किंग पेपर्स 184 और 257 "कमिओं और सैल्फ रेस्पैक्ट". (संदर्भ के लिये देखिये परिशिष्ट ज).

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विकास हो गया तो पड़ोस इन्टरनेशनल और वेल्था ने इसे बांग्लादेश के अपने कन्ट्री प्रोग्राम में शामिल कर लिया. स्थानीय कार्यिकों से लेकर प्रबन्धकों तक सभी को डॉ. कमल कार के द्वारा प्रशिक्षित किया गया और सीखी गई बातों को स्थानीय कार्यक्रमों में एकीकृत किया गया. बांग्लादेश से सीख लेते हुए पड़ोस ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार किया और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के एक दर्जन से अधिक देशों में इसे शुरू किया. वीएई विजन और बांग्लादेश के गैर-सरकारी संगठन जैसे ब्राका आइसीडीडीआर विज़न ने अपने चालू कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लिया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उच्चस्तरीय सफलता और समुदायों में इसके प्रति बढ़ती दिलचस्पी देखकर बांग्लादेश के समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने वाले विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों का 2004 में दिसंबरी नाम का एक संघ बना दिया गया.

2001/2 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को भारत में महाराष्ट्र प्रांत में राज्य सरकार द्वारा शुरू किया गया. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया द्वारा सहायता प्रदान की गई तथा डॉ. कमल कार को परामर्शदाता बनाया गया. अहमदनगर और नान्देड़ के जिलों में इसे प्रयोगात्मक रूप में शुरू किया गया. इन जिलों में सफलता के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार कर महाराष्ट्र के सभी 32 जिलों में लागू कर दिया गया. बाद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी शुरू कर दिया गया. महाराष्ट्र की हजारों ग्राम पंचायतों (4000 से अधिक) तथा अन्य राज्यों के कई गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

फिर भी भारत सरकार के "सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान" कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजों को शौचालय निर्माण के लिये कमिओं देने की व्यवस्था पूर्ववत् जारी है. दुर्भाग्य से इस प्रकार की कमिओं की व्यवस्था समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार के मार्ग में अवरोध पैदा करती है. महाराष्ट्र ने इस समस्या का हल ढूंढ लिया. वहां परियोजों को शौचालय निर्माण के लिये कमिओं देने के स्थान पर गांव के पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त घोषित होने पर पूरे समुदाय को पुरस्कार देने की व्यवस्था लागू कर दी गई. हिमाचल प्रदेश ने अपने स्वच्छता अभियान में भारत सरकार द्वारा दी जा रही कमिओं को प्रयुक्त प्रदान नहीं की जिससे कि वह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया में रुकावट न पैदा कर सकें.

कम्बोडिया में वर्ष 2002 में कम्बर्न बोर्डवाइड द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को शुरुआत चार प्रांतों - पुरसत, कम्पोंग चैम, कम्पोंग छ्नांग, सिएम रीप - में प्रायोगिक रूप में की गई. यद्यपि कम्बर्न द्वारा कुछ समय बाद इसके हाथ खींच लिया गया तथापि इसके विषय में जानकारी फैल गई और बाद में इसे ग्राम विकास मंत्रालय, पशन कम्बोडिया और यूनिसेफ द्वारा अपने हाथ में ले लिया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अब कम्बोडिया के 24 में से कम से कम 8 प्रांतों में कार्यान्वित की जा रही है और कम्बोडिया की सरकार इसे आधिकारिक राष्ट्रीय स्वच्छता विधि के रूप में अंगीकार करने पर विचार कर रही है.

वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, यूनिसेफ, पशन इन्टरनेशनल और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, तथा कुछ राष्ट्रों की सरकारों के द्वारा आयोजित और मुख्य रूप से डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षण सूत्रधारों के रूप में संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं के कारण 2007 तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत विश्व के बीस से अधिक देशों में हो चुकी है.

फरवरी और मार्च 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर दो बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन पशन इन्टरनेशनल, रेड जेड्डाकमर्स द्वारा संचालित के रा-ए-सलाम और इथियोपिया में अवासा एवं आदिस अबाबा में किया गया. इन कार्यशालाओं में 100 से अधिक प्रतिभागी थे. इनमें वाटसन परामर्शदाता, कार्यक्रम प्रबन्धक केन्द्र, संकलिया, इथियोपिया, मौलाबीक, किस्वाये, सूडान, चिब और पुरानपा, सरकारी कार्मिक, वाटरहड के स्टाफ, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, अन्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य सम्मिलित थे. इन सभी को डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षित किया गया. 2007 के अंतिम 3-4 माह में अकेले इथियोपिया में 60 से अधिक गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. पशन केन्द्र, पुरानपा, किस्वाये के प्रशिक्षित प्रतिभागियों के द्वारा सैकड़ों सफल अन्य कार्यिकों को प्रशिक्षित किया गया और गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के सहयोग से पैरेबो, केन्या तथा लुसाका, जाम्बिया में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया. सरकारी विभागों, यूनिसेफ केन्द्र, इथियोपिया, जाम्बिया, यूनिसेफ के अफ्रीका में स्थित 5 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों, आईआरसी, पशन इन्टरनेशनल, वाटरहड, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिकों के द्वारा इन दो कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया गया.

देश	शुरुआत का वर्ष	सहायता और सहयोग प्रदान करने वाला अभिकरण
1. भारत	2003	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया, महाराष्ट्र, हिमाचल और हरियाणा प्रदेशों की सरकारें
2. कम्बोडिया	2004	कम्बर्न पीपर्सवाइड यह संस्था है जिसने पहली बार कम्बोडिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल की, ग्राम विकास मंत्रालय, यूनिसेफ और प्लान इन्टरनेशनल इस कार्यविधि के प्रमुख उपयोगकर्ता हैं
3. नेपाल	2003	इन्टरनेशनल, नेपाल वाटर एंड सैनेट और वाटरएड के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को नेपाल में पहली बार शुरू किया गया
4. इण्डोनेशिया	2004	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्यूनिटीज और स्वास्थ्य मंत्रालय इण्डोनेशिया सरकार, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक रीजन, के द्वारा सबसे पहले 5 क्षेत्रों में प्रायोगिक रूप में इसे संचालित करके पहल की गई. बाद में यह देश के कभी बड़े द्वीपों तक फैल गया.
5. युगान्डा	2002	आइरिश एड द्वारा सहायतित जिला विकास और विकेन्द्रीकरण कार्यक्रम के तहत पहली बार किबाले जिले में शुरुआत की गई.
6. जाम्बिया	2003	इसरा और वाटरएड जाम्बिया के द्वारा पहले चीनसे जिले में डॉ. कमल बारा के द्वारा वाटरएड की सलाह के बाद बहुत छोटे पैमाने पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. बाद में सितम्बर 2007 में यूनिसेफ और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर राष्ट्रीय कार्यशाला और व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें सरकारी कार्मिकों, गैर-सरकारी संगठनों, अन्तराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिकों ने प्रतिभाग किया. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सोला जिले में भी शुरू किया गया.
7. पाकिस्तान	2004	यूनिसेफ और वाटर, नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्स में स्थापित गैर-सरकारी संगठन आईआरएसपी द्वारा पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, साउथ एशिया से सहायता प्राप्त होती है. आरएसपीएन, एसआरएसपी, एपआरएसपी, टीआरडीसी और सुगराल पाकिस्तान फण्ड संस्थाओं के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि का ही प्रयोग किया जाता है.
8. पाइरीनीज	2004	चार राज्यों - केन्द्रु, एतुनु, एकिति और जिगावा - में वाटरएड पाइरीनीज द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से प्रारम्भ किया गया है.
9. मोरोक्को	2004	एशियन डेवलपमेंट बैंक सहायतित अर्बन सलम डेवलपमेंट प्रोजेक्ट और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्य विधि का परीक्षण जीटीजेड द्वारा सहायतित नेचा कन्जर्वेशन एण्ड वाटर शेड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पोजो में किया गया.
10. नीपाल	2005	प्लान चायना द्वारा शान्क्सी प्रान्त में शुरू किया गया.

देश	शुरुआत का वर्ष	सहायता और सहयोग प्रदान करने वाला अभिकरण
11. इथियोपिया	2006	वीता (जो पूर्व में रिसर्जुनी इथर इन्टरनेशनल था) द्वारा आइरिश एड के सहयोग से अक्टोबर में शुरू किया. प्लान इथियोपिया भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रमुख कार्यान्वयनकर्ताओं में से एक है.
12. यमन	2006	संतिसान फण्ड फॉर डेवलपमेंट तथा यमन सरकार के ग्राम विकास मंत्रालय के द्वारा इब्ब जिले में 2007 में प्रतिभागी के प्रशिक्षण के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. इस प्रशिक्षण को संतिसान डेवलपमेंट फण्ड तथा कुछ अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के सूत्रधारों द्वारा संचालित किया गया.
13. बोलीविया	2006	यूनिसेफ, प्लान बोलीविया, इन्सपुरसी-एसएसी ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की बोलीविया में शुरुआत की. प्लान, संजानिर्ज, एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेस द्वारा अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये किया गया.
14. संजानिर्ज	2007	एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेस द्वारा पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये संजानिर्ज में फरवरी 2007 में किया.
15. केन्या	2007	मई 2007 में, संजानिर्ज और इथियोपिया में आयोजित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभाग करने के बाद प्लान केन्या ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से तीन विकास क्षेत्रों में शुरू करने का निर्णय लिया.
16. मालावी	2007	संजानिर्ज और इथियोपिया में डॉ. कमल बारा द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में प्रतिभाग करने के बाद प्लान मालावी के स्टाफ द्वारा इस कार्यविधि को प्रयोगात्मक रूप से शुरू किया गया.
17. बुर्किना फासो, चाद और माली	2007/8	पाइरीनीज में प्रयोगात्मक रूप से शुरू करने के बाद सहायता प्रदान करने वाले अभिकरण वाटरएड द्वारा अपने पश्चिमी अफ्रीका कार्यक्रम के तहत तीन अन्य राज्यों, बुर्किना फासो, चाद और माली में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार करने का निर्णय लिया गया है. इन देशों में यह प्रक्रिया अभी शुरुआती दौर में है.
18. पूर्वी तिमोर	2007	वाटरएड आस्ट्रेलिया और प्लान ईस्ट तिमोर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन करने के शुरुआती दौर में है.
19. वियेत निमोर	2008	यूनिसेफ वियेत निमोर, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्रालय, प्लान यू.के. और प्लान वियेत निमोर के द्वारा डॉ. कमल बारा के सहयोग और मार्गदर्शन में एक गृहस्थाश्रित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं की व्यवस्था की गई. कार्यशाला के प्रतिभागियों के द्वारा 34 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई.

परिशिष्ट ख: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार और विस्तार – एक खुला पत्र

प्रिय साथीगण,

हाल के वर्षों में लोगों को यह स्पष्ट हो गया है कि शौचालय निर्माण के लिये परियोजनाओं को सब्सिडी के रूप में दी जाने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था समुदायों के द्वारा एकजुट होकर अपने व्यवहार में परिवर्तन के प्रयास के आड़े आती है. यह समझ तेजी से फैल रही है. इसके कारण जहां एक ओर चुनौतियां सामने आती हैं वहीं दूसरी ओर अवसर भी प्रस्तुत होते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विचार बहुत गति से प्रसार और विस्तार हो रहा है. सब ही लोगों को यह भी तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि इसे सफल बनाने के लिये क्या करना चाहिये. यह सब बहुत ही उत्साहवर्द्धक है. हम आशा करते हैं कि गरीबी उन्मूलन, जन कल्याण, तथा अन्य समुदायिक एकजुटता आधारित कार्य-योजनाओं के कार्यान्वयन के संदर्भ में इसका पूरा लाभ समाज को मिल सकेगा.

हम यह पत्र इसलिये लिख रहे हैं कि हमारा विश्वास है कि इसकी संभावनाओं का लाभ तभी मिल पायेगा जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के व्यापक प्रसार और विस्तार के साथ गुणवत्ता को भी बनाये रखा जाये. हम यह सब व्यक्तिगत रूप से अपनी ओर से लिख रहे हैं और जो कुछ आगे प्रस्तुत कर रहे हैं वह हमारे निजी अनुभवों तथा कार्यान्वयन स्तरों पर आधारित है.

1990 के दशक में अनुदान, ऋण उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं और सरकारों के द्वारा सहभागी ग्राम अध्ययन (पी.आर.ए.) के व्यापक प्रसार और विस्तार को प्रायोजित किया गया. इस दशक के कारण कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा. अच्छे सहभागी ग्राम अध्ययन के लिये अपेक्षित व्यवहार, अभिवृत्ति और कार्यविधि को अनदेखा किये सहभागी ग्राम अध्ययन पाठ का प्रयोग बहुत से स्थानों पर किया गया. प्रशिक्षणों की योग्य एवं गुणवत्ता प्रशिक्षणों की संख्या के संदर्भ में अपेक्षित अच्छे प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं थे. इस कमी को मुख्य रूप से उन परामर्शिताओं, गैर-सरकारी संगठनों और समूहों ने पूरा किया गया जो कि इस कार्य के लिये सक्षम नहीं थे और इस कारण उन्होंने नुकसान ही किया. हमारी चिंता यही है कि ऐसा ही समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ न होने पाये. दुर्भाग्य से इस प्रकार के संकेत हैं कि ऐसा होने लग चुका है. यह हमारा सुनिश्चित मत है कि इसे रोकने के लिये तथा गुणवत्ता को बढ़ाने तथा बनाये रखने के लिये तीन निर्णायक बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी. निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अच्छा व्यावहारिक और ग्राम भ्रमण आधारित प्रशिक्षण, और दिशानिर्देश के चार प्रमाणी अनुवर्ती भ्रमण तथा चर्चित गतिविधियां.

निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना. हम अनुदानदाताओं, ऋणदाताओं और सरकारों से अनुरोध करते हैं कि बड़े बजट, बड़े ऋण और धन वितरण करने के दबाव वाले कार्यक्रमों से बचें तथा इसके स्थान पर प्रसार और विस्तार संथर और सुविचार तरीकों से करने के लिये सहयोग करें, अच्छे प्रशिक्षण, समर्पित और प्रतिबद्ध स्टाफ, और स्थानीय स्वाभाविक नेताओं के विकास और उन्हें सहयोग देने पर ध्यान केंद्रित करें. गैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे सारा पैसा बहुत तेजी से पहुंचाने के कारण पहले ही बहुत नुकसान हो चुका है. पर्याप्त आर्थिक सहायता की आवश्यकता तो है परन्तु बहुत अधिक बड़ी निधि की नहीं.

व्यावहारिक ग्राम भ्रमण आधारित प्रशिक्षण. अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करना ही मुख्य मंत्र है. और अब उनको इस प्रकार सहयोग करना है कि वे पूर्णकालिक रूप से सभी प्रशिक्षणों में सम्मिलित हों तथा प्रशिक्षणों को व्यावहारिक और ग्राम भ्रमण आधारित बनायें. कुछ बहुत अच्छे लोग तो अन्य कार्यों में फंसे हुए हैं. जब भी सम्भव हो उन्हें पूर्णकालिक प्रशिक्षक के रूप में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में सुनियोजित

की भूमिका में योगदान करने के लिये मनाने का प्रयास कीजिये. कुछ स्थानों में तेजी से प्रसार और विस्तार के कारण प्रशिक्षणों की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. यह बहुत आवश्यक है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता का नियमित रूप से अनुश्रवण किया जाये और किसी भी ऐसे संगठन या व्यक्ति को नियुक्त न किया जाये जिसके पास आवश्यक तथा उपयुक्त अनुभव, अभिवृत्ति और व्यवहार का अभाव हो.

अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियां. दिशानिर्देश को कभी भी अपने आप में एक पूर्ण पाठ नहीं समझा जाना चाहिये. मात्र इसे एक सतत प्रक्रिया की शुरुआत मात्र ही समझा जाना चाहिये. यह उस सतत प्रक्रिया की शुरुआत है जिसमें समुदाय को प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान किया जाता है जिससे समुदाय कुछ समय में खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है. सब ही समुदाय का सशक्तिकरण भी हो जाता है और समुदाय एकजुट होकर अपने समाज के लिये और भी बहुत कुछ करने के लिये प्रेरित हो जाते हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के इतिहास में यह एक कठिन समय है. यदि सभी सम्बन्धित उपयुक्त तौर-तरीकों का पूरा ध्यान रखेंगे तथा समुचित कार्रवाई करेंगे तो भविष्य समृद्ध उन्नत ही होगा. और यदि ऐसा नहीं करते तो ग्रामीण लोगों को सशक्तित करने का एक बहुत बड़ा अवसर पूरा रूप से हाथ से निकल जायेगा. जो भी महानुभाव समाज और पालकों को प्रभावित करते हैं उनसे हमारा अनुरोध है कि वे ऐसा न होने दें.

कृपया इस पत्र को व्यापक रूप से परिचालित करने का कष्ट करें. आप इसके लिये स्वतंत्र हैं.

भवदीय

कमल कार
आर 109, दि रेजीडेन्सी
सिटी सेन्टर, सॉल्ट लेक
कोलकाता – 700064, भारत

रॉबर्ट चैम्बर्स
पेशक, सामाजिक सेवा,
डिपार्टमेंट, लंबेथ पैलेस रोड
ईस्ट मलेशिया, यू.के.

30 नवम्बर – 1 दिसम्बर, 2007 को ओड़िशा, भारत में आयोजित ईस्ट एशिया पैसिफिक कांफ्रेन्स तथा 18-20 फरवरी, 2008 को डरबन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अफ्रीकावॉश में वितरित किया गया.

परिशिष्ट ग: विशेष परिस्थितियों में ट्रिगरिंग

जहाँ लोग नदियों या खारे पानी में शौच करते हैं

उन जगहों में जहाँ लोग भूतल पानी अर्थात् नदियों, तालाबों, जलाशयों आदि में शौच करते हैं वहाँ अनुप्रयुक्त प्रयोग का बहुत स्पष्ट प्रभाव नहीं होगा. परन्तु आप सामान्यतया यह भी पायेंगे कि समुदाय के सदस्य उसी पानी का नहाने तथा कुल्ला आदि व्यक्तिगत स्वच्छता के कार्यों के लिये भी करते हैं. इस तरह की स्थितियों में आप एक खाली पानी वाले तालाब का अनुरोध कर सकते हैं और पूछ सकते हैं, "क्या आप इस पानी से कुल्ला करेंगे?" बहुत से सदस्यों का उत्तर होगा "नहीं".

इस समय आप समुदाय के सभी परिवारों के द्वारा प्रतिदिन निर्मित मल की मात्रा का आगणन कर सकते हैं. साथ ही यह भी पूछ सकते हैं कि उसी पानी से कितने और समुदायों के द्वारा शौच की जाती है (नदी में ऊपर की ओर या तालाब के दूसरे किनारे पर). इस आगणन के बाद उनसे उसी पानी से अपने चेहरे धोने, कुल्ला करने और नहाना करने के लिये कहिये. शायद कोई भी इसके लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि यदि वे अभी तक उसी पानी का प्रयोग शौच करने के लिये और साथ ही नहाने के लिये करते आ रहे हैं तो अब क्यों मना कर रहे हैं.

समुदाय द्वारा उत्पादित मल की मात्रा के आगणन से और प्रश्न और परिचर्चा उपजनी चाहिये, उदाहरण के लिये सारा मल कहाँ जाता है? साइट पर फैले मल के कारण भूमिगत जल स्रोत भी संदूषित हो सकते हैं. साइट पर फैले इतने अधिक मल के क्या प्रभाव हो सकते हैं? इस प्रकार के प्रश्नों से समुदाय सामान्य पर विचार करना शुरू कर देगा कि खुले में शौच के क्या प्रभाव होंगे. आपको उन्हें बताने की आवश्यकता नहीं है.

प्रश्न अवश्य पूछिये और समुदाय को अपने से उन पर चिंतन करने दीजिये. समुदाय के अलग-अलग सदस्यों से प्रश्न पूछिये - महिलाएं, पुरुष, बच्चे, अमीर, गरीब - जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी अपना उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से समझें. विश्लेषण के अन्त में आप पूछ सकते हैं, "अगले दिन और खुले में शौच करने जायेंगे?" या "और उस पानी में स्नान करेंगे जिसमें सारा समुदाय शौच करता आ रहा है?" उनसे कहिये कि वे हाथ खड़े करके बतायें. यदि कोई हाथ खड़ा नहीं करता तो उनसे पूछिये कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो क्या करेंगे?

खुले में शौच का निश्चित स्थान

पूर्वी अफ्रीका के कुछ भागों में शौचालय अनिवार्य है परन्तु यह बहुधा खुले गड्ढों के रूप में घरों के पास ही निर्मित किये जाते हैं. इन्हें कभी-कभी "मक्खियों और मच्छरों के कारखानों" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है.

यदि आप उनसे पूछें कि खुले में शौच कौन करता है तो थोड़े से लोग हाथ उठायेंगे, यदि उठाना चाहें तो. तब उनसे पूछिये:

- यदि आप शौचालय के छेद के अन्दर देखते हैं तो क्या दिखाई देता है? मल? यदि हाँ तो क्या आप मक्खियों और कीड़ों को सतह पर देखते हैं? यदि आप एक छड़ी को नीचे डाल कर निकालें तो क्या उसमें मल लगा होगा? क्या आपके विचार से नीचे गड्ढे में पैदा हो रही मक्खियाँ बाहर आ सकती हैं? यदि इन सभी प्रश्नों के उत्तर "हाँ" हैं तो फिर यह खुले में शौच से किस प्रकार भिन्न हुआ? क्या यह उससे भी खराब नहीं है?
- अनुप्रयुक्त प्रयोग के दौरान इनमें से कुछ शौचालयों को देखिये.

लोग सभी एक गड्ढे वाले शौचालयों को जलाने से ढकने का प्रयास कर सकते हैं. वे एक अस्थायी कदम के रूप में राख से मल को ढक सकते हैं जिससे मक्खियाँ कम हो जायें. इसी विधि का प्रयोग उन अस्वच्छ पोलू शौचालयों के विषय में समुदाय में जागरूकता पैदा करने के लिये भी किया जा सकता है जैसी चीन और विश्वस्तर में पाई जाती है और जिसमें मानव मल को सुरक्षित ढंग से ढंका नहीं जाता है बल्कि खुला रहता है जिससे वातावरण के संदूषित होने की आशंका बनी रहती है.

सिद्धान्त और मुद्दा यही है परन्तु किसी परिवार विशेष के नाराज हो जाने की संभावना रहती है जब किसी एक परिवार को कठिनाई बताई जाती है. यदि पूरे समुदाय की बात हो तो ऐसा नहीं होता. इसलिये यह संस्तुति की जाती है कि एक ही समुदाय के कई घरों को घुसपकाओं और समुदाय के सदस्यों के दो या तीन पृथक समूहों के द्वारा स्वच्छता अनुप्रयुक्त प्रयोग अथवा खुले में शौच के स्थानों के अनुप्रयुक्त प्रयोग के दौरान देखा जाये. सभी उप-समूहों द्वारा जो कुछ पाया गया उस पर बड़ी बैठक में मानचित्र के चारों ओर इकट्ठा समुदाय के सदस्यों के साथ परिचर्चा की जा सकती है.

जहाँ शौचालय तो हैं परन्तु उनका प्रयोग कम ही होता है

आर्थिक रूप से अधिक विकसित क्षेत्रों में यह सामान्य घटना है. शौचालयों का अधिक प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि या तो मल को बहाने के लिये पानी नहीं होता या लोगों को यह डर लगा रहता है कि गड्ढा भर जायेगा.

समुदाय स्तर पर किये जाने वाले सर्वेक्षणों में सम्मिलित हैं।

- उदाहरण दिए गुप्त शौचालय जैसा भारत के हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में पाया जाता है जिसमें इकट्ठा होता है और मल को राख से ढक दिया जाता है.
- तीन डायन वाला विकास शौचालय पैर और विकास वाली जिसमें बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है.

जहाँ मल खुले में बहा दिया जाता है

समय में घरों में बने शौचालयों से बहुधा मल यह कर खुले में आ जाता है जिसके कारण पड़ोसियों में झगड़े भी हो जाते हैं. इस तरह की घटनाओं के कारण पुलिस-थाना और कोर्ट-कचहरी भी हो जाती है.

समुदाय के स्तर पर सर्वेक्षणों में सम्मिलित हैं। गड्ढे खोदकर ढके हुए सेफ्ट पिट बनाना, कई लोग अपने पारम्परिक सूखे शौचालयों की प्रणाली की ओर वापस जाना चाहते थे. भारत के ग्रामीण और अर्धग्रामीण क्षेत्रों के पारम्परिक शौचालय 100 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं और रोगजनी स्थितियों के लिये उपयुक्त हैं. ऐसी जगहों में जहां बहुत कम या न के बराबर बारिश होती है शौच के बाद राख का प्रयोग उसे ढकने के लिये किया जाता था और शौचालय के नीचे बने एक छोटे से दरवाजे से समय-समय पर पूरी कोथड़ा को वहां से निकाल कर उसका निपटान कर दिया जाता था. शौचालय सामान्यतया दो या तीन मंजिले मकान के हर तल पर बने होते हैं. यह सभी शौचालय एक उपयोगी वर्गाकार या वृत्ताकार मुंह वाले चबूतरे से जुड़े होते हैं जो कि मकान की बाहरी दीवार के सहारे ऊपर से नीचे की ओर आता है. मल नीचे गिर कर एक जगह एकत्र हो जाता है जिसे हर इलेवात के बाद ऊपर से राख डाल कर ढक दिया जाता है. शहरों और कस्बों में पानी की मांग वाले अधिकतर शौचालयों को सूखे गड्ढे वाले शौचालयों ने प्रतिस्थापित कर दिया है. गांवों के लोगों ने भी सूखे गड्ढे वाले शौचालय काम लगाने पर बदलने का निर्णय लिया.

जहाँ महिलाएं घरों में रहती हैं और घरों में बालिटयों तथा चास करते समय प्लास्टिक के थैलों का इस्तेमाल करती हैं

एशिया और पाकिस्तान के कुछ भागों में महिलाएं घरों के अन्दर रखी गई बालिटयों में शौच करती हैं और इन बालिटयों को केवल रात को अंधेरा होने के बाद ही बाहर ले जा कर खाली कर पाती हैं. एशिया की महिलाओं ने बताया कि बालिटयों को रात को ढोने के लिये मकान के भूतल का प्रयोग एक बाड़े के रूप में किया जाता है. जानवरों के इन बाड़ों की हालत बहुत ही खराब होती है जहां मानव मल और जानवरों का मल एक दूसरे से मिल जाते हैं और उसे के ऊपर से लोग चल कर जाते हैं जिससे बहुत भयानक दुर्गन्ध मची रहती है. इस भूतल के कक्ष में सामान्यतया कोई खिड़की या रोशनदान भी नहीं होते. लड़कियों और महिलाओं के पास इस स्थान का उपयोग शौच के लिये करने के अलावा कोई और विकल्प ही नहीं है.

लोगों के द्वारा किया जाने वाला समाधान है: शौचालयों का निर्माण

परिशिष्ट च: पूछा जाने के लिये प्रश्नों के नमूने

खुले में शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान समुदाय से पूछे जा सकने वाले प्रश्न

- यहाँ शौच करने कौन लोग आते हैं?
- महिलाएं कहाँ जाती हैं?
- बच्चों के द्वारा किन स्थानों का उपयोग किया जाता है? (बच्चों के समूह को सूत्रधारों द्वारा अलग ले जाया जाता है और वे सूत्रधारों तथा अन्य को उन स्थानों पर ले जाते हैं जहाँ बच्चे शौच करते हैं)
- यह किसका मल है?
- मल की ओर या तीन ढेरियों की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि उनके रंग, आकार, स्वरूप आदि में क्या फर्क है? उनके विचार से इस प्रकार के अन्तर के क्या कारण हो सकते हैं? (उदाहरण के लिये डायरिया, दस्त, कीटाणु, अपच इत्यादि)
- ताजे मल की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि क्या उसमें कोई जीवित चीज दिखाई दे रही है (उदाहरण के लिये मक्खियाँ, कीड़े, मच्छर, कीटाणु इत्यादि)
- जब आप कुछ लोगों को अपनी नाक बन्द करते हुए या थूथा से थूकते हुए चलें तो पूछिये कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे? क्या वे ऐसा ही उस समय भी करते हैं जब वह रोज उस स्थान पर आते हैं?
- पूछिये कि मक्खियाँ उड़ कर कितनी दूर जा सकती हैं? क्या मक्खियाँ मल को अपने साथ लेकर उनके घर तक भी आ सकती हैं?
- उन्हें यह कह कर चिढ़ाइये कि उन्हें बहुत चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि शायद जिन मक्खियों को वे मल पर मंडराते हुए देख रहे हैं वे उन मक्खियों से भिन्न हैं जो कि उनके भोजन पर मंडराती हैं (शायद आपके सुझाव से लोग सहमत न हों और कहें कि नहीं यह मक्खियाँ हैं जो मल को उनके घर तक ले जाती हैं)
- पूछिये कि ज्यादा मक्खियाँ किस पर मंडराती हैं: ताजा मल पर, ठोस मल पर, सूखे मल पर या गीले मल पर?
- पूछिये कि कौन सा मल जल्दी सूख जाता है, सामान्य मल या डायरिया से पीड़ित व्यक्ति का मल? कौन सा मल अधिक घनीला होता है?
- पूछिये कि कौन सा मल ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करता है (सूखा, घनीला या अर्धठोस मल)?
- पूछिये कि डायरिया वाले घनीले मल से संपूर्ण जल्दी फैलता है या सामान्य अर्धठोस मल से?
- अन्त में पूछिये कि क्या उन्हें ऐसे वातावरण में जीना अच्छा लगता है?

कोई अन्य प्रश्न पूछिये यदि आपको लगता है कि उससे उनमें घृणा उत्पन्न हो सकती है. स्थानीय स्तर पर कोई नई चीज या नये प्रश्न की इजाद कीजिये.

परिशिष्ट च: अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जांचसूची (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के तत्काल बाद)

प्रथम:

- अनुवर्ती गतिविधियों के लिये टीम का गठन
- 3-4 व्यक्तियों
- टीम में कम से कम एक महिला
- कुछ सामान्य स्वाभाविक नेताओं को सम्मिलित कीजिये या सबसे अच्छे ट्रिगरिंग/ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियों में जुड़े सबसे अच्छा काम करने वाले गांव के किसी सदस्य को टीम में सम्मिलित कीजिये

द्वितीय:

- सभी गांवों का भ्रमण कीजिये
- बच्चों का जुलूस निकलवाइये
- जिस घाट पर समुदाय के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने की तारीख अंकित है उसे ले जाइये और उस पर हस्ताक्षर करवाइये
- गांव के स्वाभाविक नेताओं के साथ बैठक कीजिये
- समुदाय की सहायता कागज पर बने मानचित्र को मार्कर के साथ केन्द्रीय स्थान पर लगाने में कीजिये जिसमें वे उन मकानों पर निशान लगाना शुरू कर दें जिनमें शौचालय बनने शुरू कर दिये हैं या बन गये हैं
- समुदाय के साथ निर्वाण स्थलों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान सभी निर्वाण स्थलों पर जाइये और उन्हें देखिये. समुदाय द्वारा प्रतिदिन इसका अनुसरण
- जिन्होंने निर्वाण शुरू कर दिया है उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनसे पूछिये कि क्या उन्हें किसी प्रकार की तकनीकी मार्गदर्शन की आवश्यकता है - विशेषकर ऐसों पर भूमिगत स्थिति - परन्तु मुख्य रूप से उनके ही विचारों को कार्यान्वित होते देखिये और अन्य गांवों के उदाहरण उनके सामने रखिये
- अगले भ्रमण की तारीख पर सहमति देखिये और उन्हें बताइये कि अगले भ्रमण के समय साथ में अन्य गांवों के बहुत से लोग भी होंगे जिन्होंने काफी प्रगति कर ली है और उन्हें सूचित कीजिये कि अन्य गांवों ने क्या प्रगति कर ली है
- नये निर्वाणों को चिंह्नित कीजिये
- जिन गांवों ने प्रगति की गति धीमी है उनसे प्रधान प्रधान और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ बैठक कीजिये और उन्हें कम से कम दो सप्ताह के लिये अपनी अनुक्रमण योजना बनाने में मदद कीजिये
- सबसे सुदृढ़ निर्णय ये तैयार रहिये कि बाहर से लोग आयेंगे और देखेंगे कि कोई ऐसा समुदाय भी है जो कि एक खुले के मल का सेवन करते रहना चाहता है (बड़ी सामूहिक बैठक में, कार्यशाला में, गांव के समक्ष प्रस्तुतीकरण के समय उनके द्वारा व्यक्त की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें जगाने और उत्साहित करने हेतु)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अभिरुचि समुदायों के सभी स्थानीय और रोजी तकनीकी विकल्पों के विषय में उन्हें बताइये. - पूरे सेटर्स और गांव के नाम सहित.

परिशिष्ट छ: लक्ष्य आधारित आंशिक स्वच्छता और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तुलना

सब्सिडी आधारित कार्यक्रमों की तुलना में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये सोच, दृष्टिकोण तथा कार्यविधि में कई प्रकार के बदलाव की आवश्यकता होती है. इन विषयवस्तुओं को निम्नलिखित तालिका में संक्षेप में दर्शाया गया है.

कार्यक्रम के अवयव	लक्ष्य-आधारित आंशिक स्वच्छता	समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
मुख्यधारा और फोकस	बस्तुएं, भौतिक लक्ष्य प्राप्ति	लोग, परिणाम
प्रमुख गतिविधि	शौचालयों का निर्माण कार्य	जगाने और अभिप्रेरित करने वाली प्रक्रियाएं
शौचालयों का डिजाइन - जिसके द्वारा बनाया गया	अभियन्ताओं द्वारा	समुदाय द्वारा अभिमत पहल
डिजाइनों की संख्या	एक या कुछ	बहुत
मुख्य सामग्री	सीमेन्ट, पत्थर, ईंट आदि बाहर से खरीदी गई	बांस, लकड़ी, टिन, जूट, प्लास्टिक इत्यादि (लगभग सभी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध)
लागत लागत	बहुत अधिक	रु. 50/- से भी कम हो सकती है
संकेतक	निर्मित शौचालय	खुले में शौच से मुक्ति
सामंजस्यता	आंशिक और अनिश्चित	उच्चतर
कौन लाभान्वित होता है	अच्छी माली हालत वाले	सभी, गरीबों सहित
मुख्य अभिप्रेरक	सब्सिडी	घृणा, आत्म-सम्मान
आच्छादन/उपयोग	आंशिक	सम्पूर्ण
लाभ	कम; खुले में शौच चलती रहती है	उच्चतर; खुले में शौच से मुक्ति

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने वाली पद्धति/और इसका प्रसार एवं विस्तार करने वाली संस्थाओं के लिये इन विषयवस्तुओं के उपलब्धन महत्वपूर्ण हो सकते हैं. इसके लिये आवश्यक है कि व्यक्तिगत तथा संस्थागत सोच और व्यवहार में बदलाव किया जाये. उदाहरणार्थ सब्सिडी वितरित करने, उच्च स्तरीय शौचालयों के मॉडलों को बढ़ावा देने तथा बड़े बजट बनाने और व्यय करने की रणनीतियों सोच को बदलना होगा. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का आधारभूत सिद्धान्त है कि कोई सब्सिडी नहीं दी जानी चाहिये. बहुत स्थानीय स्तर के सामान्य समुदाय सदस्यों (जो कि विशेषज्ञ नहीं हैं) के द्वारा सूत्रधारों की भूमिका का निर्वहन किया जाता है. कम लागत का प्रौद्योगिक मददगार होता है. इसमें से किसी भी काम के लिये बहुत बड़े बजट की जरूरत नहीं होती है. यह बदलाव में एक समुदाय संचालित प्रक्रिया होती है और इसके प्रसार एवं विस्तार के लिये भी समुदाय के स्तर पर ही काम करने की आवश्यकता होती है (बजट को खर्च करने की आवश्यकता इसके लिये प्रेरणा का स्रोत नहीं है).

इस स्थानीय स्तर पर समुदायों का सशक्तिकरण करने की पहल के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों की बहुत अहम भूमिका है जिसमें गैर-सरकारी संगठन भी सम्मिलित हैं. सरकार और राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों का दायित्व है कि वे इसके लिये अनुकूल स्थितियाँ सुनिश्चित करें और अभिप्रेरण तथा प्रसार और विस्तार के लिये मददगार हों. आवश्यक है कि सभी इस बात को समझें कि एक 'हमसे से स्वयं' की आवश्यकता है जिससे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की स्थिति जगाई जा सके और जब एक बार यह स्थिति सुधर हो जाये तो समुदाय से समुदाय तक अपने आप फैलने लगेगी.

परिशिष्ट ज: स्रोत और सम्पर्क सूत्र, वेबसाइट, वीडियो, वर्क शीट्स इत्यादि सहित

Key Publications

- Community-Led Total Sanitation as a Livelihoods Entry Point – A Brief Introduction, Katherine Pasteur, IDS, Sept 2005 http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Practical Guide to Triggering Community-Led Total Sanitation CLTS) Kamal Kar, November 2005 http://www.ids.ac.uk/ids/bookshop/wp/Wp25796 20pg.pdf (Also available in Chinese, Arabic, French and Spanish)
- Subsidy or self-respect? Community led total sanitation. An update on recent developments (Including reprint of IDS Working Paper 184) IDS Working Paper 257 Kamal Kar and Katherine Pasteur, 2005. http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Latest Update to Subsidy or Self Respect, Kamal Kar and Petra Bongartz, April 2006. Update to IDS Working apar 257 http://www.livelihoods.org/hot _topics/docs/CLTS_update06.pdf
- Favourable/Unfavourable conditions for CLTS: proposes that triggering and the achievement of ODF status are more likely to succeed in some conditions than in others. Starting in favourable conditions and spreading into less favourable is a commonsense strategy. http://www.livelihoods.org/post/CLTS_po stb.htm

All of these and many other documents are available from the Livelihoods Connect website
Livelihoods Connect hosts a hot topic on CLTS, a mini-website, which contains a wealth of useful materials on Community Led Total Sanitation (CLTS) and how it can serve as an entry point for other livelihoods activities:
http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html

For any enquiries or if you would like to be added to our **CLTS mailing list** so that you will receive updates on new materials available on the website as well as other CLTS related news, please contact Petra Bongartz (P.Bongartz@ids.ac.uk)

Videos

UNICEF Cambodia

- CLTS (Khmer version) Contact Hilda Winarta hwinarta@unicef.org

Knowledge Links India (19-29 minutes)

- No shit Please! (English)
- Ek Behtar Duniya Ke Liye (Hindi)
- Understanding CLTS with Kamal Kar (Hindi with English subtitles)
- People and their Voices (Hindi with English subtitles) Contact Knowledge Links contact.knowledge.links@gmail.com

Project Concern International, Indonesia
CLTS contact: Solihin Abas abu_qewwam@yahoo.com

TVE
Earth Report: Clean Living
broadcast on BBC World in March 2008
See http://www.tve.org/earthreport/archive/doc.cfm?aid=1889 for more detail
For Tape or DVD orders – contact Dina Junkermann, TVE distribution manager: tel. +44 20 7901 8834; email: dina.junkermann@tve.org.uk

WSP/WASPOLA, Indonesia
Contact PAK Djoko of GATES project at WSP, Jakarta, dwartono@worldbank.org
Awakening Change

WSP-South Asia, 55, Lodhi Estate, New Delhi, 100003, India.
Contact: Ajith Kumar, Ckumar1@worldbank.org

WSP Bangladesh

- Igniting Change,

Contact: WSP-South Asia, Dhaka, Bangladesh;

UNICEF Sierra Leone, Freetown
'Community Led Total Sanitation in Beautiful Sakone'
Contact: Francesca De Ferrari, fdeferrari@unicef.org, Darren Geist, dgeist@unicef.org

Countries with CLTS and organizations involved in implementation/trials of CLTS

Africa
Burkina Faso: WaterAid
Egypt: Plan Egypt applying CLTS Principles in solid waste management
Ethiopia: Vita, (formerly Refugee Trust International) implementing CLTS in Arbaminch area, WSP, Plan Ethiopia
Ghana: WaterAid
Kenya: Plan Kenya, UNICEF
Mali: WaterAid
Nigeria: WaterAid
Sierra Leone: UNICEF, Ministry of Health, Education, Water Supply Energy and Power and Plan Sierra Leone
Tanzania: Plan Tanzania,
Uganda: Plan Uganda, Kibale District Administration supported by Irish Aid
Zambia: UNICEF, Choma district, DWASHE, Partner NGO of WaterAid Zambia,

Asia
Bangladesh: SDU-CARE, Bangladesh, Dishari, Plan, WaterAid and their NGO partners like, YERC, NGO Forum for Drinking Water Supply and Sanitation, Dhaka Ahsania Mission, World Vision, WSP-South Asia
Cambodia: Ministry of Rural Development, Royal Government of Cambodia implementing CLTS in six provinces, UNICEF, Plan, Cambodia, Swiss Red Cross.
India: Government of India (State Governments of Maharashtra, Haryana, Himachal Pradesh, only Urban CLTS in Kalyani Municipality under Kolkata Urban Services for the Poor (KUSP) in West Bengal), WSP-South Asia.
Indonesia: Government of Indonesia, WSLIC II (AusAid), Project Concern International, WSP-East Asia and Pacific Region, Jakarta, Gates Foundation supported TSSM project in East Java Province.
East Timor: Plan and WaterAid Australia have recently started implementing CLTS.
Nepal: WaterAid, Plan Nepal, UNICEF, NEWAH, and Nepal Red Cross.
Pakistan: IRSP, Rural Support Programme Network, (RSPN Pakistan Khushal Pakistan Fund (KPF)) WSP, SABAWON International.

Latin America
Bolivia: UNICEF, WSP, Plan Bolivia.

Middle East
Yemen: Yemeni Social Fund for Development (SFD-Yemen).

स्थानीय अनुकूलन और विकसित अभिनव मॉडल: एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में समुदायों द्वारा निर्मित शौचालयों के मॉडलों की विविधता

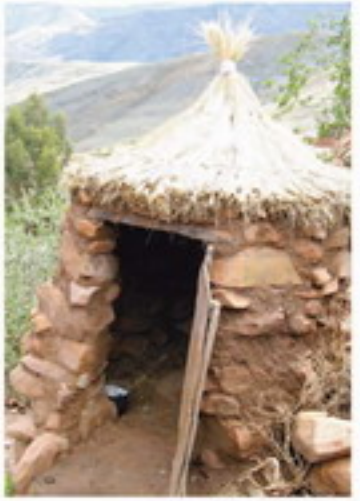

बोलीविया: अपना बोलीविया, एमाटेक के गांवों के समुदाय, निर्माण में पत्थरों और मिट्टी की ईंटों के प्रयोग पर स्थान दीजिये, प्रायोजक: सेवा सहायता, बुलिविया बोलीविया

अपना शौच गिर की गोदावरी का अपनाकारी अपना अपने के लिये पानी का उपयोग, प्रायोजक: वैश्विक राज्य भारत विकासी, आईआरएसपी, भारत, गांवों केंद्र प्रशिक्षण प्रशिक्षण, भारतवर्ष

अर्थी प्रोटोटाइप, जिसका निर्माण के पास के आसपास चार गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की दिशाओं में से प्रत्यक्ष के सीमा ही एक विकास के द्वारा निर्मित शौचालय, प्रायोजक: प्रोटोकाल चलाती, बुलिविया जिसका निर्माण

ऊपर: बाँसोड़िया के बालमुरु गाँव और गाँवों में बने विभिन्न शौचालयों के सामने खड़े हैं गाँव और समुदाय एक स्नान दीखिये

ऊपर और नीचे: बाँसोड़िया के जिलेन रोय के आवास के गाँवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के दूसरा चार एक गड्ढे के सूखे शौचालय का सुगम निकास करने वाले स्थानीयजन पेश जो कि अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हो गये.

ऊपर: महाराष्ट्र, भारत में ट्रिगरिंग के बाद पहली बार निर्मित शौचालयों में लकड़ी के तख्तों का प्रयोग

ऊपर: अपने शौचालय के लिये बाँस और पत्तियों का इस्तेमाल. अपशिष्ट समस्या और पूर्ण रूप से समुदाय, निवासस्थान कोलोनी, कालाबारी, पश्चिम बंगाल

ऊपर: शौचालय का सस्ता हुआ समुदाय जिसमें शर्मा बाबू ने बाबू का पानी शौचालय में न आने पाये, इन्दोनेशिया

ऊपर और बायें: महाराष्ट्र, भारत में एक स्थानीय समुदाय के द्वारा पहाड़ी चोटी के मल्ल से निकाले जाने गये पानी को सोखने के लिये यह एक अभिनव तरीका ईजाद किया जिसमें एक छेददार गड्ढे में चौकोर पत्थर भर कर उसे जमीन में गड्ढा बनाकर गाड़ दिया जाता है. इससे यह सुदृढ़ काम और सूखी रहने लगी जो कि पहले इसका कीचड़ और गन्दगी से भरी रहती थी.

कई समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ड्राइव में सफाई कर्मचारियों के अवलोकन के साथ के गांव उल्लेखनीय सफलता में विशेष गड्ढे वाले सार्वजनिक शौचालय, मोम, भराई और भारतीय के इस्तेमाल पर स्थान रोकिये जो कि स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री है. समुदाय चलाने वाले शौचालयों में जल से सुधार किया जाता है.

अगर खुले में शौच से सुरक्षा स्वा प्राप्त का लेने के साथ शौचालयों की गुणवत्ता तथा संख्या में धीरे-धीरे सुधार की ओर सहज दिखाई देता है. घरेलूं को ड्राइव के प्रारम्भ में बनाये गये कम लागत वाले शौचालयों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिये स्वा और निर्माण करने का अतिरिक्त लिंक हो जाता है. एक गांव जो ढेरवा कोंडा, गांव गोला जोर, राजिम हाइवोलिया में घरेलूं के लिये वैकल्पिकों जीन चलाता है, घरेलूं को शौचालय उपलब्ध कराने की आवश्यकता और महत्व को समझ गया. पुरुषपुरि में एक आसानी शौचालय दिखाई दे रहा है जिसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ड्राइव के सफाल बाद विशेष किया गया.

अगर राजिम सुगवाल, हाइवोलिया में विशेष एक शौचालय, एक महिला के द्वारा घरेलू सामग्री का उपयोग करके एक आसानी शौचालय बनाया गया है जिसके समुदाय द्वारा खुले में शौच कम करने की अतिरिक्त लिंक तक उसके पास इसकी व्यवस्था हो सके. इस अवधि में उसका पति कहीं बाहर गया हुआ था.

आपकी टिप्पणियाँ!

100 अनमोल विचारिएहरू!

लेखक परिचय

डॉ. कमल कार खाद्यान्न उत्पादन, कृषि और प्राकृतिक संसाधन विशेषज्ञ है जिनकी विशेष अभिरुचि सामाजिक और सहभागी विकास में है. आपने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में स्वतंत्र परामर्शदाता के रूप में द्विपक्षीय, बहुपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों के लिये काम किया है जिनमें विश्व बैंक, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, एशियन विकास बैंक, डीएफआईडी, यूनिसेफ, यूएनडीपी, आक्सफैम एट, जीटीजैड, सम्मिलित है और कई गैर-सरकारी संगठन जिनमें केयर, प्लान इन्टरनेशनल, और वाटरएड सम्मिलित है. डॉ. कमल कार ने प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के क्षेत्र में पथप्रदर्शक के रूप में कई अभिनव कार्यविधियों, दृष्टिकोणों एवं कार्यनीतियों तथा कृषि के लिये कम लागत की उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास किया है. मंगोलिया के गोबी क्षेत्र में चरागाहों और प्राकृतिक संसाधनों (युवुरलुइम) के समुदायिक एकजुटता से प्रबन्धन तथा बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, नेपाल, इथियोपिया, केन्या, जाम्बिया, युगान्डा और तंजानिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अभियानों में आप एक अग्रणी मार्गदर्शक के रूप में पथप्रदर्शन करते रहे है. आपके अन्य कार्यक्षेत्रों में भारत, मंगोलिया, बांग्लादेश और कम्बोडिया में शहरी गरीबी, मलिन बस्ती सुधार, और स्थानीय शासन सम्मिलित है. डॉ. कमल कार आईडीएस, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स की नॉलेज, टेक्नोलॉजी एण्ड सोसाइटी टीम के विजिटिंग फैलो है. आप इन्टरनेशनल फैडरेशन फॉर वीमेन इन एग्रीकल्चर (नई दिल्ली) के संस्थापक सदस्य भी है.

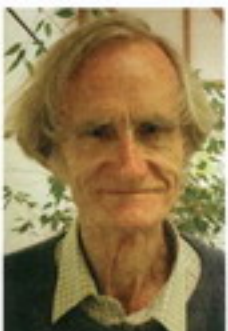

प्रोफेसर रॉबर्ट चैम्बर्स इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमैन्ट स्टडीज़, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके के निवर्त एमेरिटस है जहां आप सहभागिता टीम के सदस्य है. आपकी पृष्ठभूमि प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास और लोक प्रशासन है. आपके विकास के क्षेत्र में मुख्य अनुभव पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में स्थानीय प्रशासन, प्रशिक्षण और शोध से सम्बन्धित रहे है. आपकी पुस्तकों में मैनेजिंग करल डेवलपमैन्ट (1974), करल डेवलपमैन्ट: पुटिंग दि लास्ट फर्स्ट (1983), चैलेंजिंग दि प्रोफेशन्स (1993), हूज़ रियेलिटी काउन्ट्स: पुटिंग दि फर्स्ट लास्ट (1997), पार्टिसिपेटरी वर्कशॉप्स (2002) और आइडियाज़ फॉर डेवलपमैन्ट (2005) सम्मिलित है. आपके वर्तमान कार्यों और अभिरुचि में सहभागी विधियां, प्रोफेशनलिज़्म एण्ड फ्रीडम ऑफ चॉयसेज तथा पावर एण्ड रिलेशनशिप्स सम्मिलित है. लीला मेहता के नेतृत्व में आईडीएस की टीम के आप सदस्य है. इस टीम के साथ आप समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर अपने सहयोगियों के साथ शोध, कार्य अनुभव से सीखना, तथा नेटवर्किंग के कार्यों में संलग्न है.

यह प्रकाशित WSSCC की आर्थिक सहयोग से मुद्रित हुई है

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलाबोरेटिव काउंसिल
9 सेमिन दि आर्मिस
1219 जेनेवा
स्वीट्जरलैंड
फोन : +41 22 917 8673
फैक्स : +41 22 917 8084
ई-मेल :vandervoordenc@who.int
www.wsscc.org

प्लान यूके
5-6 अण्डरहिल स्ट्रीट
लंदन, एनडब्लू7 2एचएस, यूके
फोन: +44 (0) 20 7482 9777
फैक्स: +44 (0) 20 7482 9778
ई-मेल: mail@plan-international.org
www.plan.uk.org

पंजीकृत चैरिटी संख्या 276035

ISBN 978.0.9550479.5.4

इन्स्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज
यूनिवर्सिटी ऑफ सस्सेक्स
ब्राइटन, बीएन1 9आरई, यूके
ids@ids.ac.uk
फोन: +44 (0) 1273 606261,
फैक्स: +44 (0) 1273 621202/691647